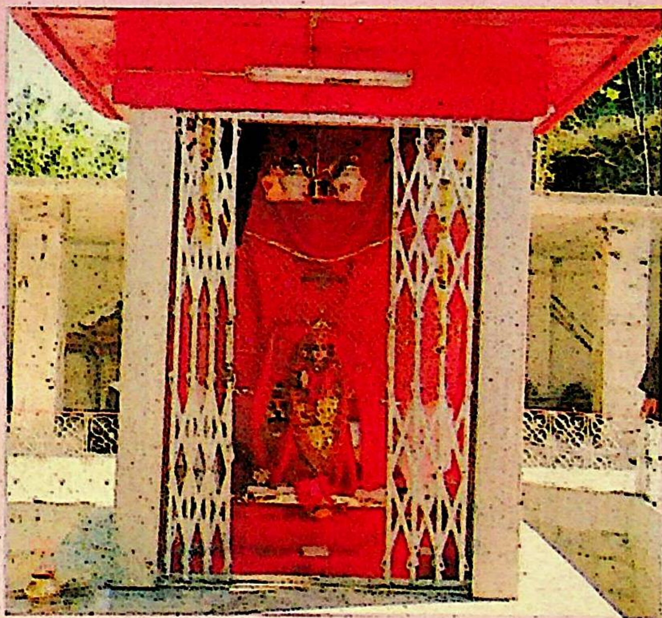
सहज़ कोसम



श्री राज्ञा भग्वती अस्थापन बादीपोरा, (बडगाम) काश्मीर

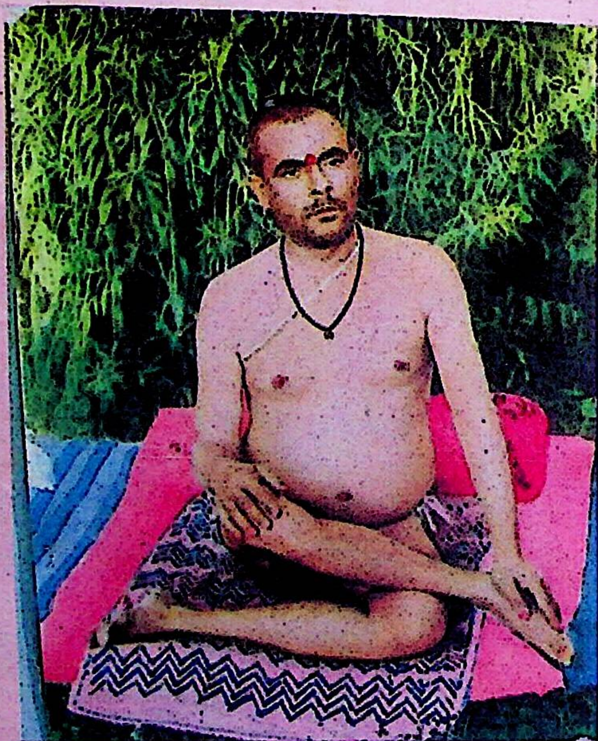
श्री मस्तबब आश्रम

★ पटोली मंगोत्रियां, जम्मू (तवी)
पिन -180007

****

★ कराला (कंझावाला रोड)
दिल्ली -110081

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri



श्रद्धांजलि

— श्रद्धांजलि अर्पित कर रहे हैं, हम
— आपको आपकी स्मृति को
— योगीराज महाऋषि नन्दलाल ब्रह्मचारी जी महाराज।
— अपनी श्रद्धा के फूल हम अर्पण कर रहे हैं
— आपके चरण कमलों में
— जीवन देने वाले महात्मा
— पथ प्रदर्शन करने वाले, योग मार्ग की दीक्षा देने वाले।
— त्रिकाल दृष्टि के स्वामी—स्वामी जी
— हम तो जन्म जन्मान्तर से आपके आभारी हैं
— किशन गंगा के उस तट से दूध गंगा के इस तट तक
— सनातन धर्म के झंडे गाढ दिये
— परम पूज्य योगीराज, आपने।
— जीवनमुक्त स्वामी जी महाराज, अनुग्रह करो हम पर
— अपने चरण कमलों में जगह दो, हमें
— हम पर दया दृष्टी करो, सहारा दो-हमें
— कि हम सत मार्ग पर चलते रहें।
— हम आपके चरण कमलों पर समर्पित कर रहे हैं,
— अपने आपको, अपने सारे अस्तित्व को ॥

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

—मस्तराम

ॐ

सहज़् कोसम

भजन संग्रह

(काश्मीरी भाषा)

प्रकाशक:—

श्री मस्तबब आश्रम ट्रस्ट (रजि०)

(प्रकाशन विभाग)

★ पटोली मंगोत्रियां, जम्मू (तवी)

पिन -180007

फोन: 47933

*****

★ कराला (कंझावाला रोड)

दिल्ली -110081

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

© सर्वाधिकार प्रकाशक के पास सुरक्षित हैं।

प्रथम संस्करण —1991
दुत्य संस्करण —1995

1000 प्रतियां

मूल्य — 35 रुपये

Printed at : LEO PRINTERS, 201-202/12, Aditya Complex, Preet Vihar, Delhi-92
TEL.: 2209913-14-15, 2417856 Fax-011-2417857

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

निवेदन

'सहज् कोसम' पुस्तक को प्रस्तुत करने में मुझे बड़ी प्रसन्नता और हर्ष हो रहा है। इस पुस्तक में हमने काश्मीरी भाषा के भक्तिरस के काव्य के कुछ सुन्दर अंश पेश किये हैं, ताकि काश्मीरी पंडितों के बिखरे हुये समाज को अपनी इस बहुमूल्य सांस्कृतिक परम्परा को जीवित रखने का अवसर मिल सके। इस पुस्तक के संकलन, लेखन और मुद्रण में जिन सज्ज्नों ने काम किया, वह हैं ; सर्वश्री मोती लाल 'साकी' और राजकुमार खशु जिनकी सहायता सर्वश्री चमन लाल दर, विजय 'साकी' और मोहन किश्नजी कोल ने की । मेरा आशीर्वाद इन सबको है । मेरे दूसरे सेवकों ने भी इस पुस्तक के प्रकाशन के लिये तन मन से सहायता की और दिल खोलकर धन दिया; वह भी प्रशंसा के अधिकारी हैं।

मुद्रक सर्वश्री रूप कृष्ण और उसके सहायक चमन लाल ने भी पूर्ण सहयोग दिया और निष्ठापूर्वक मुद्रणकार्य सम्पन्न किया । उनको भी मेरा आशीर्वाद है ।

हमारा प्रस्ताव था, कि इस पुस्तक में सोफी कवियों की रचनायें भी सम्मिलत की जायें परन्तु कई कारणों से ऐसा न हो सका ।

पुस्तक के अन्त में एक लीला ''शो'ध बो'ध शंकर'' दी गई है । यह भजन मेरे परम पूजनीय गुरु योगीराज नन्दलाल ब्रह्मचारी को बड़ी प्रिय थी और वह इसको गाने के लिये समय समय पर प्रोतसाहित करते रहते । यह बड़ी सुन्दर और भावपूर्ण - लीला है ।

जल्दी के कारण इस पुस्तक में भाषा, व्याकरण और मुद्रण की कुछ त्रुटियां रह गई हैं, जिसका खेद है । दूसरे संस्करणों में इन त्रुटियों को दूर करने का प्रयास किया जायेगा ।

मैं अपने गुरुदेव से नतमस्तक होकर और विनयपूर्वक प्रार्थना करता हूं कि वह काश्मीरी पंडितों की छोटी सी जाति को यह कठिन समय बिताने की क्षमता और मानसिक दृडता प्रदान करे और इनको अपनी कृपादृष्टि का पात्र बनाये रखें । मुझे पूर्ण आशा है कि स्वामी जी के अनुग्रह से हमारे सब कष्टें और विपत्तियों का शीघ्र ही अन्त होगा ।

ॐ शान्तिः ! शान्तिः !! शान्तिः !!! ॐ

—मस्तराम

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

★ काश्मीरी भाषा का देवनागरी रूपान्तर

—0—

विशिष्ट स्वर तथा मात्राऐं

अ'	(')	घ'र —घडी, न'र—बाजू, ब'र—दराज़, अ'न्य—अन्धे लोग
अ	(-)	घरु—घर, मरु—मरूँगा, सरु—जांचना, खटुहन—छुपाना, वनुहन—बोलना, बु—मैं
आ'	(ा')	वा'र—सब्ज़ी का भगीचा, सा'र—सैर, भा'य बन्ध—भाई बन्धु
ऊ'	(ू')	सू'ह—शेर, मू'ह—मोह
ओं'	(ों')	खो'त—चढ़ा, बो'नय—नीचे से, वो'नय—बोलूंगा, बो'—मैं

विशिष्ट व्यञ्जन

च़	:	च़ूंठ—सेब, च़्यय—आपको, तुझे, च़—आप, तुम च़ुम'ठ—चिमटी
छ़	:	छ़ारुन—ढूँढना, छ़ांठ—तैरना, छ़'र—टोकरी
ज़	:	ज़ा'री—विलाप, ज़ंग—टांग, ज़ल—जल, पानी, घट्ज़ो'ल—अंधकार

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

★ जिसका इस पुस्तक में प्रयोग किया गया है।

श्रद्धांजलि

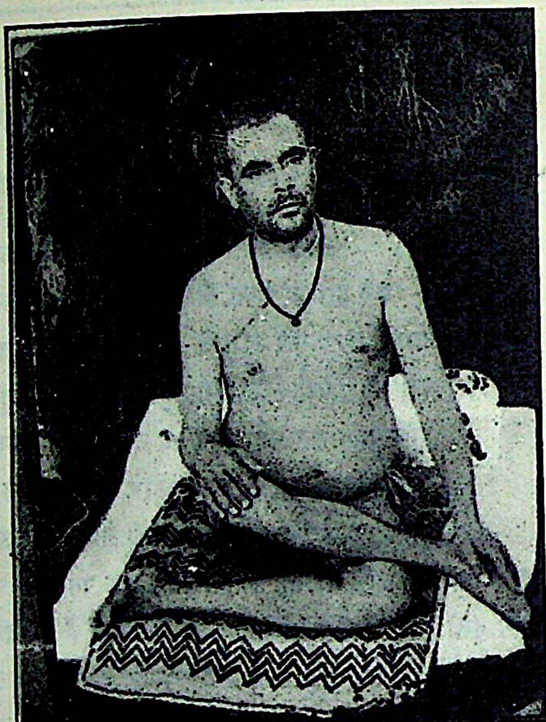
"सहज़ कोसम" की दूसरी टीका प्रकाशित करते हुए हमें इस बात का खेद है कि आज वह भक्त जी जिसको लोग "राजकुमार खशू के नाम से जानते थे, हमारे बीच मौजूद नहीं है। पहली टीका तैयार करते समय "खशू साहब" ने तीन महीने तक रात और दिन को एक करके पुस्तक के प्रूफ-शोधन का काम किया। पुस्तक तैयार करते समय उन्होंने संसार को त्याग सा दिया था क्योंकि वह पुस्तक की तैयारी को अपनी साधना का एक भाग समझते थे। वह प्रतिदिन प्रेस-प्रूफ पढ़ने हेतु जाते और सारा दिन इसी कार्य में लगे रहे कई बार ऐसा हुआ है कि वह आहार गृहण करना तक भी भूल गये। एक अच्छा भज़न उनके लिए ईश्वर-प्रसाद के समान था। उनके देहान्त से जो कमी आज हम महसूस करते हैं वह पूरा करने का हमारे पास कोई साधन नहीं।

हम सब "खशू साहब" को मन की गहराइयों से श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं और ईश्वर से प्रार्थना करते हैं कि ईश्वर उनकी आत्मा को शांति प्रदान करें।

सम्पादक
स्वामी मस्तबब आश्रम
पटोली (जम्मू) 180007
कराला (दिल्ली) 110081

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

परम पूजनीय योगीराज नन्दलाल ब्रह्मचारी जी महाराज



योगीराज स्वामी नन्दलाल ब्रह्मचारी जी के बारे में क्या कहा जाये, कठिन काम है यह; शब्द नहीं मिलते।

आपका जन्म 1902 ई० में फाल्गुण शुकल पक्ष अष्टमी (तिल अष्टमी) को श्रीनगर में आलीकदल के स्थान पर हुआ। पिताजी का नाम पं० सहज़कौल था। बडा धनी, माननीय और प्रतिष्ठावान परिवार था। माता का देहान्त बचपन में ही हुआ था। पिताजी ने दूसरी शादी की थी। सौतीली माता का नाम जूनमाली था। सारा परिवार दूसरे ब्रह्ममण परिवारों की भान्ति प्रातः हारी पर्बत की परिक्रमा के लिए जाता था, जो दैनिक कार्यक्रम का हिस्सा था। बाल्यकाल में ही संसार से विमुख से हो गये। चौदह वर्ष की आयु में घर से निकल पड़े और साधु सन्तों की सेवा में लग गये। पहले पहल ज़िनपुर (सोपोर) में एक महात्मा के आश्रम में शरण ली और उनकी सेवा में लग गये। कई साल तक अनन्तनाग में गोसाई गोण्ड में स्वामी आत्मारामजी और गौतमनाग में स्वामी

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

ग्वाशाकाक जी जैसे महानुभावों और महात्माओं की संगति की। बीच में जिल्दसाज़ी का एक छोटा सा धन्धा भी शुरू किया था, जहां उनका शरीक स्वामी शामलाल जी सपरू थे, जो बाद में उनके अनुयायी और बड़े भक्त बने। संस्कृत भाषा का अध्ययन स्वामी श्रीधर बब नामी महात्मा (सोपोर के स्थान पर) के पास किया। उनसे ही शास्त्रों का ज्ञान भी प्राप्त किया और निपुन्न बने।

ध्यान धारणा की मस्ती की दशा में उत्तरी काश्मीर की घाटी का खूब भ्रमण किया। सारे जंगल छान मारे। इन दिनों उनकी दशा कुछ ऐसी थी, जो परमहंस, रामकृष्णजी की तांत्रिक क्रियाओं के अभ्यास के समय बताई जाती हैं। नाखून बड़े हुए थे, सारा शरीर धूल और मैल से लतपुत था; शरीर के कपड़ों का कोई होश न था। लोग उनके मस्तानापन और चमत्कारों को देखकर भय अनुभव करते थे। मानसरोवर और लद्दाख तक की यात्रा की। करीब दो साल 1945 ई० से 1947 ई० तक - शारदादेवी तीर्थस्थान टीठवाल में (जो अब पाकिस्तान में है) तपस्या की। उस समय उनका आचरण और उठने बैठने में परिवर्तन आया हुआ था और वह पूर्ण रूप से साधु-महात्माओं का सा जीवन व्यतीत करते थे। पूजा-पाठ, भजन-कीर्तन और हवन-यज्ञ खूब करवाते थे। सारे हिन्दू परिवार जो शारदाजी के स्थान पर रहते थे, आपके अनुयायी बन गये थे।

1947 ई० को जब पाकिस्तान ने काश्मीर की घाटी को हथियाने के उद्देश्य से आक्रमण किया तो स्वामी जी शारदाजी में ही थे। आप के चमत्कारों की कहानियां मुसलमानों के मुख से सुनकर और आप के वार्ता-लाप से आक्रमणकारी बहुत प्रभावित हुये और उनकी इच्छानुसार उन को सही-सलामत सारे हिन्दू परिवारों के साथ भारतीय सीमा के भीतर कुपवारा ले आये और आज़ाद कर दिया। इसके बाद स्वामीजी ने उत्तरी घाटी में परिवर्तित परिवारों को फिर से हिन्दू धर्म में लाने का बड़ा कार्य सम्पन्न किया, जिसकी सारे लोगों ने काफी सराहना की। कुछ देर के लिये गौरीपोर-बुमई (सोपोर) में एक सेब के बगीचे में अपनी साधना और तपस्या जारी रखी। अन्तरध्यान होने तक काफी चरस पीते थे, चौबीसों घन्टे चिल्म मुंह से लगी रहती।

टिक्कर गांव में एक अपनी कुटिया बनाई, और आश्रम और धर्मशाला की स्थापना भी की। आपके दर्शन पाने के लिए दूर-दूर से लोग आने लगे। सारे

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

धर्मों के लोग आप से प्रभावित थे। मुसलमान संगीतज्ञ भी सोफियाना संगीत सुनाने के लिए आपके पास आते और आपके विचारों को सुनकर कृतार्थ हो जाते। कहते थे, कि साधु-सन्यासी एक बड अथवा चिनार वृक्ष के समान होता है, जिसकी छत्र-छाया पाने के अभिप्राय से गृहस्थी अपने प्रतिदिन के कष्टों का निवारण के लिए थोड़ी देर के लिए खींचे चले आते हैं। साधु उनको सांत्वना देता है, हिम्मत बंधाता है, पानी पिलाता है और थोड़ी सी खाने की सामग्री देता है, जिससे गृहस्थियों को शक्ति का संचार होता है और वह फिर अपने काम में लग जाते हैं। बार बार कहते कि परोपकार बहुत बडी साधना और तपस्या है।

यह कहना गल्त न होगा कि आप महाऋषि थे। आपने अपने तपोबल और अपनी साधना से काल पर विजय पा ली थी। उनके पास बैठने से ऐसा प्रतीत होता था कि समय की घड़ी और काल चक्कर थम सा गया है। उनकी शशिकला जाग उठी थी; वह छठी ह्रास के स्वामी थे। प्रश्नों का उत्तर बिना पूछे फट से देते थे। आगन्तुक को देखकर ही जान जाते थे कि वह कहां से आया है और उनके आने का क्या अभिप्राय है ? उसकी समस्या का समाधान होगा भी या नहीं ? उस के संस्कार क्या हैं ? आगन्तुक यह बातें सुनकर विस्मयता से भर जाता और थोडी देर के लिए होश गंवा देता। कई तो पसीने से पानी पानी हो जाते। समय पड़ने पर यह सब बातें विस्तारपूर्वक बताते थे।

आजकल के ज़माने में बुद्धिजीवियों का बोलबाला है। हर एक बात को बुद्धि की कसौटी पर परखा जाता है। पर आपके चरण कमलों में बैठकर बुद्धि दम तोड़ देती थी और मस्तिशक काम करना ही छोड़ देता था। अपने जीवन काल में ऐसी करामातें की, जिनपर अब विश्वास नहीं होता। पर सत्य यह है कि आपने मुर्दों को पुनः जीवन दान दिया। गुन्ना (Russel's Viper) से डसे हुये पुरुष को फिर से जीवित किया और वह देखते-देखते उठ खड़ा हुआ। दिल की बीमारियों से पीड़ित व्यक्तियों को नया जीवन जीने का अवसर प्रदान किया, जिनको डाक्टरों ने निराशाजनक बताकर तिरस्कृत किया हुआ था। त्यागी हुई कन्याओं को फिर से उनके पतियों से मिलवाया। बांझ गायों के थनों से याचना करने पर दूध की धारायें प्रवाहित होने लगी। दमे-खांसी रोगों से पीड़ित लोग चलने फिरने लगे और फिर से अपने काम में जुट गये। कर्मवान पुरुषों को समाधि में जाने का रास्ता मिल गया और आध्यात्मिक उत्थान हुआ।

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

संसारिक भोग-विलास और धन-वैभव की प्राप्ति तो साधारण सी बात थी। पाखंडी फकीरों की चुनौतियां स्वीकार की और उनको नीचा दिखाया। आप पीड़ितों को भिन्न-भिन्न प्रकार के अचार खिला कर स्वस्थ कर देते थे।

भगवान श्री कृष्णजी ने गीता जी में कहा है—

"मनुष्याणां सहस्रेषु कश्चिद्यतति सिद्धये
यततामपि सिद्धानां कश्चिन्मां वेत्ति तत्तवतः।"

(अर्थात् हज़ारों मनुष्यों में कोई ही मनुष्य मेरी प्राप्ति के लिए यत्न करता है, और उन यत्न करने वाले योगियों में भी कोई ही पुरुष मेरे परायण हुआ, अथवा सिद्धि प्राप्त कर ली, और उन सिद्धों में से कोई विरला ही मेरे मत को जानता है; यथार्थ मर्म से जानता है) इस श्लोक की कसौटी पर स्वामी नन्दलालजी ब्रह्मचारी पूरे उतरते हैं, इसमें कोई शंका नहीं। यह अतिशयोक्ति कदापि नहीं। इनके जन्म पर ही इनही के परिवार के एक निष्ठावान और धर्मवान पुरुष श्री अमरकौल ने भविष्यवाणी की थी कि यह लड़का हमारे परिवार के नाम को चार चांद लगायेगा।

आपके गुरू महाराज, स्वामी लालजी महाराज (काशी वाले, जो अपने अखाड़े के हाथी पर गर्मियों के चंद मास गुज़ारने के लिए, लगभग हर वर्ष काश्मीर जाते थे) ने एक बार कहा भी था कि ब्रह्मचारी नन्दलाल ने वह सब कुछ केवल छः मास में प्राप्नत किया जिसको पाने के लिये स्वयं लालजी महाराज को बारह वर्ष की कठिन तपस्या और निरन्तर प्रयास करना पड़ा था। स्वामी नन्दलाल जी ब्रह्मचारी के योग अभ्यास की उपलब्धियों को देखकर स्वामी लालजी अपने प्रिय शिष्य के लिए स्वयं ही आसन लगाते थे। यह किसी भी शिष्य के लिए बड़े ही हर्ष और गर्व की बात हो सकती है। यह अलग बात है, कि स्वामी नन्दलालजी ब्रह्मचारी अपने गुरु के सामने आसन गृहण नहीं करते, ऐसा गुरु शिष्य मर्यादा की अव्हेलना होती, पर वह इस मान की स्वीकृति अपनी उंगुलियों और अंगूठे के स्पर्शमात्र से करते और अपने नेत्रकमलों पर लगाते। फिर अपने प्रिय गुरु की सेवा में जुट जाते।

स्वामीजी का एक एक शब्द भविष्यवाणी होता था। आपनें अपने जीवन काल में दो आश्रमों की स्थापना की। एक टिक्कर में कुपवारा के निकट और

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

दूसरा हुशरू में-चाड्डुरा तहसील में । दोनों आश्रम यात्रियों के लिए तीर्थ स्थान बन गये हैं और सारी घाटी में और बाहिर भी काफी प्रख्यात हैं ।

जब अन्तरध्यान होने का समय आ गया तो डंके की चोट से कह डाला कि गौरी तृतिया को समाधिष्ठ होना है । और 1968 ई० (२६६८) को देहली में पम्पोश कालोनी में पं० प्रेमनाथ जी साधू के निवासस्थान पर समाधि द्वारा अंतरध्यान हो गये, जिस बारे में उन्होंने सारा ब्यौरा साधु साहिब को पहले ही बताया था । आपको अन्तरध्यान हुये इतना समय गुज़रा फिर भी आप मुश्किल पड़ने पर और संकट की दशा में अपने सेवकों की सहायता करते हैं । आपका नाममात्र ही कई लोगों के जख्मों पर फाहे का काम करता है; धर्म-कर्म करने की प्रेरणा भी मिलती है ।

आपके तीन शिष्य हुये हैं- स्वामी विभीशणजी, स्वामी कराल बब और स्वामी मस्तरामजी । विभीषण जी जम्मु में हैं और धर्म प्रचार में लगे हुए हैं । करालबब जी का देहान्त इसी वर्ष हुआ । आप बड़े सिद्ध पुरुष थे । आपके अनुयायी-सेवक सैंकड़ों की तादाद में हैं । स्वामी मस्तरामजी की जीवनी का वर्णन इसी पुस्तक में अलग से दिया गया है ।

भाग्यवान और कर्मवान थे वह सब लोग जिनको योगीराज स्वामी नन्दलाल ब्रह्मचारी जी के चरण कमलों में बैठने का अवसर मिलता था और सत्संग के भागीदार बन जाते थे ।

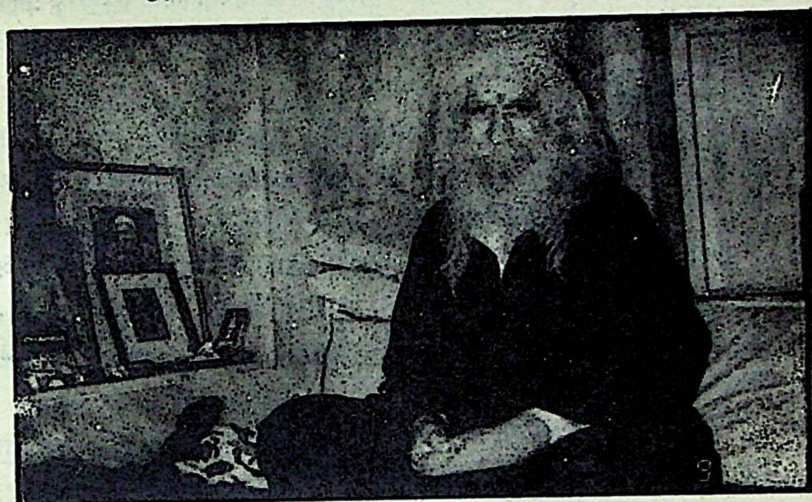
जून, 1991
जंम्मू ।

— मोती लाल "साकी"
— राज कुमार खशु
— काशी नाथ भट (वकील)

—0—

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

परम पूजनीय योगीराज श्री मस्तबब जी महाराज



परमेश्वर क्या है और परमार्थ क्या ? इस पर भिन्न-भिन्न धर्मों के भिन्न-भिन्न मत और धारणायें हैं, और परमब्रह्म परमेश्वर को अनुभव में लाने और साक्षातकार करने के लिए कई रास्ते दर्शाये गए हैं। स्वामीजी ने इस लक्ष्य को पाने के लिए भक्ति मार्ग अपनाया हुआ है, जो रास्ता लंबा अवश्य है, पर है सुगम, जिसमें बाधायें बहुत कम आती हैं। यह बात स्वामीजी ने स्वयं ही एक प्रश्न के उत्तर में एक जिज्ञासु पुरुष को बताई।

स्वामीजी जीवनमुक्त महात्मा हैं। आपके सामने बैठने से सारे संकल्प-विकल्प क्षणमात्र में दूर हो जाते हैं और मस्तिशक हल्का हो जाता है। अपार शान्ति प्राप्त होती है। अपने स्वाभाविक प्रेमपूर्ण बर्ताव से अतिथियों और सेवकों का मन मोह लेते हैं। आपमें अद्भुत आकर्षण शक्ति है। कहते हैं, प्रेम का बांटना ही साधना है और परोपकार तपस्या। मूक रूप से अनुभव कराते हैं, पास बैठे व्यक्ति के संशयों का समाधान तुरन्त मिल जाता है, केवल दृष्टिमात्र से। शायद आपके बारे में ही स्वामी लछकाक जी ने कहा है कि "जीव यलि गछि आत्मस लीन सु जीव अदु ईश्वर" अर्थात जब जीवात्मा आत्मा में लीन हो जाती है, तो यही जीवात्मा ईश्वर स्वरूप बन जाती है।

स्वामीजी का नाम सोहनलाल था, जिसको बदलकर उनके गुरु महाराज स्वामी

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

नन्दलाल ब्रह्मचारी ने मस्तराम कर दिया। आपके गुरु ने देखा था कि आप काफी लग्न के साथ उनकी सेवा में सदा ही तत्पर और मस्त रहते हैं।

स्वामीजी एक खुली किताब हैं, आगन्तुकों का आदर-सत्कार करते हैं। वहीं पर बैठे-बैठे सत्संग करते हैं। भजन गाते हैं, ध्यान धारणा में लगे रहते हैं। कोई अलग सा कमरा नहीं और कोई निजी बैंक खाता भी नहीं। यह सब बातें महाऋषि रमन में भी थी, ऐसा सुनने में आया है।

यदि चमत्कार करना ही परमार्थ-प्राप्ति की निशानी है, तो ऐसे कई लोग हैं, जिनको स्वामीजी के प्रताप से काफी फल मिला है। नौकरियां मिल गई, मकान बन गए, बेटे-बेटियों की शादियां हुई। धन दौलत मिली, वैभव मिला और संसार की भोग-विलास की सामग्री प्राप्त हुई। कई ऐसे पुरुष भी हैं, जो विषम से विषम बीमारियों से मुक्त हो गये। कई ऐसे भी उदाहरण हैं, जब कई सेवक जटिल और खतरनाक परिस्थितियों में आपके नाम लेने से ही ऐसी दुर्दशा से बिना किसी कष्ट के निकल आये।

आपने पंजाब में भठिंडा जिला के बुढलाड़ा गांव में 1930 ई० में मघर शुकल पक्ष अष्टमी को जन्म लिया। आपके पिता का नाम श्री ब्रह्मानन्द था और माता का नाम श्रीमती परमेश्वरी देवी। सांझा ब्रह्मण घराना था। समृद्ध प्रतिष्ठावान लोग थे। सारा परिवार साधु सन्तों की सेवा में लगा रहता था, जिसमें स्वामीजी पेश-पेश रहते थे। साधु-सेवन, पूजा-पाठ, भजन-कीर्तन, हवन-यज्ञ में छुटपन से ही लगाव था।

आपकी शादी 23 वर्ष की आयु में श्रीमती हुकम देवी से हुई। छः साल तक गृहस्थ आश्रम में रहे, और तीन संतानें हुई- दो लड़कियां और एक लड़का। पर मन न लगा, वैराग्य हुआ और संसार गृहस्थ से विमुख हो गये। सन्यास लिया और भारत का भ्रमण किया। अपने उद्देश्य की प्राप्ति के लिये काश्मीर पधारे। टिक्कर गांव (कुपवारा) में ब्रह्मचारी स्वामी नन्दलाल जी से मुलाकात हुई। आकर्षित हुए और उन्हीं के हो गये। गुरु-शिष्य का रिश्ता बंध गया। स्वामी नन्दलाल जी ने आपके लिए आसन छः मास पहले ही लगा रखा था और अपने सेवकों से कह रखा था, कि इस आसन को गृहण करने के लिए एक बाबाजी आ रहा है। मानना पड़ता है, कि गुरु-शिष्य का नाता जन्म-जन्मान्तर का होता है।

अपने गुरु महाराज के साथ रहने का केवल चार साल का अवसर मिला- 1964 ई० से 1968 ई० तक। अपने प्रिय गुरु के महा समाधि लेने पर आपको काफी दुख हुआ और परेशान भी रहे। उन की आज्ञानुसार कुछ देर के लिए हुशरू आश्रम में रहे, पर मन न लगा। प्रेरणा मिली और दृष्टान्त हुआ। बादीपोर

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

(नागाम-चाडुरा) के प्राचीन अस्थापन श्रीमहाराज्ञा भगवती के मन्दिर के निर्माण कार्य में जुट गए। अपने कर-कमलों से पहाड़ को काट-काट और खोद-खोद कर इस पवित्र स्थान के लिए जगह बना ली और साथ में एक आश्रम भी खड़ा किया। इस निष्काम कर्म से भक्तजन काफी प्रभावित हुए और स्वामीजी के अनुयायी बन गए। आपके प्रताप से इस पहाड़ी पर जल का एक स्रोत फूट पड़ा, जिस से अब सारा साल निर्मल स्वच्छ जल-प्रवाह बहता है, जो खाने-पीने और पूजा-पाठ के लिए पर्याप्त है। यह आश्रम काफी ऊंचाई पर सुन्दर रमणीय स्थान पर स्थित है, जहां से काश्मीर घाटी के सुन्दर प्राकृतिक दृष्य का निरीक्षण होता है। सारा आश्रम और पवित्र मन्दिर एक हरे भरे कुंज से घिरे हुए हैं, जो काफी सुहावना लगता है। वास्तविक स्वर्ग है।

जम्मू में भी 1975 ई० को पटोली मंगोत्रियां में एक और आश्रम की स्थापना की, जो अब श्री मस्तबब आश्रम के नाम से संस्कृति का अनुपम केन्द्र बन गया हैं। यह आश्रम भी बादीपोर आश्रम की भान्ति काफी प्रख्यात है। हर समय यात्रियों का तांता बना रहता है। भजन-कीर्तन, पूजा-पाठ, धार्मिक सत्संग और हवन-यज्ञ तो इस आश्रम के प्रतिदिन के कार्य-क्रम बन गये हैं।

इनके सहवास से कई पुरुषों और स्त्रियों का अलौकिक चमत्कार देखने को मिलते हैं और कई तो देखते-देखते समाधिष्ठ हो जाते हैं। स्वामी जी को बहुत काश्मीरी भजन कंठस्थ हैं, हालांकि काश्मीरी आपकी मात्रभाषा नहीं है। समय पड़ने पर वह सारी रात यह भजन गा सकते हैं। पर इस समय वह पिछले चार वर्ष से मौन धारण किये हुए हैं। आप पूरी तरह काश्मीरी ब्राह्मणों की संस्कृति में रंगे हुए हैं।

आपने अब तक सात महा गायत्री जप-यज्ञों का अनुष्ठान करवाया। जिसमें छप्पन लाख मंत्रों का पाठ हुआ, इसके पश्चात और आठ लाख गायत्री मंत्रों का पाठ किया गया। यह सारे यज्ञ पूरी वैदिक रीति और कर्मकांड के अनुसार कराये गये। आचार्यों और पंडितों ने इस कार्य को बड़ा सराहा और प्रशंसा की। प्रति यज्ञ सात से दस दिन तक चलता रहा, जिनमें सैंकड़ों भक्तजन सम्मिलित हुये। इस कलिकाल में इतनी मेहनत और लग्न से इन जप यज्ञों का आयोजन और सम्पन्न करवाना आश्चर्यजनक बात है। भाग्यवान हैं वह सज्जन और सतपुरुष जिनको आपके चरण-कमलों की छांव में बैठने के लिए स्थान और समय मिलता है।

जून, 1991 — राज कुमार खशु

जम्मू। — एच. सी. कटोच

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

विषयसूची

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

काश्मीरी भक्ति काव्य-एक समीक्षा

काश्मीरी काव्य का इतिहास लल द्यद के आत्मज्ञान और आत्मबोध से भरे 'वाख्यों से होता है । लल द्यद्य सिर्फ कवियत्री ही नहीं थी, बल्कि एक महान योगिनी और दार्शनिक भी थी । आपके 'वाख्य' आत्मज्ञान का वह अमृत हैं, जिसे पीकर पाठकगण हर्ष और उल्लास की परम सीमा को पहुंच जाते हैं । लल द्यद की हम सब पर सब से बड़ी कृपा यही है कि उसने काश्मीरी शैवमत की सूक्ष्म वाणी को ज्ञानियों और आचार्यों के दायरे से बाहर निकाल कर एक साधारण पाठक के लिए समझने योग्य बना दिया । कवयित्री की हसियत से आपका यह महान कार्य हमेशा याद रखा जायेगा कि लल द्यद ने काश्मीरी शैवमत के निर्गुणवाद को काव्य का रूप दे दिया । लल द्यद-की 'वाख्यों' की महानता का और क्या प्रमाण हो सकता है कि उनके 'वाख्यों' का पाठ मन्त्र समझकर प्रतिदिन प्रातः और सांयकाल को किया जाता था । उनकी महानता पिछले छः सौ साल से लगातार लोगों को अपनी ओर प्रेरित और आकर्षित किये हुये हैं ।

2. लल द्यद के साठ 'वाख्यों' का संस्कृत अनुवाद अठारवीं शताब्दी में भास्कर राज़दान ने किया था और यह लल द्यद पर लिखी जाने वाली पहली पुस्तक थी । लल 'वाख्यों' का अंग्रेजी अनुवाद सबसे पहले सर जार्ज ग्रयर्सन ने किया और इसके बाद सर रिचार्ड टेम्पल ने इस काम को हाथ में लिया । प्रो० ज़ियालाल कौल ने भी ललद्यद के वाख्यों का अंग्रेज़ी में अनुवाद किया है, और पं० जानकी नाथ भान और प्रोफेसर बी. ऐन. पारिमू ने भी । लल द्यद के वाख्यों का हिन्दी अनुवाद शम्भूनाथ हलीम, डा० शिसी तोशखानी और डा० शिबन कृष्ण रैना ने किया है । इन वाख्यों का उर्दू अनुवाद प्रो० नन्दलाल कौल 'तालिब' ने भी किया है, और मोती लाल साकी ने भी इनका काश्मीरी गद्य में अनुवाद किया है । आपके वाख्यों का फार्सी अनुवाद भी चन्द ऋृषिनामों (नुन्द ऋृषि की रचनाओं का संग्रह) में दिया हुआ है । ललद्यद काश्मीर की वह महान योगिनी और कवयित्रि है, जिसके बारे में सबसे ज्यादा और काफी मेहनत से लिखा गया है, यद्यपि उनके वाख्यों के सम्पादन में किसी किसी जगह सहज़ानन्द, रूप भवानी, लछ काक और यहां तक कि कृष्णजी राज़दान की कविता को भी उनके खाते में डाल दिया गया है ।

3. लल द्यद के बाद हमारे आत्मज्ञान और आध्यात्मिक कविता का दूसरा पडाव

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

सहज़ानन्द हैं, जिन्हें काश्मीरी हिन्दू नुन्द ऋषि के नाम से जानते हैं । उनकी कविता का रूप "श्रु ुयक" (श्लोक की काश्मीरी रूपरेखा) हैं । सच पूछिये, तो काश्मीरी भाषा में भजन का प्रारम्भ सहज़ा नन्द की कविता से ही होता है । सहज़ानन्द के श्लोक ज्ञान-विज्ञान और आध्यात्मिकता के साथ-साथ, अहिंसा, भात्रभाव और छल कपट से दूर रहने का संदेश देते हैं। सहज़ानन्द ने अपना सारा जीवन शाकाहारी और वैष्णवी रह कर गुज़ारा । पहले केवल सब्ज़ियां खाकर निर्वाह करते थे, बाद में सब्ज़ी फल-फूल का आहार भी त्याग दिया और सिर्फ पानी पीकर ही आत्मरक्षा की। उनकी ज़ात 'सलिलाहार' और 'पत्राहार' ऋषि घरानों का संगम नज़र आती है ।

4. इसके बाद हमारी दृष्टि अल्लखेश्वरी माता रुपभवानी के "वाख्यों" पर पडती है। माता अल्लखेश्वरी जगतमाता का साकार रूप थी । उनकी अमृत वाणी तो भक्तजनों के लिए दया का सागर है । लल द्यद और सहज़ानन्द की भांति आपके वाख्यों में भी भक्ति और परमात्मा के प्रति अपार स्नेह और भावना की मधुरता और संगीत है । आपकी रचनाओं पर बहुत कम काम हुआ है ।

5. अरिणिमाल की कविता यद्यपि आत्मज्ञान या भक्तिरस के दायरे में नहीं आती, परन्तु इस भाग्य की मारी कवयित्री को काश्मीरियों ने बिल्कुल ही भुला दिया है । इस कवयित्री पर एक ओर तो विधाता का प्रकोप था ही, दूसरी ओर हमने भी उनकी कविता की तरफ कोई ध्यान न दिया । हमने अब प्रयास किया था, कि उनकी कविता को किसी प्रकार इकठा किया जाये, इसमें हमें सफलता नहीं मिली । फिर भी जो कुछ थोड़ा इस पुस्तक में दिया गया है, एक उपहार समझना चाहिए ।

6. भक्तिकविता में अगला नाम वासुदेवजी का आता है । आपकी कविता में रस है और संगीत भी । वह अपने भीतर के अनुभव को मीठे और सुरीले शब्दों में पिरोता रहा है । वासुदेवजी के बारे में मालूम नहीं कि वह कब पैदा हुये और कब अन्तरध्यान। परन्तु यह बात सिद्ध है कि वह प्रकाशराम जी से पहले ही गुज़रे हैं । अनुमान है, कि वासुदेव जी मागाम (बीरवाह) इलाके के रहने वाले थे । आपके कुछ भजन हमें प्रकाशराम के रामायण में शामिल नज़र आते हैं ।

7. भक्तिमार्ग में प्रकाशराम का रामायण काश्मीरी में महाकाव्य का मार्ग दर्शन करता है । प्रकाशराम के रामायण को अन्य काश्मीरी रामायणों पर श्रेष्ठता प्राप्त है । उनके रामायण की खास बात उसका मुकामी रंग है । लगता है कि सारे रामायण की घटनाओं का सम्बन्ध सिर्फ काश्मीर की सुन्दर घाटी से है। रामायण के बारे में यह बात याद रखने योग्य है कि वह विशिष्ट रामायण जिसमें सीताजी को रावण की बेटी कहा गया है, बहुत पहले काश्मीर में लिखे गए संस्कृत रामायण का ही भाग है,

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

रामायण से पहले यद्दिप महाभारत को भी काश्मीरी रूप दिया गया है, परन्तु यह मालूम नहीं कि यह अनुवाद किसने किया था।

8. पं० नन्दराम परमानन्द की कविता कृष्णभक्ति का बहुमूल्य गुलदस्ता और आत्मबोध की विधि की आकाश वाणी है, जिसे पढ़कर पाठक को बड़ी ठंडक और शान्ति का अनुभव होता है। परमानन्द की कविता में परमब्रह्म परमात्मा के प्रति काफी भावुकता है और इस भावुकता के मैदान में वह सूरदास और मीरा से भी आगे हैं, इसमें कोई संदेह नहीं होना चाहिए। आपकी कविता में चैतन्य महाप्रभु की लग्न है और जयदेव की वाणी की मधुरता और कल्पना की उडान भी। अपने रंग में काशमीरी भाषा का कोई दूसरा कवि परमानन्द की समता नहीं कर सकता। आपकी कविता का अंग्रेजी अनुवाद भी हुआ है, जो मास्टर ज़िंदा कौल ने किया था।

9. कृष्णजी राज़दान की कविता को जार्ज ग्रियर्सन ने सबसे पहले रायल एश्याटिक सोसाइटी, बंगाल, की ओर से सात भागों में "शिव प्रणय" के नाम से संस्कृत अनुवाद के साथ उनके जीवनकाल ही में प्रकाशित किया था। महात्मा राज़दान साहिब वस्तुतः शिवभक्त थे, और शेष सब देवताओं को शिवशंकर का ही स्वरूप मानते थे। जिस अच्छे तरीके से ग्रियसर्न ने राज़ान साहिब की कविता को प्रकाशित किया था, वह सलीका और तरतीब हमें और कहीं दृष्टि में नहीं आती। सच तो यह है कि राज़दान साहिब की लीलायें और भजन वह मधुवन हैं जिसकी कल्पना मात्र से ही शरीर में संगीत की लहर दौड़ जाती हैं और मन आनन्द विभोर हो उठता है। आपके भजन स्वतः ही संगीत से भरे हैं।

10. भक्तिरस की कविता में सगुणवाद का आरम्भ वासुदेवजी से होता है। मास्टर जिन्दा कौल तक पहुंचते-पहुंचते सगुणवाद फिर से निर्गुणवाद में बदल जाता है। मास्टरजी की कविता वस्तुतः लल घद की कविता का ही पुनर्जन्म है। इसमें वह गरिमा नहीं जो लल घद के वाख्यों में है। अपितु भावना और अनुभव का गहरा संगम मास्टरजी की कविता का हिस्सा अवश्य है। भक्तिरस और आत्मज्ञान को कविता के सांचे में ढालने वाले और भी बहुत से लोग हैं, जिनमें विष्ण राज़दान, भास्कर, नीलकंठ, प्रेमी, साकी इत्यादि कवि शामिल हैं। परन्तु यह लोग वही कुछ गाते हैं, जो कुछ इनसे पहले कहा गया है।

11. ईश्वर भक्ति की यह परम्परा काश्मीरी पंडितों तक ही सीमित नहीं रही है। शाह ग़फूर, रहीम साहिब, शम्मस फ़क़ीर, सम्मद मीर, अहमद बटवारी और अहद ज़रगर आदि की शास्त्रों की कवितायें जिनमें हिन्दू धर्म और देवमाला से सम्बन्धी बातों का वर्णन है, सुनने और पढ़ने योग्य है। निर्गुणवाद के यह कवि और साधक यद्दिप

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

अपनी निष्ठा और ज़ात के कारण मुसलमान थे, परन्तु काश्मीर की मिली जुली संस्कृति को आगे बढ़ाने में काश्मीर के यह सोफ़ी कवि अपनी मिसाल आप हैं। आत्मज्ञान और आध्यात्मिकता के मैदान में हर एक साधक चाहे वह किसी भी धर्म से सम्बन्ध रखता हो, अन्त में एक हो जाते हैं और एक ही भाषा बोलते हैं। सोफियों का 'वहदत-उल-वजूद' वस्तुतः अद्वैयतवाद का ही रूप है।

12. भजनों का यह संग्रह हमने समय की सूक्ष्मता को दृष्टि में रखकर ही पेश किया है। इसकी तैयारी वास्तव में गुरूदेव स्वामी मस्तरामजी महाराज की इच्छा और प्रेरणा का परिणाम है। उनकी आज्ञा पर ही इस कार्य को हाथ में लिया गया और उन्हीं की कृपा और अनुग्रह मात्र से यह संग्रह जनता के सामने हम पेश कर रहे हैं। इस समय काश्मीरी पंडितों का समाज बिखरा पड़ा है और अनन्त मुसीबतों से दोचार हैं जिसका हर एक को अनुभव है। हमारे सब सहारे टूट चुके हैं और केवल भगवान का ही सहारा रह गया है। हमारी प्रार्थना है कि यह संग्रह हम सबकी आत्मा की प्यास बुझाने का साधन बने और मुसीबतें झेलने की मानसिक और आध्यात्मिक बल भी प्रदान करे।

ॐ शान्ति ! शान्ति !! शान्ति !!! ॐ

जम्मू मई-1991 ई० (२६९२) —मोती लाल 'साक़ी'

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

श्री गणेश अस्तुती

1 ओंकारु रू'प छुक सर्व आधिकारो,
मूलाधार ध्यानु धा'र्यो
सेधि दाता छुक विघ्न हर्तारी,
महा गणपथ ध्यान धा'र्यो ।

2 सा'रिनी ब्रोंठ छ्य गो'डु अनवारो
जपु यगण्य सह्यकार'यो,
विकट् रूप छुक वीद ओंकारो मूलाधार०

3 ना'लि छ्य लालु मालु नागेन्द्रहारो
बल दातु गणिशबल प्रार'यो,
रूद्रय गणनु हंदि सरदारो ''

4 आदि शक्ति ह'न्दे आधिकारो
एकु दन्तु वीद व्यसतार'यो,
शिवजी सुन्दि यठि विघ्न निवारो ''

5 परम शक्ति हन्दे सेवाकारो
यच्छ्र पोत्र व्यवहारा'यो,
बालु चुन्द्र क्षूमं कासवनि शूभिदारो ''

6 सर्व शक्ति माननि आगण्याकारो
प्रकरम् यमि संसार'यो
तीर्थ् तीर्थ् ब्रोंह च्र'य पतु कुमारो ''

7 ही लम्बोदरय सर्व उपकारो
मो'कलाव यमि संसा'रयो,
लम्बोदुरय करिथ आहारो ''

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

8 यन्दराज़स यलि खो'त अहंकारो
ज़ोरन ति गोस लूर' पा'र'यो
मोकलोवथन छुक बख्शनहारो — मूलाधार॰

9 वेष्णन को'रनय न नमस्कारो
सो'दरस को'रथस वथुवा'रयो
ग़ज़ मो'ख भविनय जय जयकारो — ''

10 वेष्ण भगवानस बूज़िथ ज़ार पारो
कृष्ण पिंगल अद ओय आर'यो
वक्र तो'ण्ड बल छुय मह्रा विह्नारो — ''

11 वस्त्र ना'लि छिय रंग गुलनारो
चो'तुर बो'ज़ बडि सरकार'यो
चाञि दरबारय लब दरबारो — ''

12 मन्त्रनायक ब्रह्म अवतारो
पूज़हथ गणपंथयार'यो
सर्व स्यध दिनकुय छुय इशारो — ''

13 वल्लभा सू'त्य छ्य सो स्वरूप दारो
अथन क्यथ ःोर हथियार'यो
भूतन त राक्षसन करान संहारो — ''

14 अविद्या सा'न्य दन्त सू'त्य मारो
मख सू'त्य पाफ़ गाल वार'यो
पद्म स्मर'नि सू'त्य क्रूध दो'ख हारो — ''

15 सिंह_यूग आसन ज़ोरावारो
धूम्रवरण संसार सा'रयो
यमि भवसर दित "कृष्णस" तारो — ''

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

गुरुस्तुति

1 अज्ञान घटे सिर्य प्रकाश छुक आसुवोनुय
ज्ञान प्रकाश छुक आसुवोनुय
ॐ श्री सत्गुरु क्षणु क्षणु छुम आसरु चोनुय

2 च्रय छुक ब्रह्मा च्रय हा विश्णु-महीश्वरै
च्रय विश्वमय छुक अजर अमर अक्षर थरै
बु त्रन गुणन पादि प्रणाम भविनय म्योनुय ...ॐ श्री सत्गुरु०

3 चान्यन पादन हन्दि गरदे हुन्दय अंजनु
युस लागि नेत्रन देव द्रष्टि तमिसु छि बननु
यथ न कांह वुछान तथ सदा च्रय छुख वुछवोनुय ,,

4 दया सागरु करु म्य दया दीनस क्षीनस
सि'द्धी दित्तम मदुमोचन म्य बुद्धिहीनस
बु अदु कस वनु आ'रुत्य नाद छुक बोज़वोनुय ,,

5 शरण ब आसय च्यय प्योसय परण पादन
वरूम म्य दाससु थावतम कन आ'रत्यन नादन
तरनु भवसुर च्योन प्रभाव इमव जोनुय ,,

6 छुक सिद्ध योगी बु छुस रोगी दिम म्य दवा
औषध चान्यन पादन हंज़ गरद छु ना
उत्तम चूरण सर्व रूगन छुख कासुवोनुय ,,

7 घटे गाशर चाञि दयायि म्य रूग हटे
मटे छुसय तार भवुसर अके वो'टे
लटे अके मो'ख म्य हावतम प्रज़लवोनुय ,,

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

8 सन्ताप अग्न पापु सू'त्यन गोमुत प्रबल
शेरस प्यठ थाव कर कमल पनन्य शीतल
संताप च्रल्युमु पाप गल्युम नो'व तय प्रोनुय ॐ श्री सतुगुरु

9 सेतारु मनुक तारु चा'रिथ सदा दिवान
हदु यथ ना कुने बो'द्ध म्या'ञ सो'य स्तुता ग्यवान
वृच्न म्या'ञि नच्चान कनव बोज़तम लोलु वनुवोनुय "

10 करतम सु दया वरतम तल च्ररनार बिंदन
छुक बोध दृष्टि च्रय दिवान अन्धन तुं मन्दन
अन्दान छुम न्याय चाञि दयायि कर पाय म्योनुय "

11 चिंतामनि सो'न च्र बनावान छुक त्रामस
फोतसु मो'खतय पोखतु बनावान छुक खामस
च्रय घटि हुन्द लाल स्वामी नन्द लाल छुय नाव चोनुय "

12 यी बु नु ओसुस ती ओसुस ज़ानान बु पान
दयायि चाञे यी बु छुस ती म्य ज़ोनुम ट'कान
रोवमुत लोबुम पञि लबित नञि रावरोनुय "

13 इमनु इमनु गव ज़ि यि मन च्यय सू'त्य लयस
दयस सू'त्यन ग.ये ज़_ मीलिथ वा'तिथ पयस
भयस ज़य गोम दो'न म्य रूदुम कुनुय भासवोनुय "

14 भवसर तरुनुक "नीलकन्ठस"★ बनितन उपाय
स्वामी नन्दलाल तय स्वामी लालजी रूज़ितनु सहाय
छी तंग आ'मति अनज़ल हव्य छुय मंगुवो'नुय "

★स्व० श्री नीलकन्ठ जी की भेंट अपने गुरु स्व० योगराज स्वामी नन्दलालजी (टिक्कर और हुशरू निवासी) के पाद्य कमलों में।

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

लल् द्यद्

काश्मीरी साहित्य के इतिहास में लूल द्यद् जैसा कोई कवि या कवयित्री नज़र नहीं आती । लूल द्यद् एक युग पुरुष थी, जिसका वह आद्य भी थी और अन्त भी। उसकी कविता आत्मबोध और ज्ञान का वह गहरा सागर है जिसमें अनन्य नदियों और धाराओं का पानी मिलकर एक हो गया है ।

2. वेदान्त और शैवदर्शन को जनसाधारण की बोलचाल काश्मीरी में ढालने का जो महान कार्य लल् द्यद् ने अपने आत्मबल और योग्यता से सम्पन्न किया, उसने आपके 'वाख्यों' को उपनिषदों के 'स्तोत्रों' की सी महानता प्रदान की है ।

3. लल् द्यद् का असली नाम पद्मावती बताया जाता है । शायद यह नाम सुसराल वालों ने दिया था । अनुमान है, कि 'ललिता' उसके मायके का नाम रहा होगा, जिसकी काश्मीरी सूरत 'लल' है । आपका जन्म सिंहपुर (श्रीनगर के समीप एक गांव) में हुआ था और आप पाम्पुर (प्राचीन पद्मानपुर) में बियाही गई थी । लोककथन के अनुसार आपका देहान्त बिजविहाड़ा (प्राचीन बिजेश्वर) में १३७७ ई० के बाद अथवा इसके आसपास हुआ होगा ।

4. श्री सहज़ानन्द (नुन्द ऋषि) के 'ऋषिनामा' पुस्तक में अन्तिम बार आपका वर्णन नुन्दऋषि के जन्म से जुड़ा हुआ दिखता है । ऐसा लगता है कि आपका जन्म १३००—१३२० ई० के बीच के दौर में किसी समय हुआ होगा । कुछ महानुभाव आपका जन्म सन १३३५ ई० बता देते हैं, जो ठीक नहीं लगता, क्योंकि इकतालीस-बयालीस साल की आयु की कोई भी महिला द्यद् का नाम प्राप्त नहीं कर लेती, यह तो निश्चित है ।

5. माता ललेश्वरी (लल् द्यद्) के बारे में बहुत सी ऐसी बातें और धारणाऐं हैं, जिनका वास्तविकता के साथ कोई सम्बंध नहीं । वह सारी बातें काल्पनिक लगती हैं।

6. लल् द्यद् न सिर्फ़ एक महान कवयित्री या दार्शनिक थी, अथवा वह एक योगिनी और उच्च कोटि की साधक भी थी । वह योग अभ्यास की पराकाष्ठा को पहुंची थी, जिसको स्वामी योगानन्द जी महाराज ने 'Supreme mistress of Yoga' का नाम देकर मान्यता प्रदान की है । वैसे काश्मीर के ही नुन्द ऋषि ने"

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

तस पद्मानपोरचि लले
यमि ग'लि अमृत पिवो
तमि शिव वुछ थलि थले,
त्युथ म्य वर दितो दिवो''

कहकर ललेश्वरी की महानता' को पहले ही पहचाना था ।

—0—

हचिवि हा'रंज़ि पेच्निय कान गोम
अबक छान प्योम यथ राज़दाने
मण्ज़बाग बाज़रस कुल्फ़ रोस वान गोम
तिर्थ रोस पान गोम कुस मालि ज़ाने ।

———

आमि पन सो'दरस नावि छस लमान
कति बोज़ि दय म्योन म्यति दियि तार
आम्यन टाक्यन पोञ ज़न शमान
ज़ुव छुम भ्रमान घर गछ़हा ।

———

अ'सी आ'सि तय अ'सी आसव
अ'सी दोर क'र पत वथ
शिवसं सो'रि नु ज्योन तु मरुन
रवस सो'रि नु अतय गथ ।

———

गुरुन वो'ननम कुनुई वच़ुन
नेबरु दो'पनम अन्दर अच़ुन
सुई ललि म्य गव वाख तु वच़ुन
तवय हे'तुम नंगय नच़ुन ।

———

ओमुइ अकुय अछुर पो'रुम
सुय हा मालि रो'छुम वो'न्दस मण्ज़
सुय हा मालि कनि प्यठ गो'रुम तु च़्रो'रुम
आ'स'स सास तु सपनस सो'न ।

———

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

अकुय ओंमकार युस नाभि दरे
कुम्बुय ब्रह्मांडस सुम गरे
अख सुय मंत्र युस च्य'तस करे
तस सास मंत्र क्या ज़न करे ।

मल वों'न्दि गोलुम
जिगर मोरुम
अदु लल नाव द्राम
यलि दुलि त्रु'वमस तती

यव त'र च़लि तिम अम्बर ह्यता
छोद यव ग'लि तिम आहार - अन
च्यत्ता सुपरि विच़ारस प्यत्ता
च्यत्ता देहस वान क्या वन ।

न कुनि छो'ड्डुम न कुन्य छोंड्डुम
किय्सर वनु वोलुम गोत शाल
यी परुस परुम ति पानस पोलुम
अदु गोम मोलूम ज़ि जीनिम हाल ।

ख्यनू ख्यनु स'त्य कुन नो वातक
न ख्यनु गछ्क अहंकारी
सो'मुई ख्यतु मालि सो'मुय आसखु
समि ख्यनु मुच़रन बुरन्येनु ता'रि ।

अन्दरी आयस चन्दरी गारान
गारान आयस हियन ही
च़यय ए नाराण च़य्य ए नाराण
च़य्य ए नाराण इम कम वीह ।

शय वन च्यतनिथ शशिकल वुज़ुम
प्रकथु ह'ज़ुम पवन सू'त्यु

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

लोलकि नार वालिंज बुज़म
शँकर लो'भुम तमी सू'त्य ।

बु क्या कर इमन पा'चंन दुहन तु काहन्
इम यथ ल्यजि वो'खशुन करित गये
सा'री समहन अकिस रज़ि लमहन्
अदु क्याज़ि राविहे काहन गाव ।

गो'रस प्रिछ्याम सास्य लटे
यस नु केंह वनान तस क्या नाव
प्रिछान प्रिछान थचिस त लूसुस
केंहनस निशे क्याह ताम द्राव ।

नाबद बो'रस अट्ि गंड़ ड्योल गोम
देह काड़ हो'ल गोम ह्यकु कह्यो
गुरुसुन्द वनुन रावन त्योलु प्योम
पह'लि रोस ख्योल गोम ह्यकु कह्यो ।

अछ्यन आए तय गछ्ुन गछ्ये
पकुन गछ्ये द्यन क्यो रात
योरय आय तूरि गछ्ुन गछे
केंह नतु केंह नत केंह नतु क्यात ।

लल बु च्रायस सो'मनु बागु ब'रस
वुछुम शिवस शक्ति मीलिथ तु क्यात
लय करमसु वा'च्रस अमृतु सरस
जिन्दय मुरस तु म्यु क्रुरि क्यात ।

योसय शिला छ्य पीटस तु पटस
सोय शिला छ्य वो'तमो दीश
सोय शिला छ्य फिरव'निस ग्रटस
शिव छुय कथ्ये तु च्रेन वोपदीश ।

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

ल'ज़ कासी शीत निवारी
त्रन ज़ल क'रि आहार
इ क'मि वोपदीश को'रुय बद्य
अन्नस्तन वट्टुस सोच्यतन कठ द्य ुन आहार ।

हा च्यत्ता कुव छुय लो'गमुत परमुस
कुव गोइ अपज़िस पज्युक ब्रोंत
दिश बो'ज़ वश को'रनख पर धर्मस
इनु गछ'नु ज्यन मरनस क्रोंत ।

तल छुय ज्युस तय प्यठ छुक नच्चान
वन्तु मालि वो'न्दु कवु पच्चान छुय
सोरुय सोंबरिथ यत्ती छुय मोच्चान
वनतु मालि अन्न कवु रोच्चान छुय ।

लतन हुन्द माज़ लारय्मेम वतन
अकी हा'वनम अ'किची वथु
इम इम बोज़न तिमु कोनु मतन
ललि बूज़ शत्तन कुनी कथ ।

शिवा केशवा — ज़मवा
कमलज़ नाथ नाम दारन यवु
म्य अबल्य का'सत्यन भव रोज़
सुवा सुवा सुवा सुवा ।

वाख मानस कोल अकोल ना अते
छोपि मो'धुर ना अति प्रवीश
रोज़ान शिव शक्ति ना अते
मो'ते केंह्न्तु सुई वोपदीश ।

कुस पुश तय कुस पुशा'नी
कम कौसम ला'गिज्यस पुज्ये

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

कमि रस गो'ड़ दिज्यस ज़लचे दाने
कव मन्तर शंकर स्व-आत्म बुज़े ।

मन पुश तै यछ पुशा'नी
भावुकि कौसम ला'गिज़्य्स पुज़े
शशि रसह गो'ड़ु दिज्यस ज़लचे दाने
छोपि मन्तरु शंकर स्व-आत्म वुज़े !

आ'सि पोंदि ज़ोसे जामे
नित्ये स्नान करि तीर्थन
वह'रि-वरियस नोनुइ आसे
निशे छुय तु परज़नावतन ।

गुरु शब्दस युस यछ पछ भरे
ग्यानु वगि रटि च्यत तो'रगस
यन्द्रे शो'मरिथ आनन्द करे
अद् कुस मरे त् मारन कस ।

अभ्यासी सु-विकासी लय वो'थो
गगनस सगन म्यूल समि च़्रट्य
शुनि गोल' तय अनामये मोतो
योहय वोपदीश छुय बट्य ।

मिथ्या कपट असथ त्रोवुम
मनस को'रुम सुय वोपदीश
ज़ुनस अन्दर केवलज़ोनुम
अन्नुस ख्यनुस कुस छुम द्वेश ।

कामस सूत्यी प्रय नो भ्र'रम
क्रूधस दिय्तुम पवनुन फ़ेश
लूभस मोहस च़्ररण च़्रटिम
त्रिश्ना च़्रजिम गयस तोश

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

ल्यकु थोकु शेरि ह्यन्नम
निन्दा सांपनम पथ ब्रोंठ ताम
म्यति च्छिन कल नो छ्ययनिम
अदु यलि सा'पन्नस तु व्यप्य क्याह ।

यथ सरस सिरि फो'ल ना व्यन्ने
त'थि सरु सक'लि पोञ चन
मृग शृंगाल गं'डि ज़'लि हस्ती
ज्यंनु ना ज़्यन तो'तु'ई पे'न

लल बो' द्रायस कपसि पोश सन्न_य
का'डि तु दूञ कोंरनम् यन्नई लथु
ता'इयि यलि खाजनमु ज़ाविज तहँन्छ्य्य
वोवरिवानु गयम अलहांज़ि लथु
धो'बि यलि दिन्ननम साबन तु सन्नइ
ज़ल म्य डींशिथ गयम सथ
स'न्निय यलि फिरनम हञि हञि का'न्नइ
अदु ललि प्रा'वुम परमई गथु ।

परुन सुलभ पालुन दुर्लभ
सहज़ गारुनु स'क्षम तु क्रूठ
अभ्यासु कि गनिरय शास्त्र मो'ठुम
चैतन आनन्द निश्चय गोम

परानु परान ज़्यव ताल फो'जिम
च्यय्य युग्ये क्रय तजिम नु ज़ान्ह
सुमरन फिरान न्योठ तु ओंग'ज गजिम
मनुच द्वई मालि च्चजिमु नु ज़ान्ह

लल बो द्रायस लो लरे
छाडान लूसम दुय्नु क्यो रात
वुछुम पंड़ित पननि घरे
सुय म्य रो'टमस निछ्तुर तु साथ ।

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

गगन च्यय बुतल च्यय
च्यय घन पवन त राथ
अर्घ चंदुन पोश पोञ च्यय
सोरुय च्यय त लागी क्यात ।

त्रैंशि बो'छि मो क्रेशिनावुन
यात्रि छेई ताव्य संधारुन दीह
फ्रठ चोन धारुन त प्रारुन
कर उपकारन सो'इ छ्य क्रय

यमी लूभ मनमथ मद् च़ू र मारन्
वति ना'श मा'रिथ लोगुन दास
तिमय सहज़ ईश्वर गारन
तिमय सोरुय व्यदन सास

शुन्युक मा'दान कोडुम पानस
म्य ललि रूज़म न बो'ध तय होश
भेदी सपनिस पानय पानस
अद कमि हिलि फो'लि ललि पम्पोश ।

छाडान लूस'स पानय पानस
छे'पिथ ग्यानस वोतुम न कों'छ
लय कर'मस वा'त्रस अल्थानस
भ'रि भ'रि बान त चवान न कोंछ ।

म'करिस मलज़न च़'लुम मनस
अद म्य लो'बुम ज़'नस ज़ान
सु यलि ड्यूठुम निशि पानस
सोरय सुय तय बो' न कूंछ

ग्यान'क्य अम्बर पा'रिथ तने
इम पद ललि व'न्य तिम हृदि आं'ख

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

कार'णि प्रणवकि लय कर लले
च्यथ जीवि तु का'सन मरनन्य शेंख ।

त्र न्यंग सरा सरी सरस
अकि न्यंगि सरस अरशस जाय
हरु मो'ख कौंसरु अख सुम सरस
सत्य न्यंगि सरस शिन्याह कार

रुतु तु क्रुतुई सोरुय प.ज्यमु
कनन न बोजुन अ'छन नु भाव
ओरुक दपुन यलि वोन्दु वुज.यम
रलदीप प्रज़ल्यम वर्ज़नि वाव ।

कुश पोश तेल दीप ज़ल ना ग'छे
सदु भावु गो'रु कथ युस मनि हे'ये
शम्भोहस सो'रि नुतु पनुनि यछे
सुय यी दपि ज़ि सहज़ा करे

शिवु शिवु करान हमसु गथ सो'रिथ
रूज़िथ व्यवहा'री घनु क्या राथ
लागि रो'स्त मन युस उदय करिथं
तस न्यथ प्रसन्न सुरु गो'रु नाथ

तन्त्र गलि तय मन्त्र मो'चे़
मन्त्र गो'ल तय मोते च्यथ
च्यथ गो'ल तय केंह ना कुने
शिन्यस शिन्या मीलिथ गव

च्निदा नंदस ग्यानु प्रकाशस
यिमव च्यून तिम ज़ीवतय मुक्त
विशे'मिस संसारनिस पाशस
अबोध गंडाह शेत्य शेत्य दित्य ।

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

सहज़ानन्द (नुन्द ऋषि)

सहज़ानन्द का जन्म नाम "नन्द" था, यह बात आपने स्वयं ही बताई है आत्म ज्ञान पाने के उपरान्त आप बहुत से नामों से प्रसिद्ध हो गये । चूंकि आपके पास सब धर्मों और सम्प्रदायों के पुरुष अध्यात्मिक ज्ञान प्राप्ति के लिए जाते थे, आप शेख-उल-आलम, शेख नूरद्दीन नूरानी, अल्मदार-इ-काश्मीर, सरखेल-इ-ऋषियां नाम उपाधियों आदि से भी जाने जाते हैं ।

2. सहज़ानन्द का ज़न्म 1377 ई० (२३७७) में खी जोगीपोरा में हुआ था, और आपने 65 वर्ष की आयु में रोपुवन के स्थान पर 1442 ई० (२४४२) में प्राण त्याग दिये । आपके शव को च्रार-रइ-शरीफ में दफन किया गया, जहां पर आज एक खानकाह है । आपके जिनाज़े में उस समय के बादशाह बडशाह ने भी शिरकत की । इतिहासकार ज़ोनराज ने आपको "यवनों के सब से बड़े गुरु" का नाम दे दिया है ।

3. आपने काश्मीर में एक नये मत की आधार शिला डाली, जो ऋषिमत के नाम से मशहूर है । यह मत सम्पूर्णता एक वैष्णवी मत है । अहिंसा, शाकाहारीपन और दूसरों को दुख न देने का ऋषिमत में बार बार आगृह किया गया है ।

4. सहज़ानन्द के पूर्वज वास्तव में किश्तवाड़ के राजपूत थे और आपके खानदान का सिलसिला उज्जैन के राजाओं से मिलता है ।

5. आपके "श्रुक्य" श्लोक (काश्मीरी काव्य) आत्मज्ञान और अध्यात्मिकता के रस भरे मधुर प्याले हैं । काश्मीरी मुसलमान आपके श्रुक्यों को काश्मीरी कुरान का दर्जा देते हैं । काश्मीरी का पहला भजन भी सहज़ानन्द का लिखा हुआ है । आपके "श्रुक्य" ऋषिमत का दर्शन बयान करते हैं ।

6. घाटी में आपके नाम पर कई दरगाहें और खानकाहें मौज़ूद हैं, जिनमें कायमूह, च्रिम्यर, होंच्यपोर, द्रयगाम और रोपवन काफी ख्याति प्राप्त कर चुके हैं । परन्तु च्रार-रइ-शरीफ, जहां आपका शव दफन किया गया है, हर रोज़ काफी यात्री जाते हैं और वहां हरदम मेला सा लगा रहता है। आपकी दरगाह पर हर धर्म और सम्प्रदाय के लोग बिना किसी फर्क के मिनतें मांगते हैं और चढ़ावा चढ़ाते हैं ।

—0—

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

घ्_ुतुथ नरस गोर त्_ तुलिरिस माछी
घ्_ुतुंथ हलम ह'लिस रोंठनस दछ
भ'गि पा'री चाज्य को'दरा'चय
घुतुथ रूसिस को'स्तू'रि रछ

आर'बलन नाग'रादाह रोवुख
साधा रोवुख च्च्_ूरन मंज़
मूढ़ घरन गो'र्_ पंडिथा रोवुख
राज़्_ होन्ज़ रोवुख कावन मंज़

त्रालुन छुय वुज़मल्_ त्_ त्रटय
त्रालुन छुय मन्दनियन घट्_कार
त्रालुन पर्बतस करनि अटय
त्रालुन छुय मन्ज़ अथस ह्योन नार
त्रालुन छुय पान कुड्_न ग्रटय
त्रालुन छुय ख्यो'न वेह त्_ गार

युस ओस यति त्_ सूय छुय तते
सुय छुय प्रथ शाइ_ रटिथ मकान
सुय छुय प्याद्_ त्_ सुय छुय रथे
सुय छुय सोरुय गुपिथ पान

मुह भयि सुत शरदार त्रोवुम
सा'रि वुम'रि छाव'म अक्य कान्थ
स'हज़ह ज़ल्_ यलि शरीर नोवुम
विहिय सा'र को'रुम ईकान्थ

यमि ह्योत्_ तिहन्दि बरतल्_ ज़ागुन
तस प्_नुनी शरबथ्_ पान्_ चावे
छिस पा'थर भ्योन भ्योन अकुई छु मागुन
सु यस टोठि त्_ सुय अद्_ प्रावे

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

च्य़ दीव'ह धरथस त ग़ुरथस पज़ ख
च्य़ दीव'ह_ क्रंज़ान हुन्दुय छाफ
च्य़ दीव'ह_ ठ्यौंवह_ रोस्तुई व़ज़ख
कुस छुय पो'ण्य त कुस छुय पाफ

सु म्य निशे ब तस निशे
म्य तस निशे क़रार आव
नाहकय छोंडुम म्य पर दिशे
पनने दिशे म्य यार आव

स'रानाह क'रिज़े युथ न कूँ छ़ डेंशी
ध्यानाह करिज़े गुपिथ पान
क्रिया करिज़े युथ न ज़ाहं मशी
मशी त नशी पनुनुय पान

अन्दुरह क्रूध त्रावख नतह_
न्यबरह क्रूल कन्दे
अन्त मल कासख नतह_
छो'ञ्यी वो'थ बेठ कन्दे

शिव छुय ज़ा'व्युल ज़ाल वा'हरिथ
ती छुय मुरुन तीरथ कथ
ज़िन्द नय मुरख अद कव ज़ि मुस्थि
पान मन्ज़ह पान कड विज़ा'रिथ कथ

शिव शिव करान शिव मो बोज़े
ग्यव कन्दि करख मननि बुज़े
ग्यव ध्यू दीहस दीह दो'र रोज़े
दिख नय दीहस ब्यइस दिज़िहे

ज़ुवो च्न बोज़तो कनुवान
यिहो म'रनिन्य खबर शिनवान मी

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

का'लि इंडिस ज़न निनय पुजिवान
यि घासह का'ञ्यु दुनियहचि भ्रमवान

तोशान तोशान वो'दुर भरुम
ज़ज़'रि रखचस वोलुय पान
ज़ज़ुर बुरगस बुरगस फो'रुम
करिम गोनाह तु मोरुम पान

यारै आसि तु सर तस दीज़े
यार छुय विज़ विज़े प्रभात
भुत'लिस च़'मिज़ि तु अदु कति इज़े
वक्त_ रक्षस करिज़े क्यात

मरग छुय सू'ह तु को'तू च़लिज़े
ख्यलि मंज़ कडी च़ा'रिथ कठ
मरगच शरबथ चनु रोस्त न बलिज़े
सुलि क्यथ नु गया'स म'रिथ कथ

काव क्याह शा'हस शिकार हावे
मययस क्याह करि धूप अगरै इये
धूप क्याह च़न्दरस प्रकाश हावे
वो'पज़स शिव क्याह ब'ड गथ दिये

तगिये बो'छिस भूज़न दीज़ें
ननिस ग्रशिजिनु क्या छै ज़ात
सवाब सासह गनु प्रा'विज़े,
ति बाय नो'न्द करि रावि नु ज़ात

आस ति स्योदुय गछ_ तु स्योदुय
स्यदिस हो'ल म्य करिम क्यातु
बु तस गयास तति व्यो'दुय
बुदिस तु विदुस करिम क्यातु

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

सोंदरि काम़ दिवन चाव गोम
यावुन याम गोम पोशन मो'तू
सुन्गरुक शीन त़ वोलरुक वाव गोम
मुहिथ ठग गोम अक हो'तू
वुल्गि भ़्त्तस क'ऩ त़ तोह गोम
गरीबस द्रोह गोम वरियस योतू

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

आराधना

तस पदुमान पोरचि लले1
तमि गले अमृत पिवो
तमि शिव वुछ थलि थले
त्युथ म्य वर दितो दिवो

लुक भवनचि कजे2
आ'क्जे कुरन सिवो
सू'त्य जानावारन च्रजे
त्युथ म्य वर दितो दिवो

डंडक वन'कि ज़लका ऋृषि3
कुछ फलु कुरे'न सिवो
पोख्तु भ'क्ति ओस मोक्त सुय
त्युथ म्य वर दितो दिवो

ऋ'षि वन'कि मीरान ऋृषि4
च्रन्द्रह सासस अन्नज़ल चवो
अदु द्व'य रोस्त आकाश ग'वुय
त्युथ म्य वर दितो दिवो

रमस पतु पो'हलू5
तम्यु दमस वखनु किवो
सुय हरुमो'ख वुडिथ च्रो'लू
त्युथ म्य वर दितो दिवो

टूठुक इशु ब'र गोसा'जिस6
तमि ज़ाने करिथ सिवो
टूठुक रखज़ालस पुइवा'ञ्यस7
त्युथ म्य वर दितो दिवो

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

कन्दि गाट्ज को'बुर रुज़ें[8]	टूठुक स्यधवा'ग्स वोपबो'धस [9]
तमि वोदयस ओहर किवो	तम्य बटन बुगुर निवो
टूठुक स्यधु श्री कण्ठस[10] स्यधुस	तस लूरिथ विज़े प्रज़े
त्युथ म्य वर दितो दिवो	त्युथ म्य वर दितो दिवो

विज़ि करे कर'मनि संज़ी
घवु संज़ै गछ़िह्यम सिवो
व'न्य विनथ "नुन्दय" संज़ी
त्युथ म्य वर दितो दिवो

---

1. ललेश्वरी माता-लल वाद

2. लूक् भवन (अनन्त नाग) में कुछ गूंगी लड़कियां रहती थीं, जो लोगों की सेवा करने के अतिरिक्त प्रति दिन पक्षियों को दाना-पानी डालती थीं। एक दिन उनके भी पर निकल आए और वह आकाश में उड गईं।

3. जलका ऋषि हंदुवारा (काश्मीर) के निकट डंडक वन में रहता था, और जंगली झाड़ियों के फल खा कर निर्वाह करता था।

4. एक प्राचीन ऋषि का नाम, जो सिर्फ पानी पीकर निर्वाह करता था।

5. एक चरवाहा, जो हरमुख की पहाड़ी के दामन में गायें और भेड़-बकरियां चराता था। एक दिन उसको भी भगवान शिव के दर्शन हुए।

6. ईशेश्वरीः (इशुबर), (निशात के निकट) में रहने वाले एक प्राचीन ध्यानी-योगी की ओर इशारा है।

7. रक्षज़ाल पशमीना का कारोबार करने वाले एक दुकानदार का नाम था, जिसने संसार को त्यागकर आत्मज्ञान प्राप्त कर लिया था।

8. यह कुबजा (रामायण वाली) की ओर इशारा है।

9. सिद्धवानी को शंकराचार्य की पहाड़ी के दामन में भगवान शिव के दर्शन हुए थे।

10. सिद्ध श्रीकंठ योगीराज थे और श्रीनगर के निकट ही रहते थे। सम्भव है, कि यही सिद्ध श्रीकंठ माता ललेश्वरी का गुरु रहा हो।

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

अल्लखेश्वरी रूपभवानी

माता अल्लखेश्वरी का जन्म शायद 1621 ई० (२६२२) में हुआ था। वह माता शारिका का रूप थी। रूप भवानी का जन्म दर खानदान में हुआ था। दर खानदान के पूर्वज जद्दमीरू पंडित जहांगीर बादशाह के साथ वापिस काश्मीर आये थे। ज़माने की गर्दिश और समय के फेर बदल ने काश्मीरी पंडितों को बिखेर कर रख दिया है, रूप भवानी के खानदान की कहानी उसी दुखद_ गाथा का एक हिस्सा है। आपका देहान्त 1721 ई० (२७२२) में हुआ था।

2. रूप घद का विवाह सपरू घराने में हुआ था। जहां लल घद की भांति ही आपको भी काफी दुख और यातनाऐं दी गई।

3. रूप घद की कृतियों को भी वाख्य कहते हैं और शक्ल सूरत में तो यह वाख्य लल घद के वाख्यों से मिलते जुलते हैं, परन्तु यह बात सिद्ध है कि इन वाख्यों को जन साधारण में वह मान्यता प्राप्त नहीं हुई हैं जो लल घद के वाख्यों को हासिल है। लल घद और रूपघद के वाख्यों में सिर्फ लाइनों का फर्क है। रूपघद के कुछ वाख्य चार लाइनों से अधिक भी हैं।

4. रूपघद के ज़माने तक फार्सी ने काश्मीर में अपने पांव जमाये थे इसलिए उनके वाख्यों पर फार्सी भाषा का काफी अस्सर है। ऐसा प्रतीत होता है, कि संस्कृत भाषा के अतिरिक्त अल्लखेश्वरी फार्सी से भी काफी गरिचित थी। आपने लार गांव और सत्‌ पोखून में भी योग साधना की थी। सफाकदल के अतिरिक्त आपकी एक यादगार वास्कुरा गांव में भी है। वर्ष में आपके नाम पर दो यज्ञ साहिब सप्तमी के अवसर पर किये जाते हैं, एक पित्र पक्ष में और दूसरा कृष्ण पक्ष माघ मास में। भक्तजन नकदी रुपये और क़न्द मिश्टान का चढ़ावा चढ़ाते हैं।

—0—

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

इवान पानु तु ज़्यवान पानु
रिवानु पानु तु दिवान टखु
नाना प्रका'रि गिंदान पानु
रिंदानु पानु तु ह्यवान पत्थ

द्राव वुफे वाव रूपी गुर
गुरु ईश्वर आव अविनाशे
पान मशे तु ध्याना तोशे
स्वमन परमानन्द वातु तथु राशे

क्रिया तु कारण युस पानु ज़ाने
मनय माने घन तय रात
स्वरूप ध्याना युस परज़नावे
माने मनय तु नन्यस ज़ात

हनि हनि पाताल गगन गुमय
म'रित तु मूरिथ पांछं
तत्व च़ीतन मेलिहा शुनयी गले
गुनयी छय अकइ सथ

द्रायस त न्येरवुनु आवह्यम ज़ंगे
च्यय नु तु करुणा मंगे कुस
रंगा रंगी गुल फोलह्यम अंगे
म्य नु तु ब्ययु च्यथ च्यंगे कसु

कोह योद दज़न देह हेयि मारे
बो'धि हियय ह्योन अन्ने'स ग्र'ख
क्रोह त्रावे बुदियस स्वभावय
शेहले च़ंदन ह्यरय क्राये

पदवी बिना मा त्राव पाद
वादा पूरख अदु छुय वास

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

ब्रकुन नाबद ग्रकुन खासुय
परसु पद परमानन्द हा'सिल छुय

समन्दर प्यालु तु मो'धुर वासुन
अवय क्या सन मंगु बु तय
गणन रूपु तु शिन्या आसुन
आसुन तु भासुन सुय छु तय

यवै ग्यान ब'रन्नरे करे
तवै गन्यान आवरे पान
यवै प्यार भस्मय करे
तवै लय सु मारे स्मरे पान

गा'रिथ स्मरिथे शून्या खा'ड्डुम
पारुद मारूम तवय-सू'त्यी
पंच्न अग्ना लाल चड़ोवुम
ग्वाश प्रज़ा'लुम तवय-सू'त्यी

युसुय सह्राय सुय पानु आसान
अथवासा शिव-त्ता' शून्यु कसु
युस व्यह_ गाले त्यह_ न्यवारे
सुह_ शरीर थावे पानस ब्रोंह

युस मनि ह्यिये ध्यान-त्तु पानस तोले
कुंह नु गेलि त कां'सि न गेले
ज़ागि हरसु तु लाग्यस वेले
पानय पानस सू'त्य मेले

अपने घर आया आप साई
जो कुछ मैं था सो अब नाहीं
यह बोध आया गुरु की बडाई
जिन गुरु ने दिया सत का तत्व बताई

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

बाग च्चां'यिस भागे आयस
परमा-सरस नारस त्तु नरस
शरणे आयस लल्लीश्वरस
श्री सत्तु गुरूस माधवा शिवस

बानु फुटरि तु पानय थुरे
कुसु मरि ता' कस लगि द्रख
पानय नहावे पानय पूरे
कुसू सोरि त कस यियि टख

गोम औवतार सुह महादीव
सुह वा सुह वा सुययु छुस
पूरा तोले रामा बोले
ब्रह्म स्वामी मन्दोरि छुस

भाव भ्यो'न्न भ्यो'न तु नाव छुस क्रेठान
ऐठन अंगनु अकुय पय
लयु पवनस म्यवु छुय बानस
मानुन पानस निशि छुय दय

दीह अन्तर सुषुम्न सो'वुम
जा'गा'वुम तुरीया आये
अनाहत आनन्द खिला'वुम
मिला'वुम अनामय च्यये

सहज़ तु आनन्द रह हा दा'रिथ
पानय पानु संधारिथु क्यथ
कृपाग्नि च्याने गछ्हा त'रिथ
ईश्वर स्वरूप पानय स्वरिथ तु क्यथ

पुरुषो न पुरुषात विमर्शो न मर्शात
वर्ना-तीजो शान्त अन्तर आकाशम्
सूक्ष्मो न विस्तार न परं व्यापारम्
न अन्तदारम् परं ब्रह्म सोहम

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

पादू न बीजम न चतर्बुजाकारम
न त्रिजग चराचर अनन्तरूपम्
न सहस्रनामम निराधारम
शुद्ध स्वरूपम् परं ब्रह्म सोहम

"साक़ी"

ओम छु सथ संग् साम वीद
परम् आनन्द छुस नवीद
ब्रह्म ज्ञानुक नाग् राद
प्रढ तु कल भक्ति अबीद

ज़ा'ज आगुर छु पान गाशी गाश
ठो'र छु नज़रन तु नतु च्चथ आकाश
कल गनेयस अख स'पुन ग्रंज़ रो'स
सुय छुय बस सुय छुय म्याजि ज़न्मुक राश

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

अ'रिणिमाल

अ'रिणिमाल काश्मीरी भाषाकी सुरीली और रसीली कवयित्री है । आपकी रचनाओं का कोई भी संग्रह आज तक प्रकाशित नहीं हुआ है । आपकी कविताऐं एकत्रित भी नहीं हो सकी हैं, और बिखरी पड़ी हैं । हमने पहली बार उनकी रचनाओं को एकत्रित करने का प्रयास किया है ।

2. अ'रिणिमाल की रचनाओं में विरह की आग और वियोग का कड़ा दरद छलकता है । जिसको सुनकर या पढ़कर मनुष्य अपने अन्दर दरद की कसक बुरी तरह अनुभव करता है और अनायास ही आंखों से आंसु उमड़ पड़ते हैं । हमारा मत है, कि यदि अ'रिणिमाल ने दरद और विरह के गीत गाने के बदले ईश्वर भक्ति अपनाई होती, वह काश्मीरी भाषा की मीरा बाई होती । अ'रिणिमाल के "लोल" (प्रेम) के गीतों का काश्मीरी में कोई जोड़ नहीं ।

3. आपका जन्म पलहालन (बारामुला जिला) में हुआ था और शादी रैनावारी के काचरू घराने में हुई थी । अ'रिणिमाल का पति भवानीदास काचरू फार्सी का कवि था और "नेको" की उपाधि से कविता करता था । भवानीदास ने शादी के बाद अ'रिणिमाल से मुँह मोड़ लिया था और त्याग दिया था । वह मुसलमान हाकिमों के दरबार की नाचने गाने वाली स्त्रियों की बुरी संगत में पड़ गया था ।

4. आपने जीवन का बहुत बड़ा भाग मायके में ही गुज़ारा । जहां उसकी कृतियां बिरह की जलन से तपकर और चर्खे की गूँ-गूँ से मिश्रित होकर फुव्वारे की भांति मुंह से फूट पड़ीं ।

5. कथन है, कि भवानीदास मुस्लिम सुबेदारों के बर्ताव से निराश होकर जब अ'रिणिमाल से मिलने और क्षमा याचना के लिए पलहालन पहुंचा, तो उस समय इस कवयित्री की अर्थी उठाई जा रही थी ।

6. अनुमान है कि यह महान कवयित्री 1800 ई० के आस-पास स्वर्गवास हो गई।

—0—

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

अद कर इयम ताय
बरसय मलरिव मलरिव
च्युय ना सनु मस
चावि ना सनु मस

कमि सो'न्य हा'वनस तन
का'लि हा'य विहनम
प्यठ संगरनु
हलि छुस खंजर तय
तीर हा'य लोयनम
भरसय मलरिव मलरिव
च्ययु ना सनु मस
चावि ना सनु मस

मदु हो'त यार गोम म्य नश'राविथ
तीय क़स निशु ह्यक भा'विथ बो'
रुमु रुमु लतय कवु छुम मारा'नी
करि ना सोन पाय आयस बो'
नेह घटि गोमय से'न्धि वावु त्रा'विथ
तीय कस निशि ह्यकु भा'विथ बो'

घरि बाल द्रायस सामानु प्रा'विथ
कांम'नि प्रारान लूसुम दोह
पामन ला'जनस गोम तम्बला'विथ
तीय कस निशि ह्यक भा'विथ बो'

क्या बनुयो मति क्या बनुयो
यी गोम पानस तु तीय वनुयो
लान्युन न्याय छुम त ती वनुयो — क्या वनयो०

बाग़स म्या'ञिस बादम फुलुयाह
आदनं रा'वस त तीय वनुयो — क्या०

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

बाग़स म्या'ञिस च्रेर फुलयाह
वेरि चाणि फ़ोजमो तु तीय वनुयो क्या० वनुयो

बाग़स म्या'ञिस गिलास फुलयाह
दिलासु दितिथमु त तीन वनुयो क्या०

बाग़स म्या'ञिस टंगु फुलुयाह
लंग लंगु फो'जसे तु तीय वनुयो क्या०

बाग़स म्या'ञिस आ'लचि फुलयाह
लोलच करिथम त तीय वनयो क्या०

हच्ने' लोमुनमु न्यनदरे हच्ने'
मच्ने' मछुछ़ बंद सुनिथ गोम
सो'न न्यूलम मूहिथ रच्नि रच्ने'
वुन्यूब करिथ गोम
वनतु व्य'सि वो'न्य कुस कस पच्नि
मच्ने' मछुछ़ बंद सनिथ गोम

दामान बोडुम अशे म'ति
काम'नि प्रारान दोह गोम
सामानु गंडिथ आयस
यूत क्या लो'गुय नशु मति
पामन ला'जथस क्या करु
काम'नि प्रारान दोह गोम

म्यानि मदुनो हयो हयो
छम चा'ञ्य लादन, हा इयो इयो

दर्शन दियो दियो
छम चा'ञ्य लादन

आदन च्यय सु'त्य क'रियोम वादय
वादु कौ डो'लहम, पियो पियो
छम चा'ञ्य लादन

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

म्य करि तस किन्न पोशन मालत्
छावि ना हीय, छसय म्याञ्य द्रिय

हावस भरिमस मद् की प्यालत्
इयि ना लोलि मंज़ करसय जाय

दर्शन तहन्दि बालु सम्भालत्
छावि ना हीय, छसय म्याञ्य द्रिय

छम लादन लटि अकि इयिना
हटि कुइ वंदसय रथ

रावि आदन पादन प्यमुसय
लति क़व को'रनम लथ

वन् कस व्यसि सो'न् छम गेलान
यन् या'रि त्रा'वनम कथ

शायि यार आ'स्यतन पूशतन परज़न
तोति छम वों'न्दुसय सथ

गूँ गूँ मोकर हा इन्दरो
क'नरिञ फो'लिलै मला'यो

रबि तल का'र तुल सुम्बलो
यम्बरज़ल प्याल ह्यथ प्रारान छस

ही थ'र छस दुबारह फो'लयो
क'नरिञ फो'लिलै मला'यो

वुछ्त व्यसि कह'न्दि घरि बो' ज़ायस
भाग'णि आयस कहन्दे ताम

दोह_अकि मा'लि मा'ज्य नगर् हरशायस
शाहरच आ'सस वा'न्नस गाम

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

सति दोह फीरिथ माल्युन आयस
भाग'णि आयस कहन्दे ताम

दोह अकि स्नेह सान माल्युन गयायस
डयकु बजु काकञि दिन्नम पाम

डयकु रोस ज्यवचुनुय कोनु मो'यायस
भाग'णि आयस कहन्दे ताम

हनु हनु छम लोलु चाञि भरिथ
ज़ो'लु छमनो सो'न्दरे सो'न्दरे

तीरि मिज़गान दितिथम दा'रिथ
गा'म जिगरस पंजरे पंजरे
दा'दिलद छस को'त ह्यकु ला'रिथ
ज़ो'लु छमनो सो'न्दरे सो'न्दरे

व'छ वा'लिंज ह्यवै मुच्चरा'विथ
क'छ पन ज़न हरयो हरयो
मछि मछु बंद ज़न गच्छै ला'रिथ
जो'लु छमनो सो'न्दरे सो'न्दरे

गछ कुठिनय थावै वथराविथ
लछ नाव्यो मन्दोरे सानि बेह
अछि दा'र ज़न रोज़य पा'राविथ
ज़ोल छमनो सो'न्दरे सो'न्दरे

अ'रिणि रंग गोम श्रावुण हिये
कर इये दर्शुन दिये

श्यामु सो'न्दर पामन लजिस
आमु तावय कोताह ग'जिस
नामु पैगामु तस कुस निये कर०

कंद नाबद आरूद मो'तुय
फंद क'रित च्चो'लुम को'तुय
खंदु कर्यनम लूकन थिये कर०

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

सुलि वोथवो संगर मालन
लालु छ़ारोन कोहन त बालन
प्रारान छस ब तहंज़ि ज़िये कर०

म्य शोकु यार सन्दि भरिमस प्यालतु
आलौ दियतोसे
तरवञि मरगतु वसवञि बालतु,
आ'ही नीतोसे

क्याह् करु नियनम हरणणि छ़ालतु
आलौ दियतोसे
कन्द तै नाबद भा'रिमस थालु तु
रंगु रंगु नीतोसे

जोद गव आशिकन दोद क्यथु च़ालतु
आलौ दियतोसे
पामन बु ला'जिनस सो'न्दर मालतु
म्योनुय वनितोसे

हावसु करिमस पोशन मालुत
आलौ दियतोसे

हा वलो मु'न्य हो वंन्दुयो पादन
आदन बाज़ि म्याञि यारो वे

आदन आ'सस रैंज़लो नादन
यावनस क़दर नो ज़ानी म्य
दितमी दर्शुन छम चा'णि लादन
आदन बाजि म्याणि यारो वे

कुकिल पै'र कव् त्राविथ कोल_ रादुन
दुकले वोन्दुय म्योनुय गव
म्य कले चाने ब्रां'न्ति गय नादन
आदन बाजि म्याणि यारो वे

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

आया है सो जायेगा, राजा रंक फकीर
कोई सिंहासन चढि चले, कोई बांधि ज़ंजीर ॥

दो बातों को भूल मत, जो चाहत कल्याण
नारायण एक मौत को, दूजे श्री भगवान ॥

नारायण दो बात को, दीजे सदा बिसार
करी बुराई और ने आप कियो उपकार ॥

श्वास-श्वास में नाम भज, वृथा श्वास न खोय
ना जाने इस श्वास का, आवन होय न होय ॥

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

बो'न काक, टिकू काक और लछ् काक

काश्मीरी भाषा में जिन लोगों ने वाख्य की परम्परा को नया जीवन प्रधान किया है, उन में पूजनीय लछ् काक जी का योगदान बड़ा ही मूल्यवान है। लछ काक बहुत बड़े साधक थे। और शैवी परम्परा को आपने आगे बढ़ाया। आपकी गुरु-शिष्य परम्परा मे'र्ज़ काक ज़ी से मिलती है।

2. स्वामी लछ् काक जी के वाख्य यद्दिप गिनती में कम है परन्तु इन वाख्यों में जो गहराई और अनुभव की छाप दृष्टि में आती है, वह सराहनीय है और बहुत ही कम लोगों का हिस्सा है। आपके प्रायः सब वाख्य अभी तक प्रकाशित नहीं हो पाये हैं, क्योंकि आपके वाख्यों की कल तक सिर्फ दो ही पांडुलिपियां उपलब्द्ध थी, और उन में से भी वडवन वा़ली पाँडुलिपि हमारी नज़र नहीं आई हैं।

3. लछ् काक सथू बरबरशाह के रहने वाले थे। और 1871 ई० की शिवरात्री के दिन स्वर्ग सिधारे। आपके शिष्य श्री रामानन्द जी ने काफी अच्छे भजन कहे हैं, परन्तु हमारे हाथ नहीं लगे।

4. यह बात ध्यान देने योग्य है, कि वाख्य की परम्परा को शैवी भक्त कवियों ने ही जीवित रखा है। मे'र्ज़ काक, टिकू काक, बोनु काक और लछ् काक जी इस सिलसिले के उधारण हैं। इन लोगों ने वाख्य की बनावट और शक्ल - सूरत में कुछ परिवर्तन अवश्य किये हैं, जिसको भुलाया नहीं जा सकता।

—0—

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

स्व० श्री बोनु काक

निरला वासु दय वरतन त्रिकाल
कर्ता भर्ता बाल ब्रह्मचारो
भक्ति भावु कौसम पोशन करै मालो
बालु गोपालु नन्द लालो हो

विश्वेश्वर विश्वु आलनु भगवानु
विश्वरूपु किव छुक उलसानो
विश्व आत्मानुभव दितु दीनु दयालु बाल०

द्वादुशान्तु वासु वासी चेतन भानु
स्व सुखस्थानु सुख भोगा'नी
स्व परमानन्दु आनन्दय सर्वकालु बाल०

सुज्ञान सर्वदा सर्वतो भास्तम
क्षणु क्षणु भासतम साक्षात्कारु
कृपा करतं भगवानु कृपालु बाल०

पादारबिंद अमृत तृप्तावतमु
प्रावुनावतम परम आनन्द थानु
पांद कमलन वुंदै नेत्रन हन्दि लालु बाल०

दासन क्युत ह्यो'त छुक बडि स्वभावु
शुभ दर्शनु वर दिवानो
विदुरस हाक म्य प्यठ आमुत सालु बाल०

श्रीधरु सत्गुरु बालु दामोदारु
श्री कृष्णु वासुदेवु श्री रामो
सो'ख मो'ख सन्मो'ख आस्तु अन्तुकालु बाल०

—0—

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

स्व० श्री टिक्‌ काक

वनुखय केंह वन छो'पि हन्दि मो'खय
बोज़'खय केंह पो'ज़ त्रोपुरिथ कन
इच्छ'खय केंह पूर्ण हृदय सो'खय
कर्म कर केंह बनिथ निश्चल मन

केंन्नव वो'नुय वुछ्न केंछाह
वुछ्वुन्यव केंन्नव केंछाह नु
साक्षी चैतन परमार्थ बोधस
कारण कुनि केंह रेंछाह नु

प'ज़िस प्यठ य'छ़ प'छ़ आसिय
पज़ि पुछ़ि रावरि न्यन्दुर त नेह
पो'ज बोज़ुन रस मस च्ययि खासि
पज़ि बिना भासय नु तस़ कुनि केंह

मोगु बो'छरुन छलु छांगरि को'रनख़
लांग'र्य लोगुत आ'सित राज़य
प्रकाशुमान पान पानु निशु खो'टरोवुत
पान फाटनोवुत रतु तु माज़य

देह छुय आयुकिस आ'मिस पन्नस
अलोंद करान छुक शुर्य भाषे
यि कुरुम तु यि कर म'रिके म्यान्यरु
कवु लो'गुक वासनायि वाल वाशे

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

स्व० श्री लछ् काक

हाशन ज़ीवो देह दोह छुय नशन,
अमर पान कव मशन छुय

ईशवर अंश अग्न त्यंब'र
काठस छ्यथ सो'य अग्न
यि द्यु धनु यस गुरु कृपा

अज्ञान काठसु संद'र्यजे
त्यंब'र ईश्वर अंश सांपुनिज़े
भ्रम यि संसार गंज़'र्यज़े

गो'डु छुक विषय भोगन भ्रमन
काल'ञि सिंधे तिमय तरन
महा चंन्चल मन लय करन

पतव विफल नेरन दुख
सिद्ध यस गुरुजन परम सुख
सो'रन सुदीव अन्तरमुख

कालञि चंजे गछान खंजे
अन्न पान च्रेय क्यथु रोच्चान छियो
कालस हारि भयस तारि

सो'न्दर त गंदर गछान दो
च्य क्यथु मन अदु पच्चान दो
च्न कोनु दयस सो'रान दो

इमनु भाग्य उदय करान्
आकाश पाताल तरिथ गछान
संगरमालन शीनु यथ ज़ल द्राव

स्वामी सो'रान वों'दे मंज़
क्रीड़ा करान कंदे मंज़
ज़लय बिंदु स्यंघे मंज़

राणो बु नो रा'त्रिम मंगै
यि केंह देहस प्रारब्ध आसे
सुलभ आसिथ गोमो दुर्लभ

म्य रावणुन राज्य करे क्याह
तथ मंज़ हरे त हुरे क्याह
सुराज़ लो'बुम घर क्या

हशान०

चो'यशीत लछ ज़न्म धा'रित
चिन्तामन देह अथि आव
दिवान किन्नरन गंधरवन
दुर्लभ रटुन यहोय देह आव

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

अविना'शी पानु शम्भू
यमि शाये अथि आव
आगरो च्न'य कन्न लोगखो हा घरचे छाये

अश्वत्थ नोव को'लु नाश रुस्त
वो'न जनार्धनि धनुर्धरसय
मूल ह्योर कुन लंजि बो'नकुन
पत्र वीद तथ कुलिसय
युसुय तथ ज़ानि वीद तुमिय ज़ोन
पा'र्य ज़ान तस शिवसय आगरो०

अमृत फल सुय कुल छु दिवान
राज़ योगियन ति ह्योतुये
हठ यूगियन कर्म का'न्डियन
दुर्लभ वातुन तो'तये
रेड़ पकुन तोतु सं'ज़ वुफ
खंजर कुलिसुय इछुये ''

नजि रटुन नजि त्रावुन
युथुय ओसुक त्युथुय आस
युसुय अन्तर सुय बाहिर
युसुय स्वामी सुय दास
पा'नि पान अरूप दय
साधु वुन योग अभ्यास ''

आत्म साक्षी टाठि ज़ानतो
शरीर आव क्षणु भुंग्र
संसारु किस दुखु रूपस
योगु लय च्यय़ असंग
भूर भुव; स्व; च्यय निश द्राव
छुख च्न सा'क्षी च्य़ नु रंग आगंरो०

दिव्य सरै मंज़गामि गोम
गुपित वनान रो'वये

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

ब् नबा सु युस ब् वनान
मटन अंदर दिवये
त्रन भवनन चूरिम देवी
पं'च्निम मो'च्न पत् शिवये आगरो०

रंग् लरि छुम रंग रो'स्त दय
प्रथ वान् सुय रंगरुय
नाना रंग धारण् सुय
ना रंग सत न् गुथर्य
ज़ानी कुस तस निराकारस
सारगी यस छि नेत्रय ''

चेनत् मनै चिन्ताय मन त्राव
चिन्तामन च्नित्त रूप प्राव
खुसव्'ने वसुव'ने
हंस् द्वारै पूर्य त्राव
ज़ानत् हरमुख द्रायि गंगा
च्नय दिवये तन नाव ''

शब्द् ब्रह्मस गछ्त् लये
सो'य पुय कासि मनि खये
खय त्रावित मन च्नित्त गव
च्नेनतन प्रथ शायी दये
दय टोठ्योम ऋषि पुत्रो
तस तु म्य द्व'यि रूज़नये ''

वेद शास्त्र प'र्य प'र्य छिय्
प'र्यमुति ज़र्य गछ्न
अपुरिस निशु नेरान छिय
च्नोर वेद ब्ययि पुराण
आज़ानतो शब्दु ब्रह्मय
परमु पद दयि वथ मान ''

—0—

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

सु मा ड्यूंठ्वन नाव गोत्र वर्ण् रुस्तुय
युस दज़ि नता'य हो'खि नता'य छ्यनन् रुस्तुय
सु शांत प्रकाश सिर्यि ज़न द्राव लोसन् रुस्तुय

सुज़न आसान मस च्यवान छु स्वतन्त्र'य
सु बोध मये बोजव्नुय छु स्व मन्त्र'य
सु भक्ति बिना भू क्रिया छुय नु सु तन्त्र'य

मधुर मसुय ब्रह्म योगुक च्य गलि गले
दीर्घ् रोग्य संसारुक तवय बले
न'निय सु ईश्वर निश पानस संदेह चले

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

वासुदेव*

कर इयि म्य कुन गिंदुन दिमुस चंदुन हार
आद्य शक्तियि शिव ज़ियस नमस्कार

ओमय आद्य ओमुस अंदर पञ्चाकार
ओमुय ज़गत धा'रित केवल निराकार
ओमुक निर्णय कुस वनि भ्यो'न भ्यो'न छुस विस्तार
ओमुस पा'र्य ओमुस हर मुख नमस्कार आद्य०

ओमुय छु सारु ओमु'चि स्मुरण मनुस धार
सहज़ स्वरूप आनन्द प्रावक मुक्ति द्वार
भक्ति देव प्रमाण थावक बनि उद्धार
भक्ति सू'त्यी लय कर भक्तयो लबुख तार आद्य०

मोहुचि न्य'न्दरि अन्दर मु गछ़ गिरिफ्तार
बोधायि अन्दर न्यन'दरि गछ़तो खबरदार
थौद वो'थ न्यन्दरि इन्द्रिय क्रीडस खबरदार
दिल थव डंजे लंजे ब्यूठुय जानावार
बोलनावुन लोलु पननै सुय ओमकार आद्य०

आनन्दमय बनक पयालु चावनय मालामाल
भावनयु सो'रुय सवमनि सोऽहं साहाकार
त्रिगुण उल्लंघित निर्गुण छु पानय निराकार
अनतन लये मनस सू'त्यन पनुन यार आद्य०

पान पनुन य'म्य को'र सही बु संसार
बही त'मिसुंज सही सा'पुज़ बु सरकार
'वासुदेव' मेलव देवाद्यदेवस बु विस्तार
सार सही आद्य अन्तस छुय दरकार
पादि प्रणाम नादु बिन्दस बारंबार आद्य०

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

टोठतम विशणारपन कृष्ण जीवय
हरे रामु नारायणु वासुदीवय
गोबिन्द च्चरणार बिंद चा'ञि सीवय
हरे राम नारायणु वासुदीवय

शरण च्यान्यनु पंकज़ पादनु
वरान सिद्धन सन्तनु तु साधन
क्षमा क'रू सान्यन अपराधन हरे राम०

अलक्ष्य महिमा चोन क्याह वनय
मन बो'द्ध वा'णी तोतु नु वात'नय
पानय ज़ानख बु क्योहो व'नय हरे राम०

प्रबल म्यानि विज़ि को'त गोय सु बल
यमि बलु सू'त्यन खोरथन अज़ामल
ब'ति छुसय प्रारान चाञे बर'तल हरे राम०

भक्तयन सू'त्यन मान कुस करे
सुय करि यस चा'ञि दया वरे
त'सि वरि युस नामु निधान सो'रे हरे राम०

हा जीव क्याज़ि छुख चिन्ता क'रान
क्षणु क्षणु आसुन नारायण सो'रान
दासन पनुन्यन पानय वरान हरे राम०

क्याह रुत ओसुम कर्मय लोनुय
तवय लोगमुत छुम नाव चोनुय
पानय करख उपाय म्योनुय हरे राम०

श्रद्धावान क्याह आसु गूरि बाये
यिमु लूकु लज़ा त्रा'विथ द्राये
पानु भक्तवानस सेवायि आये हरे राम०

टोठतम अनाथस हे भवु दाता
च्चय छुख गुरू म्योन च्चय मोक्ष दाता
माता पिता बन्धो भ्राता हरे राम०

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

श्रीधर प्रारान छुसय चाञि वेरे
प्रवाह चोन योर कर सना फेरे
सत्र भाव'कि पोश लगय शेरे हरे राम०

पद्म चोन फो'लनावान हृदय
चक्र कासान शत्रुन हुंद भय
शंख शब्दु सान्पनान भक्तयन हुन्द जय हरे राम०

शंख चक्र पद्म गदाधरस
कोस्तबु रत्न सर्वे ईश्वरस
अस्तुत करान च्रराचरस हरे राम०

मुरली वायान आनन्द रूपय
मोहान मन गूपियन कृष्णु रूपय
सा'री बन्येमति कृष्ण स्वरूपय हरे राम०

दयायि सू'त्य पालतम गोपालय
सम्भालतम जसुधा नन्दुलालय
ना'लि छय शूभान तुलसी मालय हरे राम०

केशव माधव हरषी कीशे
अख शो'भ द्रष्ट्य करतम ईशे
मो'कलावतम भवु बन्धन नीशे हरे राम०

निराकारस निरन्तरस
वेषाधारस विश्वम्भरस
सर्व ईश्वरस पूज़ा करस हरे राम०

ब्रह्मा इन्द्र त्रि नेत्र धा'री
सा'री चा'ञी पूज़ाकारी
पाहे मुरारी गरुडा सवारी हरे राम०

भाग्यवान क्याह आसि गोकलवासी
यिम बन्सरी चा'ञि बोज़ान आ'सी
मायायि मोह निशि गयि उदासी हरे राम०

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

सुशो'भ समय क्याह ओस त्यले
जमुनायि ब'ठि ब'ठि गोपाल यले
गोपी ह्यथ फेरान थलि थले — हरे राम०

ऐसा शुभ वेला कब आवे
जब कान्हा बन्सरी बजावे
सन्मुख होके हमको सुनावे — हरे राम०

बहुत गोपियां और श्यामु अकेला
खेलन से लुट लिया मन मेरा
दुनिया मेला आनन्द अकेला — हरे राम०

मनि छुम मेलु हा पननिस यारस
प्रारुस आ'शि मुकाम

वनि म्य' दिन्नाम यथ भवु सरस — वनु कस वनि नो आम
क्षणु क्षणु छ्युन नो तसंदिस कारस — प्रारुस०

बुलबुल मुश्ताक छुय गुल ज़ारस — ज़ांह ति नो तमन्ना द्राम
कालि मा खज़ानु लगि अथ बहारस — प्रारुस०

अ'न्दरी वनि घू वोन्दि मंज़ यारसु — मन्दरस अन्दर च्राम
सौदा म्योंन म्यो'न साहूकारस — प्रारुस०

दुःख छुम पूशुस न ला'निनिस कारस नु तु क्याह लेखनु आम
ती बी वनुहस प्ययि ना पायस — प्रारुस०

युन तु गछुन छुय प्रथ ज़ीव ह्यारस — इनु इनु मुस हो च्राम
सर को'रथय नो इथ संसारस — प्रारुस०

सुय नाव सू'त्य छुम मे नावु तारसु — यमि नाव सांपनुस राम
"वासुदेवु" लयि रोज़ तु'थि दीदारस — प्रारस०

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

यस कुन वुछान गोम यावुन रसुय रसुय
तमी मती लोलु अमृत बों चोवनसंय

तस पाक ज़ातम रांत्य रातस प्रारान छुसुय
तस रोस्त छमनय नेह नेन्द्रु आराम ह्यसय
बुलबुल छु मुश्ताक़ पोशु बागन आशक छुसय तमी०

लाशक छु पानै पांञ्य पानय आशक छुसय ,,
गुल मेलि गुलस शाख बंर्गस बययि मूलसय

अंन्द्री व'न्य वंन्य वन्य' दिन्नाम म्य थानुस'य
पय ह्यथ वोतुस लय गोमुत मकानुस'य
परम प्रोवुक गंयि खसिथ विमान'सय ,,

केंह छिय वुदी ज़न न्यन्द्रे मन्ज़ ख्वाबस'य
केञ्चन वोदय्न मोह न्यंन्द्र थावान नु ह्यस'य
केंह गयि मीलिथ वा'ति अन्तस मुक़ामुस'य ,,

गिन्दने द्रामुत भवुसरस छु ज़ारुस'य
गिन्दान गिन्दान युथ ना डलख शुमारुस'य
स्वर थाव पानस ज़ेरि ज़ब्बर किताबुस'य ,,

सतु सरु तारुन सुयि गारुन प्रथ समुयस'य
वो'न आदि दीवन सत श्रवण कथ पानुसंय ,,

यस निश सु प्रकाश द्राव नो'नुय
तस जानानस ग्यू वो'नुय

हर दमु ओमस लय च्न कर
च्यथ नाम तो'र्गस तय च्न कर
दोर त्राव ब्रोंठ तोत छु वातुनुय तस जानानस०

ओमस तु पानस लय च्न कर
ओम पदु सू'त्य पान सरु च्न कर
ओम रोस्त केंह छुनु लारुनुय ,,

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

हर मो'ख तस गछि लारूनुय
गो'रु मो'ख सुय गछि दारुनुय
सार छुनु सम्सारस यिनुय — तस जानानस०

मंज़ मयिखान गछि मय चोंनुय
पय ह्यथ थानस वातुनुय
जाम छिय भ्यो'न भ्योंन तु मय कुनुय — ,,

ज़ान कर पानस छुस बो' क्याह
ओसुस क्याह तय आस'ह बु क्याह
हाह ज़ान वुशुन तय तुरुनुय — ,,

ह्यकु खय ढुंगु लाय सो'दरस
दुर्दानु अथि ह्यथ बो'ठ च्न खस
युछि कस लालुस लारुनुय — ,,

''वासुदेवु'' सा'क्षी प्राव मनस
न्यत छुसय बों प्रारान दर्शनस
ओंन क्याह ज़ानि ज़ग तय प्रोनुय — ,,

हा ज़ीवु कथु प्यठ मन भ्रमुरोवुथ
च्च कोनु ज़ोनुथ दातु छु दय

अपुज़ मोनुथ तु पो'ज़ राव रोवुथ
पोज़ कोनु मोनुथ सहज़य क्रय
अंदु कनि रुज़िथ मन मंदुछोवुथ — च्च कोनु०

अस्थिर यि सम्सार दोु र कवो ज़ोनुथ
दोुर ओस दयि नाव मो'ठुय सोंरुनुय
दयि सन्ज़ि पयि मन कोनु शमुरोवुथ — च्च कोन०

गोरु ध्यानस प्यठ अभ्यास कोनु थोवुथ
लबु ह्ख परभासु खतुरुक पय
लिबास ममतायि हुंद कोनु त्रोवुथ — ,,

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

विषय भूगन च्यथ कवो लोगुथ
च्येतनु प्रावहख परमय शय
परम भावुक रस कोनु चोवुथ च्य कोनु०

वैरागस प्यठ थ्यत कोनु थोवुथ
मनु किस आ'ईनस च्रलि ही खय
सत भावु ईश्वर कोनु परज़ु नोवुथ "

अगिन्यानस कोनु विवेक थोवुथ
न्यथ प्रावुहख सथ स्वभावय
अक्रय अकुही कोनु मशुरोवुथ "

आनन्द बो'ज़ कोनु व्यस्तार प्रोवुथ
निश्चल बनुहख आनन्दु मय
ओदय आत्मा कोनु प्रज़ुनोवुथ "

सतकुय विच्रार सथ कोनु ज़ोनुथ
गथ प्राव'हख सथ स्वभावय
सन्तोषुक फल मन कोनु ख्योवुथ "

स्वतीज़ु अगन्यानु काठ कोनु ज़ोलुथ
अखण्ड करि ही सिर्यें वो'दय
अन्तः करण कोनु वारु शो'ज़ु रोवुथ "

वेच्रार जलु सूंत्य मन कोनु नोवुथ
अदु लबहख गो'र शब्दुक पय
सथ योगस कोनु अभ्यास थोवुथ "

पांछ प्राण अन्तःकरण कोनु रटनोवुथ
अन्तःकरण वारु शोद्धहा'नय
शमु दमु शब्द्ध भ्रम कोनु प्रज़ नोवुथ "

सो'रूप आत्मुक कोनु प्रज़ु नोवुथ
च्रलि ही यिनुक गछ़नुक भय
मोह न्यन्द्रे मन कोनु वुज़नोवुथ "

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

निष्कल शशिकल ज़ल कोनु चोवुथ
भासि ही नु बोछि त्रेशि कालुन भय
नाशुन कालु अग्न कोनु शमुरोवुथ   च्य कोनु०

बहु रूप माया कोनु मशुरोवुथ
सूक्षमु रूप प्रावुह'ख आनन्दमय
कर्ता कारणन हुंद कोनु ज़ोनुथ   ''

द्वादु शान्तु मण्डल थान कोनु प्रोवुथ
अक्ही वुछ'ह'ख तीज़ोमय
सु तीज़ तीज़स कोनु मिलु नोवुथ   ''

"वासुदेवु" सु विच़ार दो'र कोनु ज़ोनुथ
रोज़ि ही नु संच्यथ पो'प्य पापुय
गो'र ध्यान दीवय सथ कोनु ज़ोनुथ   ''

करसै सो'न पोशन मालु
अज़ इयि लालु सोनये

मय खानुके हा कल वाल   असि मय चव चो'नुये
प्यालतु प्यालु माला मालु   अज़०

तसुंदुय मय तु तसुंदुय प्यालु   तसंदे वान क'ननै आव
खुंबचि कुंज़ तस हवालु   अज़०

दूर्यर तु लो'ब कोताह च़ालु   मूरे नार छुम ललुवोन
शूरे पान कुहि संभाल   अज़०

य'मि लायि लोलु सो'दरस छालु   त'म्य खोर लालि दुरख्शान
सुय रूद आद्य अंतु बहाल   अज़०

तेज़ोमय युस नूरान   विज़ि विज़ि वुज़नावान गोम
करसै शिलु दिल हवालु   अज़०

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

केंह गय रिंदु केंह रिंदानु
केंह गय अन्नित च्यवान प्याल

दाग सुय ह्यत कुनुय गुलालु
नावस तन ता'य रटहन नालु

केंन्नव को_ड मुलक दालु
केह गय बरु ज़न गुलालु

व'लि म्य त'मिसुं दि लोलकि जाम
सुय इयि "वासुदेवनि" साल

केंचव रिंदव ज़ोलुय पान
अज०

बागचि हिय सु छाव्यम ना
अज़०

केंन्नन निशि हावान पान
अज़०

अज़ इयिँ श्याम सों'दर सोन
अज़०

★★ प्रभात आव पोशनूलो वन
सो'न्दर वाणी प्रसन्न करु मन

न्यन्द'र मो त्राव यथ वक्तस
मंगुन यि छुय ति मंग वुजिक्यन

त्रित्या योग द्वापरी कलि योग
अमिस निशु फल बन्यी वुजिक्यन

मंग्यस युस यी दिवान तस ती
गो'ड'न्य बोज़ान तोता भक्तयन

शौंगिथ युस रोज़ि यथ वक्तस
तिमन कति छुय ज़न्मन छ्य्न

करी युस न्यन्दरि वुजिक्यन नाश
बन्यस अदु साधु सम्बन्धन

ग्यवान कसतूर बागन मंज़
दपान श्री राम रघुनन्दन

छु बुलबुल बोलिमंज़ दिथ ताल
दपान ज़ीवन छु वुज़नावन

सत्यायुग ब्यूठमुत तखतस
सो'न्दर०

तुहुंद स्वामी छु सत्या योग
सो'न्दर०

अमिस सू'त्य आसवुन शिवजी
सो'न्दर०

दियस आराम ब्ययि मोह मस
सो'न्दर०

अछिव वुछि आल सिर्युक गाश
सो'न्दर०

करान लीला वनान छी संज़
सो'न्दर०

ग्यवान गोविन्दु ही गोपाल
सो'न्दर०

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

समिथ लगि परनि गोविनद गू
म्य ब्रोंठ बूल पोशनूलन

कुकिल लजि वननि ही शम्भू
सो'न्दर०

पवन स्मरण फिरनि द्रामुत
तवय द्राव सुलि रटन वुजिक्यन

दोहस ओसुस नु अथि आमुत
सो'न्दर०

छि वुजिक्यन दीव लकून मंज़
इयी त्रयु प'छु दि कन वजिक्यन

करान पूजायि वनुन'य मंज
सो'न्दर०

वज़ान सेतार मुरली नय
यि वा'णी छिय वनान दीवंगण

परान शिव शिव शम्भो जय
सो'न्दर०

मंदछ म ईनब च्य बूज़िथ यी
परन प्यस आरु ब्यन्द च्चरणन

शरण गछ परम शिवस च्यय
सो'न्दर०

च्च आलुछ त्राव गछ होशियार
करख रुत भोग स्वर्गन मंज़

बनख धर्मुचि सभायि मो'ख्तार
सो'न्दर०

फो'लनि लजि वोजि संगरमालय
सो'न्दर मन्दर छु क्या ज़ोतन

ज़गत प्रज़लान छु कमि हालय
सो'न्दर०

हतो जीवो इथिस आनस
यि आलुच्च छुय यिमन जंदन

गोमुत छुख न्यन्द्रि अगन्यानस
सो'न्दर०

वुघोगुक जामु ना'ली छं'न
उदय ह्योतुय करुन सिर्यन

सपुन च्चेर फेर होशस कुन
सो'न्दर०

मुच्चर धर्मु लरि कर्मुक बर
प्रेमु सू'त्य अदु कर च्च च्चिन्तन

ज्ञानु प्रकाश गोडु सरु कर
सोंन्दर०

पंच नागु रादु मंज़ कर श्रान
वन्दुन गच्छि कलु गो'र पादन

सतचि म्यच्चि सू'त्य नावुन पान
सो'न्दर०

नवन नदियन वुघोगुक ज़ल
सु ज़ल बा'गरान तिमन नदियन

तिमन आगुर छु मनु यारुबल
सोंन्दर०

मयुक मोफख वन्योमुत गाश
अन्दर हृदयुक मन्दर ज़ोतन

च्यथ वुज़मल सिर्यि प्रकाश
सोंन्दर०

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

गोडु परज़ुनाव आत्मुक दू'प
च्च कर स्मरणायि प्यठ आसन

छु त्रन मंज़ मस्त व्यवहारस
पतिमु पहु रस स्यठाह रुत गो'ण

छु भगवानस यि ज्युठ सन्तान
छु यिथ पाठि कृष्ण जू तु अर्जन

यिमव अभ्यास को'र अथ प्यठ
तिमन छुय दय वनान सतज़न

न्यन्दर ज़ीवस छि ब'ड समहार
फरान छिस चूर छिस मोहन

स्वपनस मंज़ बनान न'व राह
हुशियार यलि गव बन्योव निर्धन

यिथय पाठि समय अख स्वपनाह
अज्युक मा बनि पगाह सुबहन

छि हत ब'दि रंग दोहस वदलान
अपुज़ करि क'रि ॰ रान जंदन

शोंगिथ युस रोजि दुप'हरस ताव्य
सु छुय चंडाल बन्य मा ब्रह्मण

यि ब्रह्मण ज़न्म सुलि सो'रिजे
बनी छ्यन अदु अपराधन

उदय कोंर सिंयि भगवानन
गंदर्म लूकन गछ्थि गिंदन

छु ज़ीवस जन्मु मंज़ु व्यस्तार
करन सेव पादुनय सन्तन

मुर्ख युस आसि ख्ययु ज्यादहन
सु किथु प'ठि वोथि प्रभातु समयन

स्तोगुण सू'त्य रोज़ निर्लीफ
सो'न्दर०

छु बोज़ान मंज़ पतिमु प'हरस
सो'न्दर०

असुन्द सांरी छि पो'ज़ बोज़न
सो'न्दर०

रटीय यन्द्रे तिमव ख्यत च्यत
सो'न्दर०

करान छस कारुनिशु बेकार
सोंन्दर०

छि लक्षमी दायि इस्तादाह
सोंन्दर०

सु रातुक जशन अज़ बनि मा
सोंन्दर०

छि असि मूर्ख मा क्येह ज़ानान
सोंन्दर०

वनान छि तस स्यठाह कर्मवान
सो'न्दर०

मरनु ब्रोंठुय ज़िन्दय मरिजें
सो'न्दर०

गछ्क मोह मायायि अर्पण
सोंन्दर०

दियस अदु भवुसरस मंज़ तार
सो'न्दर०

न्यन्द्रे मंज़ प्ययि पोंश ह्युव ज़न
सोंन्दर०

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

करुन अभ्यास सुलि वोथनस
अभ्यासी बनि आनन्दु गण

बेह्यसुय रोज़ि व्यवहारस
सों'न्दर०

छि भक्ती रात्रो दुह्नु
तवय घवु बनि म्य ज़न्मन छ्यन

म्य ग'छ रोज़न्य सतुचयु स्मरण
सोंन्दर०

हतो मनु पोशनूलो बोज़
सदा गोविन्द गोवर्धन

रटिथ मन हा'रि गोशस रोज़
सों'न्दर०

★ स्व० श्री वासुदेव जी के बारे में यह मालूम नहीं, कि उनका जन्म कब हुआ और वह कब स्वर्गवास हुए। हां; कथन है कि आप मागाम गांव (बीरवाह) के वासी थे और प्रकाशराम से पहले हो गुज़रे थे।

★★यह भजन निश्चित रूप से कहा नहीं जा सकता कि वासुदेव जी का ही है।

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

प्रकाश राम

प्रकाश राम कुरीगाम (अनन्तनाग) के रहने वाले थे। भक्त कवियों में आप राम भक्त हैं, और इसी भक्ति के कारण आपको काश्मीरी रामायण की रचना की प्रेरणा मिली। आप का रामायण काश्मीरी भाषा का पहला महा काव्य है। आपने "लव-कुश चरित" को इस पुस्तक में शामिल करके इसे और भी रोचक बना दिया है। प्रकाश रामायण को काश्मीरी पंडितों में काफी ख्याती प्राप्त है, इसके भजन घर घर गाये जाते थे।

2. प्रकाश राम की कविता की खास बात इसकी सरल परन्तु शुद्ध भाषा है। दूसरे कवियों की अपेक्षा आपने अपनी कविता को संस्कृत और फ़ार्सी के बोझ तले दबाने की चेष्टा नहीं की है। आपके रामायण में सम्मिलित कुछ भजन वासुदेवजी के भी हैं।

3. प्रकाशराम ने "अकु नन्दुन" भी लिखा था, परन्तु आजकल यह कहीं भी हाथ नहीं आता। आपकी ख्याति और नाम रामायण से ही कायम हैं।

4. काश्मीरी में कुल मिलाकर पांच रामायण लिखे गये हैं, परन्तु प्रकाशराम का रामायण ही सबसे अधिक प्रसिद्ध हैं। दूसरे चार रामायण उपलब्द्ध नहीं। इनकी पांडु लिपियां इधर उधर घरों में मौजूद हैं। प्रकाशराम के रामायण की विशेष बात इसका मुकामी रंग है।

5. प्रकाशराम का जन्म 1819 ई० में कुरीगाम में हुआ था, और वहीं वह 1885 ई० के आस पास परमात्मा को प्यारे हो गये।

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

आव बहार बोल बुलबुलो
सोन वलो भर्‌यो शा'दी

द्राव कठ को'श ग्र_ज़ु पान छलो
ज़र' क्यथो वुंद्‌ की दा'दी
वुज़ु न्यन्दरे वुनि छ्य सुलो   सोन वलो०

काव कुम्युंर बियि पोश नूलो
आव नालन ज़न' फर्यादी
भाव दर्दुक ग़मु गोसु गलो   ,,

नाव ही तन नेर सोंम्बुलो
ज़ेरि ज़बान खत आज़ादी
प्याल ह्यथ छ्य यम्बरज़लो   ,,

हाव दर्शुन असि ने'र्मलो
म्य छि गा'मति लोलन ला'दी
शीशह करान छुय कलकलो   ,,

सोन्त आवतय नभ गव खु'लो
बुतरांत्र प्यठ ज़ोल फसादी
टेक' बटनि त वीरि क्यम फोलो   ,,

नाव तन मन त्राव ज़लज़लो
द्राव सुहुल पान कमि नागु रा'दी
खसु पर्बत वसू तुलमुलो   ,,

छ़ाव अछ़' पोश लछ नावि गुलो
कर_खबर तु वुछ म्यत्रि दांदी
हाव "प्रकाश" गाश हो फो'लो   ,,

---0---

वन्दयो मो'ज्र ब' पादन
छ़ारयो रामुं रादन

विन्नार ना'गि वति लारय
नुनर'कि तारु प्रारय
ब्रह्मसर किञ दिमै कन   छ़ारयो०

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

अछिन हुन्दु गाश म्योनुय
खो'श इवुन नुंदबोनय
का'लि राव्यमु हिये तन ... छारयो०

कशु तीर लोयुथ म्य
लशि छम नारंज रेह
अशि फ्यर्यन ह'रिम तन ... ,,

महालिश किञ इमा'यो
हरुमो'ख वञि दिमा'यो
हंसद्वार गछित रटय वन ... ,,

च़्र रूदहम कथ शाये
क्रैंकु नदी वो'ठ ब लाये
गंगबलु युन छु आदन ... ,,

गोसु नो केंह म्य चोनुय
दयनु यलि बानु ज़ोनुय
चार नो ला'नि वादन ... ,,

च़्र ज़ि गोख म्य निशि दूर
इज़ि त्यलि यलि गछ्यमु सूर
वुज़ि पोञ नागु रादन ... ,,

नाव तन त्राव कीन्ह
भाव सीर दो'द म्य सीनय
हाव मोंख थाव लादन ... ,,

बरञिबलु युथ नु राव'य
रामु रामु क्रख बु त्राव'य
आलव दिज़्यमु नादन ... ,,

नेत्रनु मंज़ रटै पाद
बुथि शेरि किञ दिमय नाद
मरयो वो'त्र छु आदन ... ,,

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

नाराणनाग॒ प्रार'य
वांगत॒ जाय छार'य
प्रारै सू'त्य साधन छारथो०

सिर्यस॒ छु गाश चोनुय
तस छु "प्रकाश" चोनुय
सोय छै योग साधन॒ "

बारंग॒ बेरंग॒ छु पानय
इम॒ रंग ह्य ब॒ नो ज़ानय

"जीम" कजि ज़ुल्फे ग्राये
तशदीद था'वनम छ़ाये
हजि स'तरह लेखन आये इम रंग०

यख शीन गौंल ताप॒ रंगय॒
आब तति द्राव रंग॒ रंगै
कैंह मूध कैंह रूध संगय "

मज़हब त॒ मिल्लते मुकाम
दीन तय दुनिया बदनाम
तमि तोर स छु बेनाम़ "

बुछुम आईनस कुनुई
इ कुञ्य'र गव कोर कुनुई
ई छायि ती छुम नो'नुइ "

"प्रकाशि" वो'ल जाम वजूद
वजूद अन्दरै छु मौजूद
मौजूद अज़ राहि नाबूद
इम रंग ह्य ब नो ज़ानय

को'शल्लियाइ हन्दि॒ गो'बरो
करयो गूरह॒ गूरह॒
परयो राम॒ राम॒, करयो गूरह॒ गूरह॒

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

कोंतू गोहमु च्न_त्राविथ
कंसू ह्यकु हाल भा'विथ
अनी कुस मनुह_नाविथ करयो०

लगयो पो'त छायि
ही कंरथस बो हायि
नारस वो'ठ बो_लायि ''

कनन छ्य कनु वाजे
श्री कृष्णु महाराजे
जगतुक छुक च्न_राजे ''

फेरहै अन्दि अन्दी
लागै पोशु गो'न्दी
साम चा'ञ सो'नु सन्दी ''

लोल चोनुइ वोन्य म्य आमो
छारयो शहरु गामो
बेंयि गोंछहम च्न रामो ''

नेरहा' बाज़ा'री
ह्यडनम् लूक सा'री
पादन लगय बु_पा'री ''

नेरयो ह्यरि पती
लागयो कारिपती
तारि दिल गोम यती ''

म्य दुप्यो रामु राजे
खोंश ओय नु वोरु माजे
आदनकि सीरु बाजे ''

म्य कुमू शाफ़ आ'सी
तिम तिनी कांसि कांसी
च्न गोहम वनवासी ''

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

च्य़ पा'रिथम बुर्जुह जामय़
ब़ छारथ गाम़ गामय़
परयो राम़ रामय़ करयो०

लोलि मंज़ ललनावथ
जिगरस मंज़ ब़ सावथ
वोज़ ति नो कांसि हावथ ,,

नेरयो शाम़ लटे
बार मयांज़ छिय च्य़ मटे
गाशऱ लाल त्रटे ,,

दूरय़् नो ब़ च़ाल़
कुसू क'रथस ह्वाल़
ला'जिथस मायायि ज़ाल़ ,,

अछन हुन्द गाश को'त गोम
सिर्य "प्रकाश" को'त गोम
कैंहति छम ऩ आश कोंत गोम ,,



मशरित़ मोल मा'ज नशरित च्य़ सा'री
राम़ जुव़ लगय पा'र पा'रिये

मछ़_रूप़ यलि आख क्रम़ अवता'री
अमृत ज़ल़ सपन्य़ जा'रिये
बुत़ रात खा'रथन वराह अवता'री राम जुव०

हरणाकश्यप क्या ओस बड़ अहंका'री
प्रह्लाद करनि लो'ग ज़ा'रिये
नऱ_सिंह दा'रिथ च़्नय निराका'री ,,

बलि_दानवस आख वाम'ऩ अवता'री
बुत़ रा'च़्न तल गव सु ख्वा'रिये
वोत पथ चा'ञी च़्नोवापा'री ,,

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

धार गव राम यलि आख अवता'री
खा'ली सपन्य् तीर् ना'रिये
त'म्य तीरह सू'त्य कत्य क्षतरी मा'री ,,

च्रय छुक चुतरबोज़ चंराच्र'री
च्रय छुक आसवुन सा'रिये
च्रय आखं काम्दीव राम् अवता'री राम जुव०

कृष्ण रूप् यलि आख परउपका'री
गोकुल्कि मो'क्त गय सा'रिये
कंसासुर सपुन्न समहा'री ,,

नेन्दर लाजिथ बुद्ध अवतारी
कलि युगकि गुछ्न गिरफ्ता'रिये
दर्शन करञि इन देवता सा'री ,,

गार्धीर धा'रिथ च्रराच्र'री
सा'री सपन्य समहा'रिये
मोकलावुहक तिम नर्कनि ना'री ,,

दिमह'य लाल् फल ख्यञि च्रा'रि च्रारी
गंडह'य जाम् ज़रका'रिये
वन्दह'य जुव कास्तम लाचा'री ,,

मनि गाल राक्षस त् च्रलि दे'वह् ख्वारी
सीनह ज़ोल त'म्य लोल् ना'रिये
''प्रकाशह'' गाश अन् च्रो'वापा'री ,,

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

सद्वोपदेश

कबीरा कलयुग कठिन है, साधु न माने कोय
कामी क्रोधी मसखरा, तिनका आदर होय

रात गंवाई सोय कर, दिवस गंवायो खाय
हीरा जन्म अमोल था, कौडी बदले जाय

बहता पानी निर्मला, पडा गन्दला होय
साधु रमता भला, दाग न लागे कोय

भजन करन को आलसी, भोजन को होशियार
तुलसी ऐसे पतित को, बार बार धिक्कार

तुलसी मन तो एक है, चाहे जहां लगाय
चाहे हरि की भक्ति कर, चाहे विषय कमाय

दुख में सुमरिन सब करे, सुख में करे न कोय
जो सुख में सुमरिन करे, तो दुःख काहे को होय

———

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

परमानन्द

नन्दराम परमानन्द का जन्म 1794 (२७६४) ई० को सीर कानिलगोंड नामी गांव में हुआ था। आपने प्रारम्भ की शिक्षा अपने पिता पं० कृष्ण पंडित से प्राप्त की। बाद में आपने उर्दू, फार्सी और संस्कृत का भी पठन-पाठन किया। अपने पिता के प्राणान्त के उपरान्त आपने उन्हीं का पेशा पटवारी का काम ज़िम्मे लिया। परन्तु कुछ समय गुज़रने के बाद आपने पटवारी का काम त्याग दिया और साधना और भक्ति मार्ग की ओर बढ चले। पहले पहले आपने फार्सी में कविता कहनी शुरू की, और "ग़रीब" की उपाधि रखी। उनकी फार्सी कविताऐं उपलब्ध नहीं हैं।

२. परमानन्द की कविताऐं आत्मज्ञान का बहुत बड़ा स्रोत हैं, और वैखरी का सागर। आपकी कविताओं का एक एक शब्द मानी का द्योतक है। एक कवि की हसियत में उनका स्तर बहुत ऊंचा है। उनके भजनों में देवमाला और योग अभ्यास की भाषा उनके गहरे पठन - पाठन और अनुभव का भास देते हैं। काश्मीरी भाषा के भक्त कवियों ने उनसे बहुत बड़ा असर गृहण किया है और उनके मार्गदर्शन पर ही चल पड़े हैं। वस्तुतः परमानन्द कृष्ण भक्त हैं, परन्तु वह भगवान के हर स्वरूप और हर रंग के गुण गाते हैं। काश्मीरी में परमानन्द नज़म के बानी-कारों में से हैं। "राधा स्वयंबर" और "सुदाम़ चरित्र" उनकी कृष्ण भक्ति के सुन्दर नमूने हैं। यह बात याद रखने योग्य है कि "राधा स्वयंबर" का कुछ भाग उनके चाहिते शिष्य पं० लक्षमण राज़दान का लिखा हुआ है। परमानन्द मधुर भाव के कवि हैं। "अमरनाथ यात्रा", "कर्म भूमिका" "कल त़ छाये" आपकी प्रख्यात नज़में हैं। उनकी कृतियां भोग अभ्यास के अनुभव का महकता चमन हैं। उनकी रचनाओं में देहाती भाषा का बोल बाला है।

३. परमानन्द की कविताओं का अंग्रेज़ी अनुवाद मास्टर जिन्द कौल ने बहुत पहले अपनी व्याख्या के साथ तीन भागों में प्रकाशित किया है। "ज्ञान प्रकाश" नामी पुस्तक में शामिल भजन अधिकतर परमानन्दजी ही के हैं। उनकी सारी कृतियां दो भागों में फार्सी लिपि में जम्मू काश्मीर कलचरल अकादमी ने छापी भी हैं।

४. परमानन्द के शिष्यों में मटन (अनन्तनाग) के सालेह गनाई नामक पुरुष का नाम भुलाया नहीं जा सकता। पटवारी का पेशा त्यागने के पश्चात जब परमानन्दजी मटन के बासी बने तो सालेह गनाई ने उनको 17 (२७) कनाल की भूमि दान

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

में-दे दी, जो आज भी उनके वारिसों के पास है। सालेह गनाई परमानन्द जी के गृहस्थ का भार भी संभाले हुए थे। और उनके स्वर्गवास होने के बाद गनाई साहब, परमानन्दजी के श्राद्ध बड़ी श्रधा और शान के साथ किया करते थे।

5. परमानन्द का देहान्त 1879 (२८७६) ई० में हुआ। आपके नाम पर मटन में एक इनस्टिचूट की स्थापना की गई है।

श्री गणेश अस्तुती

नायक शिव राज़ञि दायको, विनायको जय जय जय

अस्तोत चा'ञि मा वनिथ ह्यको, कथनुय म्यान्यन न्न कन दार
ओंश म्योन मोख्त् च्य पादन छ्को विनायको०

पाफ म्या'ञि तौलनै नु सास हायको,
सोरन नु कल्पन ति ब'डि अंबार
वाठ क्या छु घाठ कति वा'तिथ ह्यको विनायको०

गरि गरि ज़न्मुक गोम अरन्नको,
क्या कर मरनस ति छुम नो वार
अर्ज़न्ग कुन्द गोम फलु कमि मको विनायको०

नित्य नियमु आ'सिय युथ चोन दको
युथ नावि दियि हमस'य हां'ज़ तार
नतु गछि मुर्खस बेह्यन दुको विनायको०

असुवनि मोंख खसुवनि अरुको
विज़ि वु सात विज़ि गछु बेदार
पम्पोश लागय पूज़ि चम्पको विनायको०

माजि हंदि टाठि राज़य ज़नकी
गणेश नावस च्येय आधिकार
म्य निश न्न ति सार सनकादिको विनायको०

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

जटि यस गंगा हटि वासको
मटि प्यठ भ्रशबस तु भस्म आकार
तस छुख टेठ च्चय त्रिय बासको विनायको०

सम्सार् यच्च छुम ख्योमुत दको
बुजरस कांह छुमन् मुहिमुक यार
सूरम म्य आय च्चार मन्ट्यव तु त्रको विनायको०

ओसुम म्य पापन कोंरमुत ठको
शापन नखु वाजिम नु अख हार
पापव सू'त्यन गोम दु टको विनायको०

वासनायि तीरन हन्दि बु पाहको
हल बोज़नय गोम फलहार
मनु मा कांसि ति वुनि छुम शको विनायको०

'परमानन्द' छुस ब चोन याच्चको
सो वोन्दु करवुन नमस्कार
मानसु वाचक ब्ययि कायको विनायको०

गुरुस्तु ति

शोंभ मो'ख हाव म्यति अमृत चावतम
सलोंर् हावतं घटि मंज़ गाश

गो'डु सलोंरु सुंद ध्यान सो'र नावतम
दमु दमु वदु च्यय कुन नमहा
रात ध्यन अख क्षण छ्यनु मतु थावतम

जन्मस इथ कर्म खुरि सम्भालतम
मतु दिशिरावतम साधन मंज़
मन चे कलि इन्द्रिएय चूर पावतम

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

दह शोमरविथ मद हो'स्त पावतं
काहन हावतं कुजिय वथ
सोऽहं शब्द निशि म्यो'न मत् थावतं

शिशरम नाग् सर् तन नावनावतं
मत् वुछत म्य'जिस कुकर्मस कुन
मोहजे सिंधि म्यति अपोर तारतं

क्षण् क्षण् पननुय ध्यान धारनावतं
सोरनावतं ती यी पज़िहे
कामदेव_श्याम सुन्दर् लट् मत् दावतं

विश्वंभर् पननुय शुभ मो'ख हावतम
रोज़तं तु भावहाय पननुय हाल
मशरोवमुत नाव च्यतस पावतं

वनमाल धा'रिथ दर्शुन हावतं
हावतं पननुय प्रकाश रूप
दोह गोम लूसिथ मत् प्रारनावतं

अमर पानो भ्रम संसार छुय
आदि दीव बननुक च्य आधिकार छुय
हारव रोस्तुय भव सर् तार छुय
सत व्यचार सत व्यचार

आदि अन्त शब्दन मंज़ ओमकार छुय
ज़प् न'य मंज़ अज़पा ज़प सार छुय
ध्यान् मंज़् आत्मुक ध्यान शूमिदार छुय
धारणायि दार धारणायि दार

ब्रोंठ पथ प्रांरब्धुक व्यवहार छुय
पथ ब्रोंठ नेरनस फेरनस नु वार छुय
भा'य बन्ध बब माजि कुस च्य दरकार छुय

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

च्यथ कर यार   च्यथ कर यार
कर च़्न_हितकार   कर च़्न_हतकार

पराधीन मुर्ख बोज़ हुंद लोंकचार छुय
यावनस मंज़ कामुक अन्धकार छुय
बुजिरस न ह्यकनुक संकल्प भार-छुय
कर च़्न_पुरुषकार   कर च़्न पुरुषकार

गोड श्रवनी बोज़नि दरकार छुय
तव पत अद मननुक आधिकार छुय
निदध्यासन कर तोर तैय्यार छुय
साक्षातकार   साक्षातकार

मोह स्यंधि सुमि कनि इन्द्रेयद्वार छुय
यिम पार ग'यि तिम दिशि अवतार छिय
द'ह शमराव द'ह खदमत्गार छिय
कर दशहार   कर दशहार

अथि आमुत भक्ति हुंद मुख्ताहार छुय
पानस नालि छ'ननुक इख्तियार छुय
कुस मना करान छुय कसुन्द आंकार छुय
छुख च़्न मो'ख्तार   छुख च़्न मो'ख्तार

हार ब'र लारी न सू'त्य योद खार छ्य
आ'स वह्रारा'विथ नफसि अमार छुय
प्रारब्ध फल सूरिथ पत लार छ्य
ग्रट अनवार   ग्रट अनवार

कमिस कारबार छुय कुस बेकार छुय
नाहक देह द्रष्टी हुंद अन्धकार छुय
मन ज़ेन वेदचि ज़्यवि इकरार छुय
साहिबकार   साहिबकार

तीव्र वैरागुक खास सब्ज़ार छुय
शेव शेव बोलान पान आबशार छुय
बेहखै लाग रोस्त वुछनस वार छुय
शांत शालमार   शांत शालमार

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

शक्ति पातुक शहरुक सुबदार छुय
धर्म अर्थ काम मूक्ष घुन इख्तियार छुय
योहय सरकार छुय योहय सरकार छुय
कर च्न दरबार कर च्न दरबार

"परमानन्द" नाव प्योमुत दुनियादार छुय
लूकन हुंद छूव च्यति व्यवहार छुय
दिव वुन सु पानय त्रिभवन सार छुय
सर्व आधिकार सर्व आधिकार

गोकुल हृदय म्योन तति चोन गूर्य वान्
च्यथ विमर्श दीप्तिमान् भगवानो

वृन्न म्यानि गूपीय च्यय पत् लारान
बन्सरी नाद् वाद् मतानो
न'शरिथ ह्मस त् होश मंशरित पर त् पान च्यथ०

अथ् वास च्यय सूंत्य रास आस् खेलान्
व्यास नारुद ति तति आसानो
दास् भाव् राधा कृष्ण् कृष्ण् ज़पान

देवी त् दीवता सेव च्यय करान
भवसर् तव तार लभानो
ग्यवान रिवान ज्ञव छखन् लोसान ,,

असवुनि कोसम मोख चानि फो'लान
कोस्तौब नज़ि आसि शेहलानो
कोस्तोब त्रटि त् माल् आसहोय प'रान ,,

माययि सूं'त्यन च्न शायि शायि आसान
कायायि मंज़ म्योंन न् रोज़ानो
सिर्यिकि आसन् छाया छ्य भासान ,,

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

आकाशु मो'ख छुख आकाश भासानु
तत सत प्रकाश आसानो
देवन हंदि देव प्रा'णियन हंदि प्राणु — च्यथ०

युस युथ सो'री तस त्युथ छुक हावान
मो'ख हाव म्यति श्री नाराणो
प्रारनुचि फुरसत छमनु रूजमच दानु — च्यथ०

युस यी यछ़ितय ती छुय प्रावन
कर्म_फलु दातु च्य वखनानो
ह्योन ह्योन पनुनुय लूक लूकन बहानु — ,,

क्षमा मूर्खस गा'टलि छि करान
गाटु छुखनु तवु सू'त्य प्यवानो
पाठ पूज़ायि कनि मूर्खस यी ज़ान — ,,

तगिहेम तु ज़गि मंज़ आसुहा थ्यकानु
वनु कस कां'सि छुमनु व्यपानो
कुञरुच कथ छ्य सञरस श्रपान — ,,

सिर्यि चंन्द्रम रोस्त जग छा प्रज़लान
भगवानु रोस्त प्राण अप्रमाणो
लागुहस नित्य नियम रोज़िहम सन्निधानु — ,,

दास छिय अ'सि च'अ कोनु छुख मानान
ल'गिज़िनु पनुन्यन बेगानो
शरम छ्य ना छिय शरण ईवानु — ,,

वनुन'चि जाय छमनु वनुन कव ज़ान
सननचि कथ छा ब्याख आसानो
बनि यस यि पानस सु व'निथ नु ज़ानान — ,,

बाकि बाकि बदनस ति वाख छिमनु फोरानु
साक्ष छुनु अनु ह्यंत आसानो
चाक गा'म जिगरस तु आख छिमनु बलानु — ,,

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

छुसनु डेंशान बो देशु देशु छ़ारान
प्रारान छुसस छुमनु ईवानो
प'दि लूसिम'ति व'दि व'दि च़ड़ि भरानु   च्यथ०

अंत छुन भगवत मायायि आसान
आयायि तति कू'त्य छ़ारानो
छा'रिथ तु गा'रिथ लबिथ त रावान   च्यथ०

गिंदनस रंगु रंगु तंग छिनु ईवान
मंगुह'य बौंति श्री नाराणो
हंगु तय मंगु रोज़तम संतोष्यनु   ''

हे कृष्णु पाप साञि च्य छुख डेंशान
शाप कास असि अ'सिछि नादनो
क्षमा कर यवु पायस छि प्यवान   ''

भगवत मायायि कांह छुनु ज़ानान
तस त्युथ छु युस युथ छु मानानो
मानु अवमानु रोस्त च़'ति मान बुति मानु   ''

युस न ज़ाव कां'सि तय कांह छुसनु ज़्यवान
ज़ीव आनु आनु यस छि ज़पानो
ज़ानि सु सोरुय तु ज़ानि तस कांछ़ न   ''

ब्रह्मा ति छुनु च़ोर वीद ह्यत पोशान
तोतनस यूत तस पज़ानो
शेष नाग सासि ज़्यवि सू'त्य को'ल गछ़ानु   ''

युस जि यूत मंगि तस सुय त्यूत प्रावानु
दय नज़ि मनि कुनि आसानो
बो' च्यय अर्पण तु च़्यय म्योन आसानु   ''

धनु ध्यार पतव त्रा'विथ छि गछ़ानु
भाग्यवान तिम यिमन न आसानो
सन्तोष वृत दिम छिम तिम नव निधान   ''

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

सन्तोष वृत दिम छिम तिम नव निधान
तृप्त कर म्य सत स्वरुप ज्ञानो हो
यथावत युथ बों आसहथ वुछान् च्यथ०

दयायि सू'त्य ओस भगवान वनान्
आर्तिस बो'डिस तार तारानो
करुणा करनावि अपोर तारान् च्यथ०

युस कुंह न तस रुस्त ज़गि मंज़ आसान्
पान् वननस त पान् बोज़ानो ,,
सोरुय छु करुवुन पानय आसान्

अमृत-मय वाणियि सू'त्य वनान
वनि यिनके मोंख़् चे'वानो ,,
अ'स्य् अ'स्य् अ'स्य् ति सुय सुय अ'स्य ति आसान्

"परमानन्द" परम् आनन्द छु प्रावान
सूरमुत हनि हनि अरमानो ,,
राधा माता त् बब कृष्ण् भगवान्

आरस मंज़ अचंवा'य
विगिन्ये ज़न नच्नांवा'य

लागोस पोश पूज़े
वोंपरस कस पच्ना'वा'य
कृष्ण् ज्योंव न्यन्द्रे वुज़े
विगिन्ये ज़न्०

ला'जिह'स तन तने
कमव प्रेमव हच्ना'वा'य
शेहल्यायि हनि हने
विगिन्ये ज़न्०

अशि कनि मो'ख्त् हारन
तूलि तूलि ज़न रच्ना'वा'य
छि लादय्न मो'ख्त हारन
विगिन्ये ज़न्०

ह्यतिहस पाद शेरे
खबर क्याह छम कच्नांवा'य
कृष्णस स्तेह ज़ि फेरे
विगिन्ये ज़न्०

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

पोंपुर यथ शमुहस पथ नच्नन क्याह छुय करान गथ
मतिस पथ कर मच्नांवा'य विगिन्ये ज़नु०

यछ्न न'ब ज़िन्दगिये
छिं लजिमच्न बन्दगिये
लबिक प्राण मूम'न्नवाय विगिन्येजन

वनस मंज़ ननु वारे सो'रन तिम कृष्णु प्यारे.
कंन्यव तापव तच्नांवा'य विगिन्ये ज़नु०

यि पद क्याह छुय वनुन क्रूठ सु "परमानन्द" कमी ड्यूंठ
वुछिथ वोंनमुत यचां'वा'य विगिन्ये ज़नु०

केशव छति कीशु मतु द'शिरावतम
हावतम पननी ईश्वर गथ

आय आम सोरान तु पायस पावतम
बलु रोस्ति काये नतु पलज्ञम कथ
बुजरिस डलव मा तु अथु रटुनावतम हावतम०

अदंकनि लोबुम नतु मतु मन्दछावतम
अंधकारु रोस्त क्या पलज़ुम ज्ञथ
ज़न्मकि घटु कार वो'ठ मतु द्यावतम ''

यावुन सोरय्म फिरुन मत थावतम
ज्ञनु सो'रनु क्याह म्य अरज़ुम ज्ञथ
यवु लुख असनम न तवु मो'कलावतम ''

छुम खसुन कोह मतु दोह लोसुनावतम,
खसु कोर वसु कोर ब्रोंह तय पथ
रसह रसह पननी व'ति पकुनावतम ''

प्रात; कालुस मंज़ मतु सावतम
मतु रावुरावतम मंदन्य'न वथ
शामु लटि कामु दीवु घटु गाशुरावतम ''

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

रामु नामु लंकायि डास करनावतम
रावण्य पांवनम न्यन्द्रे च्यथ

कोम्भ करनसु ज़ुन न्यन्द्रे वुज़ुनावतम हावतम०

सरु करनुकि सरु तन मन नावतम,
अरु सरु कास्तम तु छम चाज़ि सथ
मरु मरु ज़्नलि ह्यम तु घरि मतु रावतम हावतम०

मोह मायायि हुंद मस मतु चावतम,
सूहम शब्दस रछतम च्यथ
कथ बूज़िथ पतु ब्रोंठ बुछनावतम ''

''परमानन्द'' वारु वांर फोलनावतम
वार बोलनावतम सहज़चि कथ
छुख पांनि पानु लुकु मोख मतु छावतम ''

पांञ्छ त्रिय भागलिस क़रारदादस
वादस ज़्यादु नज़ि कम
फ़िकिरि हन्दि टोंगु मनकिस नागुरादस
ज़िकरि नेरि आबि ज़म ज़म
शीरिन पत गो'ल पान फरहादस,
वादुस ज़्यादु नज़ि कम

करखय गोंगुल नव आबादस
प्रानि हांचि तुलनय न नम
खों'द आबाद कर मो प्रार क़ादस वादस०

कमवित करिज़ि होश दिशि फसादस
ऋषि अमि रंशि निशि च्नम
कंमलियो कमवित बातख स्वादस ''

च्नख त्रा'विथ च्न त्राव कमादस
नयि मंज़ लबख ज़ीरो बम

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

तुल कदम सो'म पख वातख मुरादस ॥ ''

गा'लिथ गरिज़ि फ़ाल किबरि फौलादस
सबर् हालि ज़ोर ज़ोर दम
मोखारं शाह वात खार् औस्तादस वादस०

म्य दुप्याव वहाब वात्यम दादस
करिहेम छोकन मरहम
यस दिन तस यिन तोरय नादस ''

दिमु क्याह जवाब क'रि म'तिस वादस
लोसुन दोह ह्योतनम
गच्छि मय बख्शिथ वछ्म न् अपराधस ''

दिल साफी छ्य मरदि आज़ादस
"नन्दस" छि बन्दगी कम
फ़रियादरस वात फरियादस ''

प्रेमु पोश लाग शेरि त'संज़े
वेरि करुवा'य रोवये

होश बुलबुल प्राणु पोशनूल
ध्यानुकुल च़ाव फोंलनुस
प्रारवुन रोज़ खबरि तसंज़े वेरि

भाव बोंबुर द्राव गोशस
पोशु बागस च़ाव मंज़
करनि गूं गूं तसंज़ि वेरे ''

समिवी सखियव अस्तु अस्तय
तमिस लागव भावु पोश
यस नन्दलाल नाव प्यवये ''

शशिकल प्रावक अदु चाव
ज़ाव अमृत द्राव नो'न
श्यामु सोंदरुन दामु च्यवये वेरि

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

आव सोंत तंय छाव अछिपोश
च्राव बुलबुल बागनय
त्राव मोह जंद् वंद् कुन्ये — वेरि०

नोंन सु वुछ्त् जानावारय
मोक्तु हारय आव ह्यथ
जीव डालु दित द्राव व'रिये — ,,

ह्यछत् करत् चार् पननुय
ध्यान धारनायि दार ध्यान
जान प्राण मा छु मुर्ख प्रवये — ,,

★श्री अमर नाथ जी यात्रा लीला

मन्त्र पर शीवय शम्भू — मन स्थिर कर पूज़ुन प्रभू

दीहि गुफि सत च्यत आनन्द लिंग
मन पीटस प्यठ ब्यूठ निसंग
लुख दपितनस कैलास् श्रोंग — मन स्थिर०

कन थाव सरस्वती छ्य वनुन
वंनि व'नि पान छुय ना सनुन
नाम् रूप् वो'न भ्योंन भ्योन ननुन — ,,

त्राहि माम पर यात्रा च्र कर
ह्रमुख पननुय पान च्र वंर
गो'फ पननी गो'फ छ्य बराबर — ,,

लीला छ्य अमरनाथ ची
दीह दार् सान एकांत ची
शम् दम गो'फ प्रशांतची — मन स्थिर०

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

गोडु गणपतयारुक गणीश
दूर मा ज्ञान रुज़िथ छु नीश
मूलाधार दारुक महीश — मनस्थिर०

ब्रह्मा सु युस सृष्टि करतार
स्वादिषठानु शुराह यार
शटु डलु शश मो'ख जन कुमार — ,,

शिव पोरि फेरि कुंडलिने
फेरवुन प्राण तति ज़लु कने
सथ समन्दर सनि वोगुने — ,,

अष्ट डल द्राव पम्पोशु डल
तोर फेर योकुन मो च्र डल
वेचारु वुछ्तु समसारु डल — ,,

ह्योर ह्योर पख न्यूर न्यूर च्रु वात
दूर प्योमुत छुख कवु वुशात
गथ प्रावनचि बोज़ कथ तु बात — ,,

तीर्थु रोस्त मा कुनि कांह पोंदा
वीदन ति ओमकार वो'न पदा
जीवन मुक्त सु परमात्मा — ,,

नाभि वीशु दशि डल संगमस
च्रावं यम लूकु सत्संगमस
कृष्ण थावर ज़गंमस — ,,

अं'दि अंदि फेर च्रकु दरसय
प्रदिक्षण कर च्र मन्दुरसय
दीव पूज़ श्याम सो'न्दुरसय — मन स्थिर०

मन्दर मुछ्तु वुछ्तु च्रन्दर यार
सांपनी तति हरि च्रन्दुरु यार
विजेश्वरी ज़न्म ज़न्म पार — ,,

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

कजि त्रा'विथ वात थजि वोर
लजि तति शेवु जटा चोपोर
अनाहितु मंडलस थाव च्र खर — मन स्थिर०

छ्यफ छ्रोंन्द ह्यथ वात च्रोंन्दुबल
विशोध च्रक्रचि ईव थल
दीवु पूज़ि ज़ीवय पाद छल — ,,

मन्ज़ वात खिलु नस तु खेलनस
पानय पानस मेल नस
तील जन तेलस तेलनस — ,,

वातुखय च्र वति वति वीरसुरन
तति छ्रिनु वातान वीर सिरन
वर्ज़ु वाव सू'त्य बलु वीर इरुन — ,,

मनु निशि दूर कर भयु विक्षीफ
नाविथ गणेशस सोर लीफ
च्रल नतु यी गोय रल दीफ — ,,

पुशुराव पान परमीश्वरस
प्रदिक्षण कर तथ मन्दिरस
वातिथ रोज़ मामलीश्वरस — ,,

भरगु तीर्थ प्यठ छुय स्वर्गय द्वार
दिरगु निशु मुच्रिथ मो च्रु प्रार
भावु अर्घ पुशपु पूज़ा छ्यं सार — मन स्थिर०

रेन्ज़लु त्रा'विथ रेन्ज़ु पल
वातिथ निशानस मो च्र डल
कर्मस तु धर्मस सूर फल — ,,

कन्ठ दीश युस छु च्रोदाह भवन
नीलु गंगि प्यठ बोज़ वावुजन
तति तोर पवनय योत दवन — ,,

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

मंजिल छि मन्ज़ु मन्ज़ु वारयाह
छो'ट वनुन छु मो'ट बोजु वारयाह
अक्रिया द्वारय छ्य क्रिया मन स्थिर०

ला'ज़िम छु यी यी ती वनव
नन_वा'रि वातव कोर वनव
थ्यकि युस तु दुपि पगाह वनव ,,

ईशु ईशु उत्तम शीशु नाग
ब्रकु खय च्च तति घन तु रात ज़ाग
राग त्राव प्राव महावैराग ,,

त्याग पॉञ्चि करिथ पॉञ्चय तरंग
सत समन्दुरुकी च्यथ तरंग
पदमु नाभस छिम यिम ति रंग ,,

खस्तु अस्तु-२ पंञ्चाल सुय
सूहमु भैरव बालु सय
टोंख युथ न लगि यथ लालु सय ,,

रिन्द रोज़ बोज़ ज़िन्द'य मरुन
गर्भ यात्रायि अपोर त'रुन
सू'त्य छु तति शीवय वरुन मन स्थिर०

शो'ज़रिथ संकल्पु निशु मन
ऋषि रागि रोस्त कालु वेषु मन
शीहलिथ अमीशि अनीशि मन ,,

छ्य परा पशन्ती तथ पशन
मदुमा तु वैखरी छिस पशन
यिछु अवस्था ब्रह्मय ऋषिन ,,

भावु अमरावती छ्य नाव
मल भबूत छल गृहस्त भाव
शीव पादन पान पुशराव ,,

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

युस छु परमाल वंटख नाथ
यस छी भैरव विताल् साथ
यम् करख सोयम दर वेशाथ मन स्थिर०

रुदमुत गोफि युस शोद्ध बोंद्ध
नव निदाधीन तस अष्ट् स्यद्ध
आकाशि वोंथ केंन्ह न् गो'त न् व्यद ,,

नंग् मति हंग् तय मंग् रोज़
ईश्वर दर्शन् शब्द बोज़
यी गछि ध्यान दयि घर् सोज़ ,,

गोफि मंज़ गोफि वात पनुने
त्राव दीवी त् दीवतान'य
छो'नि छिन् यिम भबूत कुने ,,

कनि मन्ज़ लाल सुय मनि मंज़
छो'ञरुक छोंनि छो'नि रो'नि मंज़
तफ करिज़ि दीह आंखनि मंज़ मन स्थिर०

सो शब्द प्रेमय प्रणवंय
अगन्यान्ह् शिखरस त्राव रवय
तालव कवूतर आलवय ,,

सहसर्. डलय गथ च़ प्राव
ब्रह्म रन्ध्रस निषकल स्वभाव
मनुचे दमाले कर च़ वाव ,,

पकुवनि छि दारस मुति मतान
थान गव ज़ि यति बिहान वोंथान
समाधि मंज़ बुत ह्यव ग्रोत्सान ,,

पनुनुय छु पान पानस च़'मुन
यी च़मुन ती स'मुन ती श'मुन
अ'त्य् वुहान लल् नार् अ'त्य् हुमुन ,,

युथ थान छुनुय प्राव यिमन
तिमुव'य ज़ोन ब्रोठ आव यिमन

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

परमात्मा प्रज़निथ यिमन मन स्थिर०

तति फेरवुन अनाहित् नाद
स्वपन् अनत् सुषमनायि आद
तुर्यायि तुरया तीर्थ समाध ''

जिस में जोगी आ पडा
जागृत स्वपनी पिंगला इडा
उतरा वहां कोई न चढ़ा ''

भौंवरा कमल में जब उडा
अबिनासी नाही सब कड़ा
और था कोई ना बड़ा ''

फीरिथ इड़ायि किञ संगमस
रस् पूरण मय् च्यथ च़्_वस
न्यथ करान श्राध छी यस व् तस मन स्थिर०

गोफ च़ल च़ त्रा'विथ तस शिवस
तस् रो'स्त रोज़ी न् केंह च्यतस
पान पुशरावुन छुय च्य तस ''

शिव् शिव् ध्यानस मो च इल
च़म छय प्रकरथ पुरुषस म् वल
को'र यि चित्रकार मायायि छ्ळ ''

यव किञ शिव ज़ानख च़ा'पा़रि
रोज़नय न् केन्ह पापुनि च्य भा'रि
भवसर् सा'री शिव शिव ता'रि ''

युन गछुन छ्य ज़न यात्रा
गण्यानस छि वुछिनि यात्रा
पन्नी छ्य व्'ञि व्ञि वारता ''

त्रोप नवद्वार वात नव दल
वा'तिथ च़ली ज़न्मचि व्दल
दीह यात्रा गयी सुफल ''

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

दीह छुय वो'नमुत दिवुदार
समसार ज़गथ दीवु द्वार
ध्यान कर ध्यान ज़ान दीह उधार — मन स्थिर०

फेरवुन छु युलि त्रिभवनुसुय
वा'तिथ तथ विष्णु भवनसय
यमलिस कमलिस भव बालसुय — ,,

वुज़नस छु ज़ल निर्मल वजल
नित्यु नियमु वस भ'वानि बल
वुदि मनि बात भवानि बल — ,,

भर्ग पाद बोज़ सुम स्वर्ग हेर
चमकी तीज़ कासी अुनेर
ज़लनय ज़न्मु ज़न्मकि बुखेर — ,,

भर्गु रूपु नव दुर्गा च्न मान
स्वर्ग लूककि छी तथ नमान
इष्टु दीवी छु पनुय प्रमाण — ,,

शिव शक्ति अकि नामु रूप बन
पानय बोज़ क्याह नो'न वनुन
परमानन्द पानस बनुन — ,,

दीवी सो पार्वती सती
मा'जि यस वो'नुख मीनावती
शिव तस वरनि आव तती — ,,

ही दीवी म्य दया कुरुम
हरु हरु हरु शाफ पाफ हरुम
कर्मु फल वुछनय वो'ञ वरुम
मन स्थिर कर पूज़ुन प्रभू — ,,

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

★काश्मीरी भाषा के काव्य साहित्य में "अमरनाथ यात्रा" एक अद्वतीय काव्य है। यदि यह "नज़म" किसी और भाषा में लिखी गई होती, तो इसकी गणना विश्व के महान साहित्य के साथ की जाती। परन्तु दुर्भाग्य से परमानन्द काश्मीरी भाषा के कवि थे और काश्मीरी भाषा-भाषी सारे संसार में पर्याप्त नहीं हैं, और इस भाषा को कोई महानता भी प्राप्त नहीं है। दूसरी बात यह है, कि परमानन्द को पूछने वाला कोई व्यक्ति आज तक पैदा नहीं हुआ।

२. यह "नज़म" योग अभ्यास के शारीरिक परिवर्तनों और अध्यात्मिक अनुभव का विस्तार से वर्णन करती है। परमानन्दजी ने योग अभ्यास की सारी क्रियाओं को श्री अमरनाथ जी की यात्रा के भिन्न भिन्न पडावों के साथ जोड़ कर पेश किया है। भाषा और इलामतों का प्रयोग इस काव्य में इस सूक्षमता और चाबुकदस्ती से किया गया है, कि इस काव्य का भीतरी संगीत कानों में गूंज उठता है जिसको पढ़ने वाला अनुभव तो करता है, पर बयान नहीं कर सकता। योग अभ्यास के सातों चक्रों मूलाधार से ब्रह्मरन्ध्र तक का वर्णन इस काव्य में कलात्मक ढंग से किया गया है जो पढ़ने मात्र से ही किसी भी अनुभवी साधक को स्पष्ट हो जाता है।

३. पिछले दौर में अमर नाथ जी यात्रा एक महा धार्मिक पर्व माना जाता था, और यात्रियों के लिए शुराह यार, शिवपुर, सिद्ध यारह बल (पाम्पुर), विजेश्वरी, हरिचन्द्र घाट, थजवोर, भर्ग तीर्थ, मामलेश्वर, नवदल, ईश ब'र इत्यादि अस्थापनों के दर्शन और पूजापाठ अनिवार्य होते थे। वास्तव में सारी यात्रा इन धर्म स्थानों से गुज़र कर ही जाती थी और इन स्थानों पर रात दो रात के लिए डेरे और पडाव भी डाले जाते थे। पर अब यह यात्रा एक रीती मात्र ही रह गई है। हमारी नई पीढ़ी के लोग अब इन धर्म अस्थापनों से अपरिचित हो गये हैं।

४. अमरनाथ यात्रा की प्रत्येक पंक्ति "कवि परमानन्द" और "साधक परमानन्द" के मिलाप की द्योतक है। यह रचना आत्म बोध और इतिहास का सुरीला सरगम है, जहां पर आत्मा और परमात्मा की बीच की दीवार ढह जाती है और सारे परदे हट जाते हैं और जहां पर साधक और अभ्यासी ज्ञान और ध्यान धारणा के सागर में डूब जाता है। ज्ञान और धारणा की यह क्रिया जब तेज़ हो जाती है, तो साधक वाणी-शब्द की भूमिका से ऊपर उठकर अशब्द और पूर्ण मूकता की अवस्था को प्राप्त करता है, और अन्तर्मुख होकर अपने आप में ही विलीन हो जाता है और खो जाता है। परमानन्द जी ने इस अवस्था को "तमि तोर पवनय योत दवन" कहा है।

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

राधायि राधिकायि श्री कृष्ण दा'री
पादन लग्रय पो'रि पा'रिये

कृष्ण् जु महाराज़ गरुडासवारी
तोत् ज़न सबज़ा का'रिये
अड़ कजि कथ् चाञि बोज़ि वन् हारी पादन०

मुरली शब्द् ज़िन्द् गच्छह'व सा'री
वायि ही कृष्ण् मुरारिये
लोत हंन मुत् रा'च्न पाप'नि भा'री ,,

दीवी त् दीवता समिथ सा'री
नमिथ छि वनान ज़ा'रिये
सन्तुष्ट रोज़ असि क्षमाका'री ,,

सालस आमुति छि राज़् च़ोपा'री
गुरि हसिथय रथ् सवारिये
व्यवमान पा'रनि च्य राज़् कौमारी ,,

कथन चान्यन कन धारि धारी
अथन छु मां'ज़ि रंग ला'रिये
रल च्य सो'दरय मंज़ क्रमि खा'री ,,

"परमानन्द" छो'त यच्न प्रारि प्रारी
करतन परम पा'रिये
राधा कृष्णय बोज़ि प्रथ दा'री ,,

कर्म भूमिकायि दिज़ि धर्मुक बल
सन्तोषि ब्यालि बवि आनन्द फल

दुयि प्राण् दय्यन त् रात द्वांद् जूरि वाय
कुम्बके क्रुर् ज़ोर् तिमनय लाय
हल् कर युथन् रोज़ि बीठ कांह रे'ल सन्तोषि०

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

लोलुकि आल फल तुलना'विथ
धैर्य यट फिरि दत फुटरा'विथ
वैरुक स्नेह युथन रोज़्नस तल		सन्तोषि

वेन्नार ब'ठि त बेर लदिथ क्रमथ
शरोच्चि यन द्यव शोज़राविथ वथ
समद्रष्ट पातजन अद फेरि ज़ल		''

सोन्त छुय दोह तार मो'त यावुन
नजि पजि साथ रावरावुन
वव ब्योल मो प्रार करु मन्गल		''

त्रोपरिथ फो'रनायि नामि वुधर
स्न'हके रबि चखि सू'त्यन भर
यन्द्रे गगरन करु वठल		''

भक्ति हन्जि न्यन्दि फेरि साधना खेत
ह्यलि नेरि तपुके पपि सग सूत्य
समभावनायि फो'लि पम्पोश डल		''

विषय पोंश वाङ्‌ रछनावख
तिमुंन'य अथि युथ न खेत ख्यावख
भावुचि रावचि नेर निष्फल		''

ह्यलि यलि नेरि त्यलि सान्पनस क्राव
वैरागु द्राति सू'त्य लून्य लून्य त्राव
सम्बन्धु रोस्त माव लाव्यन वल		''

मट्टि खसुनुचि रज़ि म'ठि म'ठि सार
सादनि अनतु भा'य बन्ध तु यार
नित्यु नियमु सोम्बरिथ अदु समि खल		संतोषि०

त्रिगो'ण त्यागु नम अख गो'ञि लद
निर्गुण प्रावख निर्वाणु पद .
समि त्सुथ तमु दिथ कर कोशल		''

ध्यानु धारनायि वानु मौंड व्यस्तार
ज्ञान दानि घासु मंज़ दान दान चार

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

मनुके अथु सू'त्य वारु दिथ छल   संतोषि०

त्याग के अथु सूत्य वारु छोंम्बनाव
प्रोनु तु ज़ग फुट्ज्यन भ्योंन भ्योंन थाव
ज़ागि रोज़ लाग'नय त्राविथ ज़ोल   ''

तूलिथ थाव अद अम्बरन माल
सूहम हायकु सू'त्य नख वाल
लोति भारि वातु ना'विथ खन्नुबल   ''

शमु दमु यमु नियम घाट वातनाव
शांत श्रद्धायि ज़लु पकुनाव नाव
पानस शीहलिथ मानस बल   ''

लागनु वालि माल आग़स तार
खा'लि युथ न रोज़ी हालि जा'गीदार
फाज़िल तु बाकी रोज़ि कस तल   ''

सन्नग्थ बयोल ब्ययि च्नारिथ थाव
सोन्त यलि इयि त्यलि फंलि फंलि वव
ओपनय उपकारु नो'द म्रल   ''

योग मायाग्नि हुंद भूगी आस
यी छय द्रुग्नी ती मानस क्रास
साध नाक प्रुव अदु स्वादु मो डल   संतोषि०

कर्मफल सोरनय गुरु शब्दय
सन्नग्थ क्रय मान तु प्रालब्धय
कर्म कांड ज्ञानु नेरि नारु वुज़मल   ''

स्वयं प्रकाश के विज्ञन्यानै
त्राविथ मान ब्ययि अभिमानै
प्रा'विथ रोज़ द्वादु शांतु मण्डल   ''

"परमानन्द" ओस ज़मीनदार
हूरिथ धनु द्वार सूरिथ लार
वांगचि वा'रचि च्नजी गांगल   ''

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

घटि मज़ गाश आव चाज़े ज्यनय
जय जय जय दीवकी नद्‌_नय

अस वनि सन्तान्_ वसुदेवुनुय
तस ति क्या डींश डींश रोज़िहे वोंनुय
ज़ाख नन्द गोरिनि अक_नन्द_नय जय०

जमनायि तमन्ना पाद प्रणामय
निस्प्रह बाल्_ गोपाल्_ निषकामय
तव ज़ल ह्वोर ह्वोर ओस खस_नय ''

दोध्_ हांछ ला'जि योशोधायि माजे
ज़ानन न आमुत ज़गि हुंद राजे
शोंभ मोंख होवथस अद्_ त्रिभ_वनय ''

बोध ब्रोर दोध्_ चूर द्राव खोखजे
गूरि बायि च़ोपा'रि लार'नि लजे
म'ति मति मति क्या छु बान्_ फुट्_रनय जय०

च़रित च़रि चा'ञ कुस सन्_ वने
सनिथ च़य छुख हने हने
वनिथ ज़ोन अ'कि शुकदीव_नय ''

वीदव वखुनुवुय वेदान्तय
दया सागर्_ न्यथ शंतय
सथ च्यंथ आनन्द्_ अमृत गण_य ''

नारुद ज़गि हुंद सतगोंर्_ त्_ स्वामी
तस ति क्याह भगवान अंतर्यामी
असन त्_ प्रसन्न य'च़ च़रच़_नय ''

नानाकारय नानाह्वारय
नाना मो'ख नाना व्यसतारय
नारुद ति डींश डींश ओस अच़'_नय ''

सर्व आश्रये सर्वामये
अह्वोये अच़'ये- रूप अभये
अच़ोत अमृत अलक्ष_णय ''

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

सुय छुय ज़गि हुंद ओश आसनय
सूय छुय बागन पोश आ-सुनय
ज़न युस पोशनूल ज़न बोलुनय — जय०

पूशि यस नु यूगी ध्यान सो'रनसतय
ज्ञान छुनु पलज़ान ज़ान करनुसतय
छा साम्रथ वुछुनुक न्यत्रनय — ''

गोपियन हन्दे गूपीनाथो
बरतल प्रारान छुस बो अनाथो
माधव यादवनि हन्दि आदुनय — जय०

ज़ानय नु मन्त्र तन्त्र तु पाठय
भव सागर कति सूम तय शांठय
तार दिम नाव छ्य्म नामु स्मरणय — ''

ज़ानय न पूज़ ह्यथ सहसुर्नामय
क्रे'म मो'ठ ह्यथ बो आमुत सोदामय
मंदछन छिम यच्न गुमु यिवुनय — ''

पापव यापुस शापुनि अन्धे
ज़न्मुक न्याय च़्नय रोस्त कर अन्दे
''परमानन्दु'' आसय शरुणय — ''

यियि कति भक्तिस मनि मंज भाव
दियि नय दातु यस मन्ने द्राव

अनुग्रह पननुय अनुभवु रुप
अनिस अछि घटि क्या करि धूप
वुछि सुय यस दपि अ'छि वुसराव — दियि नय०

सोरगस छि वुसरिथ दारि तु बर
अच्छ रच्छ नच्न वु'नि तथ अन्दर
हरि यस थरि गुल सु क्यथ करि क्राव — ''

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

दीवु लोन ज़ोन क'मि प्रजना'विथ
ह्यकि म'ति छि कंमि क्स सीर भा'विथ
सो'दरय मंज़ वाव तारय्स नु नाव दिवि़ नय०

चन्द कुय रावि तस यस नु दी दय
द्रालिदस सत्रिथ पोश्रस नु वय
रोनमुत वय क्यथ हय्यि तस छाव दियि नय०

करुवुन हरुज़ुव पा'नि पानय
पजि समयस युथ सामानय
कर्म खुर यस इयी तस क्याह ग्राव ''

"परमानन्द" वनत सोदामुन
दो'दरिथ कुलिस'य इया बामुन
हरद चि ज़रदी यि पोश फो'लनाव ''

श्री श्यामु सोंन्दर मुरली मनोहर
अज़र अमर मुरारी
ज़ानी नु ब्रह्मा विष्णु महीश्वर
अज़र अमर मुरारी

कीशव केशव करुहोय च्रामुर
च्रय शिव ग्रेशोथ च्रोपा'री
ऋषिक ड्यूंठुक नु ही विश्वम्भर० अज़र०

संतन सोंदरन हन्दे आगुर
यिम तारु त'रि तिम कम्यूं ता'री
च्रोदाह रल तु च्रय द्राख श्रीधर ''

शूराह ज़ा'निथ शुरय्न अंदरु
गिन्दान च्य्न सू'त्य आ'सि सा'री
शुराह सिंगार पा'रिथ रथेन्दर ''

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

देव कन्यायन मंज़ सत शंक्र
शक्कर वुठ अ'सि वुसा'री
गन्दरभ ग्यवान च्य कृष्ण गो'न्दर — अजर०

पूरब पश्चिम् दक्षिण् उत्तर्
वुछान वुनेम'ति टा'री
वोछे ह'त्यन सिर्य् लो'ग लगनि दर् — ''

वदान अशिस क'रिमृति अम्बुर
च्न छुखन् बोज़ान यिम ज़ा'री
मुन्यन गाश सूर घनुन छु अस्सर — ''

प'थर पयय अ'सि च्य वो'न्द गोय पत्थर
वतन न्यथर वो'थारी
दर्शन दित वोज्य असि रछ्त् सत्तर — ''

व'छि त गाव रुज़िथ चाजे फ्रेचुर
पछि ज़नस ज़िथ अन् हा'री
गछ् अ'सि तिम ह्यथ अ'सि गछ हाव घुर — ''

वोमा छि असि केंह क्षमा सागुर
च्य मा नफा असि ख्वारी
ईश्वर दर्शन च़लि हे यी शर् — ''

गोकुल मंज़ यलि वा'च्नय यि खब्बर्
लो'बहख न् छारिथ च्नोपा'री
छ़ारनि लगुने अन्दुर त् न्यबर् — ''

वन् वन् फेरान अ'सि चा'ञि आसर
पान हाव लगहीय च्यय पारी
जसुधानन्दुन वसुदेव् पोत्र् — ''

"परमानन्द" छु वनान आश्चुर
अरमान ह्यथ गा'मति सा'री
परमान् पननीय करि कोंछ़ा सर् — अज़र०

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

रस पूर्ण परम सदा शिवह
सत चित आनन्द विज्ञान रवह

दीन चा'ञ नव निध अष्ट सिद्धह
जीवन हंदि करुणा निधाह
गुलि गुलि अमृत इमव च्यवह सत०

कुंभज भजना चा'ञ करह
गागुरि मज़ इतम सागुरह
ज्यव दिम तिछ़ युथ चा'ञि गीत ग्यवह "

छ्यत्रमच्च सो आशव पाशव सान
आशो मटि छ्य पान दपान
हे शिव ! थवमय म्य आशवह "

पानस पानै छु मेलनुय
गिंदुना छा गिंदुन तु गेलनुय
सो'न नेरि नार मंज़ गलि जुवह "

देह द्रष्ट गलि च्चलि अभिमान
अद बनि सत स्वरुप ज्ञान
कृष्णस युथ ज़ि मेलि उद्धवह "

यस इछि सुय सुय तस इछे
गछि यस सुय सुय तस गछे
इछि पछि तमिसय प्रारवह "

लोलुय छुओर योर मो'लवुनुय
लोलुय छु ओर योर ललवुनुय
लोल सू'त्य सुय लोल ललवह सत०

वेंह छुन लोल रोस्त आसवुन
लोलुय छु सार व्याध कासवुन
लोलके गाश घट कासवह "

लोल बोज़ बोल व'नि भोवनय
लोलुय छु च्वोदाह भवनय
शोलवुन सु लोलय ललवह "

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

लोलु सू'त्य वोलसुन आयि ज़ग
लोल सू'त्य छम भरित पय तय रग
लोलु परमानन्द प्राववुह सत०

"परमानन्द" बोज़ दयु गत
वोथ त्राव सा'र्य मत मो चम'त
कथु बोज़ नतु क्या यि क्रवु क्रवुह "

त्राहि माम त्राहे पाहे मुरारी
कटु संकट ही मुकटु दारी ॥

इनु इनु ज़्यनु ज़्यनु य'च्न गा'मच्न घटु
घट पछि कोताह गो'ट आकार
नतु आकाश ब'ति क्याह वनु क्या खटु कट०

हो'ल होल यि पापुन बोर गो'ब तु डयजि अटु
अटु भारि कटू तु काठ कहि वाति गाठ
वथवोर यन्द्रे चू र बडि सटु वटु "

दिह पुछि कालुन त्रास छुम तु य'च्न नटु
नतु विज़ प्राविथ बिहित स्वांग
पटु कोड म्य कलुन तु वोजि शेरनस बो' पटु कट०

तावननि बाज़र मोख्तस लो'ग म्य वटु
यावुन पो'ख्तकर सौदा खाम
यावुन याम सोरि बुजरस कति वटु "

म'ठि म'ठि छा'रि छा'रि खटनस बो' आस खटु
खट छा'रि छा'रि मठ लबि ज़ि तु क्याह
लय मा रटु यो'द चा'ज खोर नय रटु "

यी वोव म्य फुलि फुलि ती ह्यलि ह्यलि वटु
कलि क्रु रोवुस गलि गयि म्य ज्यव
च्योचि किछ पेहनय ग्रटु बीठम'ति च्रटु "

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

मंडन आर वो'र म्य मूढन थाव्य म्य जट
मुंडन गोल यि म्योन व्यवहारु कुल
फल वुछि वुछि हाल फल लो'ग म्य वु लटु कट०

शोंगमुत यि घर बार अद कमि फुलटु
वुछ्तु योद ज़ान्ह मा मटि मद ह्यच्नाम
अद मा आसिह्यम यवु खोतु वुलटु ''

धरुना तु बुढ ना फुच्रिम पल तु वटु
ज़ोनुम नु होदु हरि हुरव'न आस
हफत जोश पानस आकाशि प्यु म्य त्रटु ''

तार दिम यवु तवु भवु सरु नतु फटु
रंगु रंगु मंगनस बो तंग आमुत
मोंगमय म्य इकु वटु त्र्नु ति दिम इकु वटु ''

''परमानन्द'' सो'रतु सोरनय सारि लटु
लटु पटु ह्यथ रोज़ सखरिथ क्यथ
सोरनय नु वठ व'नि सोरमुत छुय मटु ''

———0———

वयकोन्ठ बन्योव बिन्दराबनुसय
क्यथु वनसुय रटनम जाय

तोर आयोस मोछि ज़ वटिथय
यति मुच्रु रिम अथु दोशवय
मो'छि मुच्ररिथ अफसूस ख्यनसय कथ०

तोरु आयोस योरु चाव्य वेरे
महाकाल मा कांसि छोरे
काल मा त्रावि योर कांसि ज़्निसय ''

पाव्चन दोहन आस करनि सा'ला
यि छु दुनिया मो'द मा'ला
क्याा छु ह्यो'न द्यो'न क्या छु न्युन चन्दुसय ''

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

जीवन वो'न दर जिगरअ'ये
बूज़ुम यी ढ्यूंठम तीये
जान वन्दहै शो'भ दर्शनसय कथ०

लोल_ चारिथ शमशान_ बनसय
वैराग_ द्राति त्याग करनाव
नत_ मा छुय मच्चर मंज़ मनसय ,,

प्राण म्याजि न्यथ प्रातःकालस क़ालस
वनत_ कुस पोशि महाकालस
छा सु रोज़ान बिह्वित कुनि क्षणसय ,,

"परमानन्द" वो'ज़ रुठ पानस
यूरि अनतन थानस प्येठ
सूहम शब्द छुय क्षण_ क्षणसय ,,

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

लक्षमणजी 'बुलबुल' नागामी

लक्षमण राज़दान "बुलबुल" परमानन्दजी के प्यारे प्रधान शिष्य थे। लक्षमणजी की हम पर बड़ी कृपा है, कि आपने अपने गुरु परमानन्द के सारे काव्य और रचनाऐं हम तक पहुंचाई हैं। यदि 'बुलबुल' ने परमानन्द जी की कृतियां सुरक्षित न रखी होती, यह सारी लीलाऐं, भजन इत्यादि लुप्त हो गये होते काश्मीरी भाषा इस मूल्यवान सरमाये से वञ्चित रह जाती।

२. लक्षमणजी स्वयं भी एक बहुत अच्छे कवि रहे हैं। दिलचस्प बात तो यह है कि 'राधा स्वयंबर' का वह भाग जो 'मोहिनी रूप' के नाम से जाना जाता है, वास्तव में बुलबुल का ही लिखा हुआ है।

३. बुलबुल ने 'साम नामा' लिखकर काश्मीरी में महाकाव्य की परम्परा को एक नया मोड़ दिया। आपकी मस्नवी 'नल दमन' काश्मीरी भाषा की एक बहुत ही सुन्दर मस्नवी है। परन्तु यह आज तक प्रकाशित नहीं हुई है। बुलबुल की कई दूसरी लीलाऐं और भजन भी अभी तक नहीं छपे हैं।

४. लक्षणणजी मलापोरा (बानामोहला) श्रीनगर के रहने वाले थे। परन्तु बाद में शादी और नौकरी के सिलसिले में आपने नागाम गांव में वास किया और जीवन भर वहीं पर रहे और वहीं पर प्राणत्याग भी किया। गौतम नाग (अनन्तनाग) के अतिरिक्त आपने महाराज्ञा देवी अस्थापन बादीपोरा (नागाम के निकट) में साधना की और तप-जप में लगे रहे।

५. आपका देहान्त 1905 (२६०५) ई० में हुआ। इस बात का आपको पूर्व ज्ञान था और आपने स्वयं इसका पूर्व कथन फार्सी की दो पंक्तियों में किया भी था :-
"बिया-ए-बागबान बर्गे कफन अन्दाख्त दर गुलशन कि ज़ेरि पाये इफवे रामजी आमद शरण लक्षमण"

1962— बि०

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

श्री गणेश अस्तुती

ॐ श्री गणपत् विघ्न् राज़न्द्रो
सोंन्दर मन्द्रस वो'थरूय म्य
शशि वरण् विष्णु् रक्षपाल् च्नन्दरो
लाल् रल् माल् नाल् पा'रयो
तन् मन् लागय व्यन् पोश गो'न्द्रो सो'न्दरो०

मोक्षदाता छुक च्न मो'ख् गज़न्द्रो
सो'ख् मो'ख् ह्यवतम पनुन अनुग्रह
कृष्ण् पिंगल् मलयो कोंग त् स्यन्द्रो ,,

दीवकी पोत्र त्रय नित्र रत्थेन्द्रो
वो'लबा वल्लभा ह्यथ इत् ब्येह
यन्द्राज़् स्तोतनस सू'त्य ह्यथ कन्द्रो ,,

भास्कर् मो'खसुय च्यय शिखर च्नन्द्रो
तत सत प्रकाश आकाशे
गाश चोन जगतस न्यबर् त् अन्द्रो ,,

च्नो'त्र डल् मंडलकि राज़य इन्द्रो
एकदन्त् आदि अन्त् मद् रोस्तुय
मूलाधार् प्यठ ब्रह्मयरन्ध्रो ,,

विघ्न हर्तार् दिगम्बर् गन्द्रो
गिन्दहा'य आ'रच्नर् च्नराच्नर् च्यय
गन्ध पुष्प लाग'हाय' पम्पोश् गन्द्रो सो'न्दरो०

ह्रदया नन्द् परमानन्द् सो'न्द्रो
राम च्नन्द्र् 'लक्ष्मण' आव शरणय
वुज़् नावतन मत् पावतस न्येन्द्रो ,,

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

चाञि आसर् आस ईश्वर् कर अनाथस प्यठ दया
काम् दीव् श्री श्याम सोंन्दर स्यद्ध म्य करतम कामना
देवकी वसुदेव नन्दन कांह म्य छुम नो च्यय सिवा
कृष्ण गो'न्दर् राम् चन्दर् आ'रत्यन प्यठ कर दया

व्याप् कोंत बो' शाप सूत्यन भा'रि पापत्र छिम मटे
वो'न म्य छुमनो ओ'न गोमुत छुस काम् क्रोधुचि अनि घटे
युन गछुन तय ज़्यो'न मरुन ज़ोनुम न मा छुम प्रथ लटे चाञि०

तप सोरुम नो ज़प सो'रुम नो दफत् कथ् क्युत ज़ास बो
यत्न अधर्मी छुसय कुकर्मी वनत कथ क्युत आस बो'
आस आशावान बर् तल दास कव् उदास बो' "

च्चय छिह्म माता पिता भ्राता त् दाता बान्धवा'य
च्चय छिह्म ईश्वर महेश्वर च्चय महीशे केश्वा'य
च्च'डि भ्ररिम व'दि व'दि म्य अनतम ददिम'तिस मूलस थवा'य "

यथ ज़न्मस पाठ पूज़ा चांञ्य ज़ांह ज़ा'नी न म्य
वथ म्य रा'वुम सथ असथ ज़ोनुम न कथ् मांनी न् म्य
बो'द्ध पन'ञि ज़ांह शो'द्ध क'रम नो मल् निशि फांनी न् म्य "

यन्द्रे आल्यव ह'न्द् रोवुस अन्दर् ग'जि छम न् सन्धरान
छन्द्रोवनस मोह न्यन्द्रे वुज़नस छुम न् मन पञ्जान
ज़ांह क'रम नो प्रदिक्षण चान्यन शिवालन मन्दरन "

छुसय पथर प्योमुत म्य थर् छम वार् नरक'कि नारची
ध्यान धारुण चाञि म्य आस'म कुंज़ स्वर्गय द्वारुची
छम ना मो'कलन बात साथा फासि छम संसारुची चाञि०

श्री पती श्री राम "लक्षमण" निशबो'ध्यन प्यठ करु दया
छुसय दो'खव दांदय्व बों च्रोटमुत सो'ख लभय ना अख दमा
छुख च्च परमानन्द् पानै सतगुरु परमात्मा "

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

त्रेयलूकी हन्ज़ रक्षाका'री
जय जय जय राग्नि ब्रा'रिये

त्रिपोरी ईश्वरी निराकारी
सर्व कारण निर्विकारिये
सर्व स्द्धि मूर्ती सर्व अधिका'री जयजय०

गायत्री मो'ख छख मोक्ष अधिका'री
राधा श्री कृष्णु धा'रिये
गो'र रूप गौरी शंकुर प्यारी ,,

च्चंडु मुण्डु दैतन हन्ज़ समहा'री
दंड कमंडलु धा'रिये
रुंड माल नालि छ्य खीरु खंडु हा'री ,,

कारण ति करनस च्य कहारी
लारान च्य कुनं सा'रिये
पदमु आसुन ब्ययि सिंहा सवा'री ,,

सहस्र मोंख छख सहस्र नामु धा'री
जामु सास अलंकारिये
यलि युथ पज़ि त्यलि त्युथ धा'रि धारी ,,

रक्तु पीतु नीलु शीतु सब्ज़ाका'री
गुल अनारि ब्ययि ज़ंगारिये
चो'त्र बो'ज़ त्रि नेत्र सर्पाकारी जय जय०

मुकटस चा'ग्निस मों'ख्तु जा'लारी
सिर्यस अं'दि अंदि तारिये
मथुस च्चंद्रम बडि चमका'री ,,

समिथ ब्रह्मण आयि च्नोपारी
नमिथ लगुहोय पा'रिये
पाप शाप कास असि क्षमाकारी ,,

दूरि प्यठ लारान आयि ननुवा'री
दर्शनु चाग्नि अमा'रिये

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

प्रारान बर् तल् मुच्चराव ता'री जय जय०

च्चरितन चान्यन कन ध'ारी धा'रि
मन छुख शूधनायि लारिये
तन ना'विथ सैर् व्यच्चारी ,,

केन्ह भाग्यवान ह्यथ पोश् गुलज़'ारी
केन्ह क्रन्द् नाबद् भा'रिये
केन्नव रंग रंग मिष्ठान च्चारी ,,

अथ् छोन ब'ति आस ज़ारय पा'री
धन् ध्यार सा'रि असा'रिये
कथ म्याञि बोज़ वो'न्य क्षमाका'री ,,

सारिनय पूज़ायि हन्ज़ तैयारी
वारि वारि पनुन्ये वा'रिये
बति कर् च्चरणन सर निसा'री ,,

वदि व'दि वोंज़लि पोश ज़न छिम टा'री
धारि धारि ओश मो'ख्तु हा'रिये
कथ् म्याञि बोज़ वो'न्य क्षमाका'री ,,

आशि चाञि ब'ति आस गाशय ब्रारी
कास्तम मोह अंधका'रिये
मत् मंदछावतम यमि समसा'री जय जय०

रोश पाठि करतम गोशु गुज़ा'री
पम्पोश लोचन धा'रिये
तोषतम त् पोशतम पोशय वा'री ,,

चिकु चावि भ्रमरोवुस लोकुचा'री
मटि खतिम'ति पापनि भारिये
नखु लो'च्चरावतम सो'ख मो'खु हा'री ,,

आ'रत्यन आ'रच्चर मोच्चन हा'री
प्रथ घर् छख प्रथ दा'रिये
ध्यान धारनायि चाञि कम कम न् ता'री ,,

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

परमानन्द ने नन्द् कोमा'री
'लक्षमण' छु वनान ज़ारिये
धर्मस करतम परम पारी ,,

कस क्याह छु ज़ेनुन यमि संसा'री
सां'री गयि हार्य हा'रिये ॥

को'त गयि बब त् माजि भा'य बंध त् या'री
अख अकिस तिम न् कां'सि प्रा'रिये
ता'र लजिन् तस यस यलि वा'च्न वा'री सा'रिय०

यमि देह पुछि क'र म्य जान निसा'री
भा'रिन प्यठ खा'रि भा'रिये
कुञि विज़ि दज़ि पत् च्नित्तायि ना'री ,,

केंच्नन गुर्य ह'स्ति रथ सवारी
केन्ह न्यथ्ननि त् नन् वारिये
वुछि वुछि बुछि तिम काल् शाहमा'री सा'रिय०

नाम रूप जंगलस कर्म कुलि बा'री
विगि विगि गयि बुजा'रिये
उतपथ भ्योन भ्योन उत्पात सा'री ,,

वासनायि ब्योल ब्ययि नुवि नोंव नोंव खा'री
बोवि बोवि बारंबरिये
व'वि व'वि लोनुन हरद् त् हा'री ,,

ज़गत अरहटस देह तोलवा'री
कर्म रज़् नय चार्य चा'रिये
छरि लट् लट् छख पोज सार्य सा'री ,,

मनुष्य मोर प्रा'वित दीव हितका'री
यथ मंज़ सर्व अधिकारिये
गछि न रावरुन छु दुर्लभ त् दुश्वा'री ,,

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

छ्यन् गोमुत पान परम् सुख दा'री
मटि ह्यथ कर्म दुख भा'रिये
मोह भ्रम् राज़ आ'सिथ बेचा'री सा'रिय०

व्यियि क'च्न मोकलन यमि अंधका'री
सत् सिर्युकि चमकारिये
च़लनस न्याय बलनस बेमा'री ,,

योद कां'सि मुच़रन बरञन ता'री
अनुग्रह अनुभव धा'रिये
च़ारनस त् खारनस लगि विच़ा'री ,,

भक्ति श्रवणन बोज़ि कन धा'र्य धा'री
प्रेम नेत्रव ओ'श हा'रि हा'रिये
साधन गुरुन लगय पादन पा'री सा'रिय०

वननस तत्व उपदेश उपका'री
करनस पारि पा'रिये
बे इख्तियार यो'द बनि बा इख्तिया'री ,,

"लक्षमण" परम आनन्द च़ोपा'री
साक्षी छु साक्षात का'रिये
पानै पानस करि उद्धारी ,,

कष्ट कासतम भगवान् हरे
सन्तुष्ट् रोज़तम गरि गरे

भ्रमचे वुनिरे वुनिरोवुस
मोह छटि अञि घटि वति रोवुस
च्यय रोस्त कुस म्य अथरो'ट करे सन्तुष्ट०

भव् सर् क्रमुनय रो'टम खोर
ज़ोरावार आ'सिथ गोस कमज़ोर
छांब'रि लो'गमुत छुस बांबरे ,,

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

वेरि बों लागय शेरि पम्पोश
गद्_गद्_वा'णीयन थावतम गोश
व'दि व'दि यच्न छम म्यच्न मा हरे सन्तुष्ट०

वैकोन्ठ प्यठ्_यित्_ननवोरुय
गरुडस खसिथ त्राविथ दोरय
मोंकलावतम संकट्_चि थरे ''

संकट मंज तस प्रहलादस
कन थोवथस आ'र्च'र नादस
हरिणा कश्यम अद्_मद्_उतरे सन्तुष्ट०

हंग्_आख द्रोपदी नंग्_रछतस
नंग वुछनुक तस सामर्थ कस
रंग रंग आबरण नालि तस हरे ''

'लक्षणो' छारुनं परमानन्द
च्नराच्नर युस पोशि अंद वंद
लो लो करान च्नेरि वो'नि लोलरे ''

———0———

श्याम सो'न्दर म्रो'रली वोलुय
खेलि बना रास्_मंडोलुय

काच्न_ज़ून ज़न चमकान द्राये
वाच्न बंधन यादं छु नाये
याच्ननाये यच्न भ्रुरिव लोलुय खेलि०

कव्_लज़ि मच्न_छव्_जंजालस
लज़ि वजि मच्न_मोहनिस ज़ालस
शुरि त्_बा'च्न ब्ययि मा'जि तय मोलुय ''

गंग ज़लय छलि वो तनय
कोंग मलिवी ब्ययि च्नदुनय
लोल्_करोस लो'लि मंज़ोलुय ''

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

रोशि करि वी पोशन मालय
पोशनूलस डा'लिवी नालय
पालवनि अज़ वाद सोन पोलुय खेलि०

मोर मुकट धा'रिथ सो'न्दर
अज़ छु तोशान पोशन अंदर
वा'लि गोशन ना'लि ज़ंगोलुय खेलि०

कों'ग चन्दन टयो'क तस मथय
बांसरी ब्यिय पम्पोश अथय
केशवस कीश रम्बोलुय "

राधा अख ब्यिय गूरि कने
आरन'य मंज़ न्यथुय नने
मान आभिमान यिमव ज़ि गोलुय "

रास रस च्यथ मते मुच्चय
क्र'शि वने त्रेशि हच्चय
अछ रच्च न तति मंडोलुय "

वोक स'नय आम'च्च वोसे
कोई रोये कोई हंसे
वसि मंजय फों'ल अल ब्योलुय "

दीव सो'न्दर गन्धरम आये
दीव सा'री समिथ आए
कतिजि ज़न वेरि येरन ओलुय "

ज़नि पत ज़ोन सू'त्य सू'त्य नच्चन
सारिनय मंज़ कुनि छुन व्यच्चन
वाजि हंदुय क्रेख मो'लोलुय "

व्यास नारुद ति अं'दि प'खि रुज़िथ
सोर डलि'मति सु सोज़ बूज़िथ
साज सारंग मृदंग डोलुय "

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

ऋषि त मुनि वो'थिम'त्य तपव
लीनु गा'मत्य वीणायि ज़पव
मोह जंगुल यिमव ज़ि ज़ोलुय　　　　खेलि०

तारि गोमुत तारा मंडल
दीवु कनिकन आमन्न छि वदल
हो'ल गंजि मन्न करिथ गोलुय　　　　खेलि०

साध सथज़न बोम्बुर बनिथ
पोशि अम्बरन तल रुध सुनिथ
च्रण् क्रमलन हुंद छुख लोलुय　　　　"

त्रि कारण पोशु वर्षनस
हर्षनस तथ दर्शनुस
कृष्णु गो'णुन दिवान ज़ोलुय　　　　"

च्रंदर् मंडलकि लुख प्ययि पथर
शबनम आ'सिथ ज़न गयि पत्थर
कृष्णन ज़न वो'व मो'ख्तु ब्योलुय

'लक्षमणस' यी ओस मनस
गीत वनस ज़नारधंनस
'ार'नन्दुन आवय लोलुय　　　　"

लालो लालो बालु गूपालो
करुयो च्य्न कित्य पोशन मालो

जसुधायि हन्दे जसुधा नन्दो
दीवकी हन्दे परमानन्दो
वन्दुयो दो'न पादन कपालो　　　　करयो०

शाम लटि इखना सों'दर शामो
रगु वन्दुयो रघुनन्दन रामो
सख्यिन हन्दे हा रक्षपालो　　　　"

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

वन_वन_फेरय वुञि दिनि नेऀरय
वुञि दिथ दोरे दारे फेरय
च्रय वन च्च म्यऀन कहियो सम्मालो करयो०

दाऀसि कवु कोरथस हा उदासी
हरु भरु च्च कित्य हरु की खाऀसी
बन ब्रजबासी छुय म्योन सालो ,,

आदन बाजो कन थाव नादन
यितु दितु दर्शुन छम चाऀञ लादन
स्यधुन साधुन हऀन्दि कृपालो ,,

यन्द्रे चू र आम लाऀगिथ सन तय
ज़ाऀगिथ न्यूहम शिलुवासन तय
त्याऀगिथ सोऀन तय ब्ययि मोऀख्तय मालो ,,

ह्यस व्यसराऀवस मायायि मसुनऀय
रसह रसुह रसु वसु विषय रसुनऀय
छुम मटि खोऀतमुत मोह जंझालो ,,

माया तीतो छायि मतु रोज़तम
च्रराच्रर छुख आऀरच्रर बोज़तम
कोन्छ़ा सोऀज़तम दीनु दयालो ,,

च्यथ आकाशस भास्कर म्य भास्तम
ज़ूनि प्रकाशुक सिर्यु ज़ान आस्तम
अनि धटु कास्तम रटथो नालो ,,

परमानन्दो नन्द आनन्दो
"लक्षमण जुव" ने श्री रामचन्द्रो
सीता सुऀत्य ह्यथ नाऀली नालो ,,

---0---

वथिवी सखियव सखरिवी वन
कृष्णु दर्शुन करवी लोलो
स्वर मुरली थववी कन कृष्ण०

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

शामु नीरिथ गोम सुबहन
दुबु वां'लिज छम फेरन
हुब्बु वन्दुसय मो'ञ्य पादन कृपरम०

मो'ख ढयूंठुम पम्पोश ज़न
रोश न्यूनम होश बो'म्बरन
ना'लि पोशुमालु वा'लि गोशन ,,

शेरि मुकट क्या छु शूभन
घटि मंज़ गाश ज़न तारन
सास भासकरु तीज़ भासन ,,

मोर ताज दिथ राज़ कोरुन
बा'जि लागन त्र्न भवनन
दीब भ्यो'न भ्यो'न छिस सीवन ,,

म'ति म'ति छिस पतु लारन
सतवा'दी साध सन्त ज़न
प'छि पनने सु प्रावनावन ,,

शानु करिनय पानु पटलन
यति घटन छु मो'ल-मुश्कन
अश्कु पेचा'ञी वो'ललम मन ,,

मन जोरमुत कनि मुंदरन
सतुषि तति रूदि गोशन
वुछतु वुज़मलु क्याह छिंदरन ,,

पीतु आवरण वो'ल शामन
श्याम लटि प्यव सिर्यि बालन
छायि लगुसय पो'त छायन ,,

प्रम हृदयस कोस्तब मन
नभुकुय सिर्यि चमकन
गाश तमि कुय आकाशन कृष्णु०

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

कोंग् चंन्दन् कोमल अंगन
रंगर'विस मल् हन हन
ही बोम्बरस लाग् तनि तन   कृष्ण्

दोध् चू रस लद् क्या सन
शोद्ध भावनायि हंदि व्यंज़न
मद् चूरस कर् अर्पण   "

भाग्य बो'ड क्या छु बिंदराबन
यन्द्र लूकस युस छु गेलन
माल् मो'त म्योन तति खेलन   "

बुम्ब ह्या'रिंजि लो'दनम गण
रूम् रूम् छिम गुम वुज़न
छुम सीन् शो'भ कान् कानन   "

पूतनायि दाम् दिच्नस तन
काम दीवस गयि शरण
सोदाम प्राव दीह आमन   "

नन्दलाल वरि गोवरधन
गोकल् क्यन करि प्रसन्न
परमानन्द प्रावि "लक्षमण"   "

★परम् धामुक म्य चावतम दामो
सत्गुरु मोक्षदायक् रामो

त्रेताप् कामनायि आमताव्
व्यसरावान छुम भक्ति भावय्
फिरवान त्रिशणा शहर् गामो   सत्गुरु०

गा'लिथ काम क्रुध ज़ालिथ तम
सार प्राव पथ कुन कुनुय सूहम
अनुग्रह चाणि सु'त्य गाश आमो   "

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

ज़िन्द् युस मरि तस क्याह करि काल
रोज़्ने'स न् गरि गरि मरनचि ज़ाल
अमृत संजीवनि चाव दामो ,,

मन तु प्राण युस करि च्य अपर्ण
सुय वुछि सन्मुख नारायण
इथ् पा'ठ्य् लक्षमणन वुछ रामो ,,

तारि भवसागरस चोनुय नाव
नाव तरि त्यलि यलि गलि वर्ज़ वाव
फटि न तु रोज्नस न पतु पामो ,,

सूरम श्रम च्य पुशुरुम पान
निर्वाणकुय दिम ज्ञान विज्ञान
निर्मल् निष्कल् निष्कामो ,,

मूह तुरि सू'त्य छुस बर् गोमुत
संताप तापु ज़र् ज़र् प्योमुत
होल त्रलि चाजि यिनु लोल आमो ,,

राम लक्षमण च्य वन्दुयो पान
परमानन्द आनन्द छु प्रावान
दामु चावतम योग् "बल् रामो" ,,

★यर भजन लक्षमण जी राज़दान "बुलबुल" नागामी के शिष्य बलराम जी का है।

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

कृष्ण जी राज़दान

कृष्ण राज़दान की भक्ति कविता मधुरता का एक विशाल सागर है। इस कविता में भावना की गहराई भी है और अनुभव की बिजली भी। वस्तुतः राज़दान साहिब शिव भक्त है, परन्तु जगत जननी जगत माता, श्री कृष्ण और श्री राम से भी दूर नहीं हैं। आपकी कविता और भजनों में घुंघरू की झंकार भी है और आत्मज्ञान की बुलन्दी भी। आपने जिस विषय पर लेखनी उठाई, उसमें अपने जौहर दिखाए। लीला के मैदान में तो परमानन्द और कृष्ण राज़दान के बाद कोई भी ऐसा व्यक्ति दृष्टि में नहीं आता, जो इनकी तुलना करे या आगे बढ़े। आप के भजन भारत की भक्ति रचनाओं के श्रेष्ठतम नमूनों के साथ रखे जा सकते हैं, इसमें कोई संदेह नहीं होना चाहिए। राज़दान साहिब के सामने अन्य लीला कहने वाले भक्त कवि बस बौने दीख पड़ते है। आपकी कविता संगीतमय है।

२. राज़दान साहिब को जो भरपूर ज्ञान काश्मीरी भाषा का है, उसमें कोई भी दूसरा कवि आपका मुकाबला नहीं कर सकता। सच तो यह हैं, कि राज़दान साहिब न सिर्फ़ कविता बल्कि भाषा के भी जादूगर हैं। उनके सामने भाषा गीली मिट्टी की तरह है, जिसे वह स्वेच्छा से किसी भी सांचे में ढाल सकते हैं।

३. कवि होने के साथ साथ राज़दान साहिब महान साधक भी थे। "शिव लग्न" आपका महान काव्य है।

४. महाराजा परताप सिंहजी राज़दान साहिब के बड़े भक्त थे। दरबारमू के समय महाराजा साहिब आपके दर्श हेतु और उनसे धर्म के मामलों में परामर्श के लिए रात भर के लिए वनपुह (अनन्तनाग ज़िला) गांव में पडाव डालते थे। लेकिन राज़दान साहिब कभी भी याचना के लिए दरबार में नहीं गये।

५. राज़दान साहिब का जन्म 1850 (२८५०) ई० में वनपुह गांव में हुआ था और वहीं पर आप 1926 (२६२६) ई० में अन्तर्धयान हो गये।

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

अज़ सा'ञ विन्ती सत्गुरु साधय,
कुनी नादय बोज़

रातस गंजर्यम् नभचे तारय
कृष्ण च्नं द्रम् इत् प्रारै कूत
श्याम् रूप् सुबह फो'ल इन् डलि वादै कुनि०

विज्ञान् रव् च्रू रिमि पद्म् पादै
च्वथ बंबुर सोन व्यूर ह्यथ द्राव
गीत ग्यवि चाञि सत्संग् संवादै ''

मायातीत् अन्त् रोस्त अनादै
कुस अखा चा'ञिस अन्तस वोत
हे अगम अपार् आदिकि आदै ''

मंज़ चाञि माया सागर उत्तपत
छिय गछान ब्रह्मांड बुद्बुद वत
अवतार कारण देव अगाधै ''

च्वथ अबलकु च्रो'ल को'त पकु प्यादै
स्यज़ि वति को'छि क्यथ रून पकनावं
छुस पथर प्योमुत करूम इस्तादै ''

उन्मत भूता छुय जगत गोमुत
तथ मंज़ प्योमुत छुस बो' अनज़ान
सु विन्नारस वात् चाञि प्रसादै ''

पानय सोरुय छुक उपदावान
कल गिलनावान बति छुस कांह
पो'त ह्यथ इत भ्रमके अपराधै कुनि०

मेघवर्ण् रछत् व्यवहारचि त्रटि मंज़
ग्रहस्थ घटि मंज़ नो'न हाव गाश
अमृत चाव प्रेम् शब्द् अह्लादै ''

म्याञि भक्ति भावनायि हन्दि प्रह्लादै
सर्व आत्म भाव् समदृष्ट प्राव
सुख दुख सम जान मंज़ कम् ज्यादै ''

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

बुद्धियोग होश गछि जीव्_ भाव मशुनुय
पशुनुय अद्_ च़लि दो'न आलमन
इथि मशनकि नत्_ यादकि यादै कुनि०

अनुग्रह चाजि सू'त्य भोग व्रोंठ इयतन
'कृष्णस' प्ययितन भोगजि तिम
एकरस ह्यस दिस तालकि स्वादै ''

कृपा करतम्_ हरी हरै
ब्_ क्या करै ज़ोर

लूसित प्योमुत छुम बुज'रै
खो'तमुत छुम बोंड बोर
यथ पंज़ालस किथ्_ पा'ठि तरै ब्_ क्या०

आरह छु वज़ान वो'गनि दरै
वारह छु करान शोर
छोप्_ छु करान समन्दरै ''

व'नि व'नि यच़ गोस च'खि अंदरै
ननुन् ज़न छुस चोर
छो'पि हुंद सो'ख दिम योगीश्वरै ब क्या०

पख छम जरिमच़ छुम ज़र्_ ज़रै
बन्योमुत छुस मोर
हीन छुस खोरन हंदि आर'च़रै ''

सन्मुख रोज़तं श्याम्_ सों'दरै
प्रभात ह्युव च़ोपोर
युथ न्_ पम्पोशस दोह लगि दरै ''

आभास चाजि सू'त्त गा'मति छि खरै
अन्तः करण च़ोर

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

म्य भास प्रकाश रूप ईश्वरै   ब_क्या०

त्रिगुण उल्लंघित छुख शंकरै
शक्तियि चाग्नि छुस लोर
ओ'गनिस दो'गुनाव कुनी वरै   ''

च्वोरोंग ज़न्म_म_फिरनाव घर_घरै
यि बा'ज़िगार छा सोर
दुबार म_डाल प्यठ खार दरै   ''

अन्दर च्वा'निथ गन्यानकि घरै
हावुम चूरिम पोर
तथ मंज रूज़िथ आनन्द भरै   ''

'कृष्णस' मु'च्नराव भावकि बरै
कुनी वरै तोर
युथ लरि ह्यथ च्यय बसि अमरै   ''

भूल_बाल_बालकन सू'त्य खेलनावतम
बालक अवस्था प्रावनावतम
ज्ञान करनावतम त_पान_परज़ नावतम
सो'ध्य वाग्यिन पो'ठि हावतम रू'प   सो'ध्य०

कठिने भवसर_छांठ वायनावतम
मोह पोव्य वोतुम हटिस'य ताम
लटिसुय वृषभूस थप करनावतम   ''

थज़रै प्यठ_अख नज़राह त्रावतम
शेशरम_नाग_म्य थावतम नेब
वनि इत_अग्निरकि सग्निर_म_रावतम   ''

ब्रह्मण ज़न्म दिथ मत_मन्दछावतम
नम प्यठ_बो'न मत_दावतम दब
अमरनाथ अमर बनावतम   ''

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

दासन हुन्द दासा गन्ज़'रावतम
मत् मश'रावतम पननी ज़ान
यति छुख पानै तो'त वातनावतम सो'ध्य०

अज़पा ज़प् यज्ञ ज्यू'त्य प्रज़लावतम
होद्‌शीश् ज़न मो'च्नरावतम म्य
ही महेश् छतिकीश् मत् दश्‌रातम ''

सत् चित्तानन्द अमृत चावतम
नित्य भासनावतम सोअहमसू
ॐ शिव् शम्भो शब्द शम्‌रावतम् ''

मोह मायायि सू'त्य मत् तम्बलावतम
सतची कथ पाव्‌नावतम याद
च्यतकुय च्नेनुन न्यथ च्नेन्‌नावतम ''

मन् नागस प्रेमप्रोञ वुज़् नावतम
सुलि बुज़ुनावतम त् हावतम रूफ़
मंज़ प्रभातस सातस म् सावतम सोध्य०

सत् के निर्णय पय पकनावतम
दय पनने नय् हावतम वथ
नाव छुम "कृष्ण" शिव भाव ब'ड़रावतम ''

शिव लीला

च्नरणन हन्दि ध्यान सो'रन् यमि भवसर् तर् बो
हे च्नराच्नर् गंगा धर् शिव् शंकर शम्भो

सर्वव्यापक संसार सार धारणायि धारह चोन ध्यान
परमआनन्द शो'भ च्नरणन चान्यन वन्द्‌यो पान
नम् च्य कुन दम् दम् रिन्द् पा'ठ्य ज़िन्द् मर् बो' हे०

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

हे अविनाशि च्यथ प्रकाश साञ्य शुर्य बाशि वारह बोज़
गाशि रस्त्यन अञि घटि मन्ज़ सिर्य प्रकाश सुबह सोज़
परमेश्वर कर च्न पूरय़ क्यिथ दूरय़ ज़र बों हे०

वासनाये कायाये मायाये मन्ज़ बों गो'स
देह गालवुन जानावारा काल ज़ालस मंज़ बो' प्योस
हे दयावान बडिं भगवान ज़गतस क्याह कर बो' ,,

विष्ण ब्रह्मा छुक च्न पानय छुक च्न दयालू बो'ड दय
त्रन भवनन हन्दि सा'मियो सोन भविनय जय जय
वारह निश्चय लब त्यलि यलि शिव शास्त्र पर बो' ,,

वा'णी वारह वननावय च्ना'रि च्ना'रि पोश लागयो
ही त मसवल व्यनह मादल चाफ़ुरि पोश छावयो
म्यानि मन मान छुक च्न पानय चाञि आसरतर' बो

कल छम चा'ञ्य वनन छुस सा'री रूग कास्तम
कल वन्दुयो कल मालय कलसुय प्यठ आस्तम
वो'ठ ला'यिथ छांठ वा'इथ अकि नत अकि तर वो हे०

वीर म्याञ्यो हा समीरो वीर स्वस्थ हा वीरो
भैरवनाथो सीर बाज़्यो महाराजो हा वज़ीरो
साज़ वायुयो बम ज़ीरो सेतारह तार जरयो ,,

च्नशमह वन्दयो भूलह बालो पादन दिमुयो मीठ्य
अर्पण गछ़ भक्त च्यय कुन पादन दिमयो मीठ्य
क्या वनय बो' क्या कर बो' हर हर हर परयो ,,

हंसासन गरुडासन वृष्मासन वन क्याह
हनि हनि मंज़ छुक पानै फेरवनि मन वन क्याह
यी अरमान छुम रात धन च्यय सू'त्यन भर बों ,,

नरक मन्ज़ै मो'कलावतम गथ पननी हावतस
कट संकट भस्मादरह हर हर वननावतम
हृदयस मंज़ हे कीवल ध्यान चोनुय धार बो

श्री नारायण छुक च्न पानय सारिनिय जीवन मंज़
परमात्मा शोंद्ध नेंरमल सारिन'य-दीवन मंज़

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

सर_ को'रम जगत ईश्वर चा'ञ्य स्मृण फिर_ बो हे०

प्रथ_ प्रभातन_ सुलि वो'थ हा चा'ञ्य पूज़ा करहा
कन दा'रिथ मन ला'गिथ चा'ञ्य लीला परहा
नालि छ'न_हैय लाल_ मालय ब्ययि मो'ख्त_य लर_ बो ''

त्युथ स्वरहु्थ युथ म्य मेल्यम मन तय प्राण च्यय सू'त्य
नत क्या अथ भव_सरसय आय का'त्याह गई का'त्य
मन मेलन_ लय गछ_हा नाफ़हम_न खर_ बो' ''

हे महाकाल_ कालनि ज़ाल_ चाञि नाम_ सू'त्य च्नलनम_
वासनायन संकल्पन हन्दी मूल_य गलनम
ध्यान नय स्वर_ का'त्य काल_य थरि_ पोश ज़न हर_ बो ''

सास_ सिर्य खो'त_ तीज़ चोनुय गज़ च्नम छय च्य ना'लि
च्नन्द्रम छुय डयकि प्यठय किव घट_ पट_ निश खा'लि
लोल_ चाञ्ये शोल_ व_ञ्य ज़न ज़ून लग_ दर_ बो ''

दर्शन_ के शबनम_ सू'त्य फो'लह हा ज़न पम्पोश
दर्शन_ चाञि अमृत के वर्शण ययि असि बोश
फल_ रो'सतिस अहंकारकिस कुलिस'य वाल_ अर_ बो ''

अ़छ मो'च्नरनी चोन दोह तय अछ वटनी चा'ञ्य राथ
आर इयनय विकास_ लोल_ छुक च्न भोलानाथ
साफ त़न नय चा'ञ्य डेंशन ही ज़न गछ_ बर_ बो

परमात्मन_ नीलकंट्य हटि वासुक च्यय छुय
अर्पण गछ_ च्नरणन दौन सू'त्य बा'ज हाथ बो'य
यथ आये पाद थावक सो'न_ कनि अछ जर_ बो ''

ग़छि करुणाय_ च्नाञ्य सू'त्यन सारिन_य पापन नाश
धर्मच_ सम्पताय_ सू'त्य ज़ेनह शोहरत अविनाश
सन्तोषि सू'त्य क्रूध गा'लिथ मोह राज़स फर_ बो ''

हे सदाशिव_ 'कृष्णस' च्नीतनाइ किञ्य भास्तम
पाप_ ज़न्म'कि खो'टि कर्म_य कास्तम खो'श आस्तम
सम्सारा दो'ख मो'रमुत यति क्रियथ पा'ठ्य दर_ बो ''

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

स्मरणि चाञि पाप सा'री हारी
हारै पर्बतुचि हा'रिये ।

संकट कटु छ्क हे मुकट धारी
तेज़ न्नांञि प्रज़लन् आव संसार
सिंहआसन च्यय छय सवा'री हारै०

गौरी नावस लगोय पा'र्य पा'री
चाव प्रेम दोध्न चडवा'रिये
ज़ाञनख अभिनवगुप्त आच्रा'री ,,

न'टि लछलि आकाशन ग्रटन ता'री
नो'न नीरित वो'न महिमा चोन
परम शक्त माञिनक शंकाराचारी ,,

शिव शक्ति रूप ज़ा'नित न्नो'पारी
गुलि गंडित नन्य वो'ञ्य या'री म्य कर
ह्यथ नखस नियनक मंज़ कष्ट्वा'री ,,

नित्य सुमेरूस ताञ ला'र्य ला'री
कति आ'स वातुनचि शक्त ओ'स सख्त
पर्वत् प्रदक्षिण् पाप निवारी ,,

शारिका नाव छुय भाव छुम चोनुय
नो'व न'वराव त्राव प्रोनुय याद
हाल भाव वाल पापन हंदि बा'री ,,

चक्रेश्वरसय छुय जय जय कारय
सार्य वयु रोट दरबारय सुय
सिद्ध पीठ् प्यठ गयि सिद्ध ह्यत सा'री ,,

आद्य शक्त पान् छक सर्व अधिका'री
पूज़ा करुवनि सा'रिय च्यय
साध संत वैरा'गि जोगि ब्रह्मचा'री हारै०

चाञि सू'त्य सा'र्य देव-जीव व्यवहा'री
चाञि सू'त्य उल्लसन् आव संसार
चाञि सू'त्य सा'री छय दुनिया दा'री ,,

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

अष्टदश भुजवन सू'त्य पर्वत
हितकार पुछि बतु बा'गरान
सर्व व्यापक छक सर्व उपका'री   हारै०

कर्मलेखा छक पानु परमशक्ति
कर्मन सान्यन पनञिय भक्ति लेख
कृतु कर्म फल छक दिवव'नि सा'री   ''

अजपा गायत्री जपहोथ अन्दुरी
श्री सो'न्दरी योगु न्यन्दरे मंज़
मनु प्राण ध्यान ज्ञानु विच्रा'री   ''

परमात्म रूप छक जगतचि साक्षी
जितेन्द्रिया इन्द्राक्षी छक
प्राणु शक्ति सू'त्य छक पानु व्यवहा'री   ''

पानु छक योगी पानै ज्ञानी
वा'णी रूप भवानी छक
बो'ज़ सू'त्य ह्यसु रटनचि विस्ता'री   ''

च़ामरु लागु'होय पोशु च़ा'र्य च़ा'री
चण्डी च्य छक चेतन (स्वरूप)
चित श्क्त छक च़ेनव'अ च़ोपा'री   ''

मोह जाल मंज़ नेरुनुक उपाया
कर राज़ु हंसुन साया त्राव
हंस नादु सू'त्य तार यमि हंसु ह्या'री   हारै०

हीमाल पर्वत'अ राज़ु कुमा'री
च़रणन लगोय पा'र्य पा'रिये
'कृष्णअ' भक्ति बोज़ कन धा'र्य धा'री   ''

छुक मो'क्षदाता पानु च़'य
यी गछि म्य आसुन ती म्य दिम

केवल सतुक विच़ार दिम
योगुक तु ज्ञानुक सार दिम

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

सन्मुख इतम सोरूय नितम्
द्युतमुत यि छुई फीरित ह्यतम
भक्ती दितम भक्ती दितम
भक्ती हुन्दुय दरबार दिम   यी०

मस्ती होशस ह्यथ मंगय
मत नच्ननावतम दिथ भंगय
भक्ति कोंगय जामय रंगय
सुय रंगनुक विस्तार दिम   "

मोहकिस ज़िनिस दज़ुन स्वभाव
च्न'य ज्ञान रूपी अग्र ह्यव
भक्ति हंज़य रेह प्रज़लाव
अज्ञान शोरस नार दिम   "

ममतायि लंका ज़ालतम
भावुक विभीषण पालतम
श्रीराम् मोह मद् गालतम
यथ भवसरस वो'न्य तार दिम   "

शक्ति त मुक्ति शूभि च्यय
मन क्याज़ि तथ प्यठ लोभि म्यय
भक्ति दितम भक्ति दितम
भक्ति म्य बारम्बार दिम   "

छुक भेद रुस्त शिव कृष्ण राम
आसन करिथ प्यठ परमुदाम
प्रारान छुसै च्यय निश इनस
जल्दी म्य वोज़ आंकार दिम   "

मिथ्या पदार्थ क्याह मंगय
तिम भोग्य वोज़ आसय तंगय
शांत गछ़ अद सू'त्य सत संगय
ईछ़ि भक्ति हुन्द आच्चार दिम   "

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

वां'सा ग'यम मिथ्या वनन
क्रय करन रोस्त छा केंह बनन		यी०
छुस लोभ फल पेहनस अनन
वोत्र ग्रट चिय अनवार दिम

करनावि तारस च्यय सो'रित
तारुम म्य तारस थप क'रिथ
पारस बनावुम शरुस
नारस करिथ गुलज़ार दिम		''

छुय क्याह म्य च्रारुन छो'त क्रुहुन
छुम मज़ प्रथ भूगस चुहुन
छुम अर'सरव रो'स्तुय बिहुन
शो'मरिथ म्य इन्द्रय द्वार दिम		''

काया छि म्यानी द्वारिका
च्रय छुक 'कृष्ण' परमात्मा
मंगन सुदामा छुय भिक्षा
सर्व ऐश्वरी यकबार दिम		''

ब्यल तय मादल व्यनु गुलाब पम्पोशु दस्त'य
पूज़ायि लागस परमु शिवस शिवनाथस्ता'य

जटा मुकट्य प्यठ गंगा वसान छस ता'य
देवी तु देवता विष्णु ब्रह्मा छिस दस्त बस्ता'य
भक्ति भावुक जय जय कार आ'सिन तसता'य		पूज़ायि०

दया सागरु लोलु विजियायि कोरनस मस्ता'य
हा पोशमते होश डलिमति थव ध्यान ह्रास तांय
असार संसार छ्लुरावान सोर रोज़ि कसता'य		''

पंपोश पादव सू'त्य इतम अस्ता'य अस्ता'य
च्ररणन बु वन्दै ज़ुव जान ह्यथ वां'लिंज़ वस्ता'य
रागु चानि सू'त्यन पोत्र वुज़्नम नागरादस तय		''

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

पा'र्य पा'र्य लगोय ना शिव शंकर शिव नावसता'य
दर्शन चान्युक छुम यच्च लोल ब्ययि हावस ता'य
टोठतम सदाशिव जगतीश्वर छुस बेकसता'य पूजायि०

अमरनाथस नीलकंठस कल_ वदंस ता'य
विच्चार सू'त्यन 'कृष्णस' प्यठ आर यी नसता'य
यछि पछि सू'त्यन गछि अर्पण शिव भावस ता'य "

बन्द को'रनस ब_ बाशे ज़गत'चि वाल_ वाशे
मो'कुलय चाञि आशे शिव नाथ_ अविनाशे

भाव_ सू'त्यन इमयो
हरमुख_ व'नि दिमयो
मोह घटि हंदि गाशे शिव०

कैलास कोह छारत
धारणायि ध्यान धारत
सद_ चित्त आकाशे "

ज़प_ शबनम_ धरे
पपि ब्योल तप_ वारे
कांह फो'ल गछि न हाशे शिव०

शंभू नाथ_ साधय
आवाहन_ नादै
साञि बोज़ शुर्य भाषे "

तार दिम_ मोह वावस
मायायि द'रियावस
कड्डु दुख नावि पाशे "

संसार के सरय बो
हर_ नाव सू'त्य तरै बो
कास संकट विनाशे "

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

"कृष्णस" आंप चा'ञी
बख्शुस पाप प्रानी
शापन कर च़ नाशे शिव०

मोख्त कनि तारख छिस तापदानस
छम ईशानस पोशि पूज़ा ।

आकाशि पोश़ वर्षुण हनि हनि छुस
रथबात कनि छुस सिर्यि देवता
सायबान बन्योमुत छुस आसमानस छम०

ड्यकस प्यठ चंद्रम प्रज़लान लाल छुस
वाव लोकपाल छुस करान गजिगाह
ब्रह्मा विष्ण छिस हे'थ ज़ांपानस ,,

त्रितर गुप्त ताह छुस करान सामानस
यन्त्रराज़ मोरछल बरदार छुस
धर्मराज़ थोवमुत प्यठ धर्मदानस छम०

सत ऋषि सथ ज़ल ह्यथ मंज बानस
अतर त काफ़ूर छकान छिस
सतवय गृह'दि सू'ति छिस ह्यथ विमानस ,,

गंगा सागर ह्यथ छस गंगा
वुद ज़ालान छस दूप माला
लक्षमी मीठ्य छस दिवान दामानस ,,

नाबद आपरान महा विद्या छस
करान जमना छस वाव'जि वाव
दोध मा'जि सरस्वती सू'ति छस पानस ,,

ज़ंगि थाल अनुनस पान्य छस स्यधा
व्यूग लेखान छस कर्म लेखा
आत्मरूप वसुवुन मन किस थानस ,,

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

वासुक त_ शीश_ नाग छीर_ बरदार छिस
रतन्न हुंद मोख्तहार छुस ना'लि
घट्_ च़्नजि त_ गाश आव सा'रिसय जहांनस छम०

कुबेरजी त वरुण छिस खर्चबरदारय्_
सोरइ स्वर्गद्वारय् सू'ति सू'ति ह्यथ
रथ छिख गंडिम'ति मंज़ मांदानस ''

ड्यकस प्यठ चंदन ट्यो'क छुस तेज़्वानस
बुथिस प्यठ छुस करोर सिर्युक तीज़
छस दया गुलि गंडिथ तस दयावानस ''

अर्घ कर मनस त_ पोश कर प्राणस
"कृष्ण्_" पूज़ायि लाग सन्निधानस
ज़ाली पाफ गाली अगन्यानस ''

———0———

ब्रोंठ प्योम तुलमुल मंज़्_ मंज़ गोम
कन्न'य जय मुकन्द्_ जय मुकन्द्_ गोम

न्यथ सत्_ संग्_ सू'त्य मन म्योन न्यूथ
कतक्_ पोश_ रंग सोस्त मन म्योन न्यूथ
कोमल अंग सोस्त छुख ग्यशोम कन्न'य०

ग'जि म्य दुर्गत च़्नजि म्य हान
तव प्यठ द्रास बो बो'ड भाग्यवान
राज़ ह्यस्_ सायि चोन यन प्यठ प्योम ''

चाञि पूरणायि सू'त्य छोंच़्नरय् म्य च़्नो'ल
तृप्ति मीलिथ भोग लूभ मोह गो'ल
निष्काम्_ कामदीन्_ दाम्_ दोध म्य चोम ''

मथुरायि मंज कथ वस्_नुय छुम
लूक्_ हन्ज़ि ज़्यवि प्यठ खसनुय छुम
ब्रज गामस मंज़ बस्_न'य प्योम ''

सू'त्य सूत्य गूरि बालकन नेरना
कामदीन्_ व'छि रछनी फेरना

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

वुल्ट शहरस मंज़ छम को'स का'म ,,

भक्ति भावनायि हन्ज़ थनि ख्यमना
भाव् थन तल् कुय दो'ध चमना
शहर् मंज़ प्रेम् दो'ध चोम ओम ज़ोम कन्नय०

म्याञि श्रधायि को'बज़ायि हाव मुख
राज़स प्रा'रि प्रा'रि लोगमुत छु दोख
काम् क्रोध कमसु रूप मन करत् मोम ,,

त्रन क्रीरि गृहदय्न ल'जिमञ्च छि ठो'ल
प'ञ्चीमिस नविमिस करत् निर्मल
"कृष्णस"बोज़ प्यठ थो'द तुलत् बोम ,,

———0———

भय् रोस थव तम ज़यि सानो
दयि रो'टमय चोन दामानो

ताप् मन्ज़ि को'त गछ अनज़ानै
ब्रोंठ् छुम ज्यूठ स्यकि मा'दानय
न्यथ ननि' संदे सायबानो दयि०

मंज़ कण्डिनय् प्योस कम्ज़ोरुय
पत् कनि ह्यम छुस नन् वोरुय
अर्ज़न दीवने रथबानो ,,

साध सन्त गयि पथ कुन म्य त्रा'विथ
ह्यस् पखव'य पान वुफ् ना'विथ
ओ'न त् रो'न छुस् करान मान् मानो ,,

नाशि र'स्ति छम चा'न्य आशा
अ'निसुय अनि घटि मंज़ गाशा
अ'निसुय क्युत लदत् व्यमानो ,,

मत वुछत् म्या'ञिस कर्मस कुन
धर्मस ब्रह्मणस छुय घुन पुण
मो'कलाविथ निन च्च भगवानो ,,

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

धर्म् दान रोस्त छुस कर्म ह्यनुय
ब्रह्म ज़ा'नी रोस्त छुस दूशलद ह्यनुय
यिथ् गो'ण छुस च्य वर मंगानो — दयि०

सम्सारस मंज़ छुस ब् लाचार
ब्रोंठ छिम वा'ति म'ति कम कम कार
वार् थावतम अमि यमि सानो — ,,

आ'दीनन अवतार धा'रिथ
तारि गा'मत्यन भव् सर् तारिथ
"कृष्णस" ति तारि हा दयावानो — ,,

———0———

वो'थू न्यन्द्रे बाल् गूपालो
शाम् लालो गाश हो आव

अ'सि हुशियार रूदि रा'ती रातस
शाम प्यठ् प्रभातस ताव
हे मूक्षदाता प्रभात् कालो — शाम०

लोल् चावे सा'नि अशची धारा
वा'च्न तारा मंडलस तान्य्
ह्यथ छु च्नन्द्रम अमृत् प्यालो — ,,

सुलि् वो'थ्य रोश च्नटि पोश् थरिनय
घर् वात् नावि् छ्रनि'य क्यथ
कुरि च्य किच्न् पोशन मालो — ,,

गूपीयी द्रायि जमनायि श्रानस
बो'जि मच्न् कृष्ण् ध्यानस् मंज़
योर द्रायि ओर् आयि कमि हालो — ,,

लूक वुज़ना'वि सिर्यन् सा'री
आव रथ् सवा'री ह् यथ
सा'रस नेर त्रिज़गत पालो — ,,

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

क्याह करव अ'सि न्यचिव कोरि वा'लि
ब'डि नावदार खा'ली दस्त
धन छि गुज़रान कमि कशालो शाम०

क्याह करव अ'सि छि कर्महीन सा'री
यच्छ़ि दुनियादा'री मंज़
अढ़ खर्च त बो'ड अयालो ''

क्याह करव अ'सि छि चा'रो फियेरी
क्याह पकान नादा'री मंज़
छ़रि अथ हो'छि कथ मूर्ख चालो ''

हान त्रलि हे असि मान बडिहे
कर्म धर्म दान शूभि हे
लद त अन्न धन दीन दयालो शाम०

यिन मंदछन यीइ प्रोन नावय
दा'दि लदनय वावय कास
करत अनुग्रह करत कृपालो ''

क्याह करव अ'सि बन्धन त बायन
मन्दछन छि हमसायन मंज़
सा'न्य मोख थावतक सोंख हालो ''

हे मोक्षदात प्रभात कालो
मोह न्यन्द्रे मंज़ वुज़नाव
"कृष्णस" मंज़ च्यत शिवालो ''

आवय नन्दलाल बिन्दराबन
सू'त्य गूपियन गिन्द ने

टा'ठ राधा छस क्रेशन
तस छु आसुत वुछने
मथुरायि त्रा'बिथ र'ख्मण सू'त्य०

सब्ज़ारा छु वृदावन
कामदीन लजि खसने

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

पत् पत् छुख मनमोहन सू'त्य०

शाम् रूप् छस ज़ोतन तन
कामदीन आव रछ़ने ,,
ब्रजगाम् द्राव कामदीव ज़न

किसि प्यठ छुस गोवर्धन
यन्द्राज़ आव शरणय
अद् खो'श गोस मधुसूधन सू'त्य०

पूतनायि दो'प दो'ध ब् चावन
ज़हर बब् लजि भरने ,,
अकि दाम् गयि अथ् हावन

का'लि नाग ओस ज़हर हारन
तस ति पयठ लो'ग नच़्ने
बाल् कृष्णा छ़ल् मारन ,,

गूरि' बायि द्रायि पू'रि त्रावन
जमुनायि तन नावने
जाम निथ छुख पाम् थावन ,,

राधकायि हुंद आव ब्रह्मण
मुख़्त माल् मो'ल करने
मुख़्त् कुलि वुछि छु मन्दछ़न ,,

कै'लास आव शंकरशन
रास् मण्डुल वुछिने
कृष्ण ढयूंठुन त् गव हर्षगण ,,

निर्गुण सुन्द वुछ सतोगुण
जगतस आव रछ़ने
सत्य् देव् सत् नारायण ,,

परमात्मा छु परिपूर्ण
कृष्ण तस लो'ग वन्ने
विगज्ञान् वान् योगी ज़न ,,

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

कृष्ण् नावस छि का'त्याह गो'ण
जीव भाव लो'ग हरने
पा'नि पानस प्रज़्नावन सू'त्य०

डा'लि म'ति असि् व्यवहारन
असि लो'ग ह्यस् फिरने
आबदारन सुय छु तारन "

शोभ कार क'रि शूभिदारन
भक्ति भाव लो'ग घनुने
वेष्ण् रूप् कृष्ण् अवतारन "

कृष्ण् कृष्णय को'र 'कृष्णन''
कृष्ण् नाव लो'ग सो'रने
कृष्ण टोठ्योस "कृष्ण" अर्पण "

मुरली शब्दा असि गव कनन
वनन् छि राधा कृष्ण आव

जसुधा छु नन्द् गूरिस वनन्
ज़गत यस ज़ाव सुय असि ज़ाव
आ'स मुच्नरोवमस त् आश्चर्य छु ननन् वनन०

यिम गो'ण खटिम'ति अ'सि निर्गुणन
तिम ह्यथ अन्दर न्यबर द्राव
प्रकट क'रि श्री कृष्णुन ज्यनन "

उदव जियस छि गूपी वनन्
च्न हो'ख गण्यान वनुन त्राव
भक्ती सू'त्य छय मुख्ती बनन "

छुकय च्न आला ईकय वनन
सुय गोख च्न्अख युक्ती ह्यव
नत छुख अशक्त ज़ीवा ननन वनन०

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

गोवर्धन तुल निरंज़नन
प्यठ किसि यथ् पन बर्गस वाव
युथुय नाव अ'सि छिय मन् वाजि खनन   वनन०

भक्ती अमि सं'_ज़ क'र अर्जनन
सुभद्राह निथ ति बो'ज़वान द्राव
युस सू वरि तस पापन पुण्य बनन   ,,

द्रोपदी क्या को'र दर्योधनन
च्यतस याजि प्योस अख कृष्ण नाव
अम्बर अम्बर गयस वरदुनन   ,,

दोयुम कांह छुन् तस ह्युव ननन
कस आसि त'मि सुन्द ह यूव स्वभाव
वैकुण्ठ गथ प्रा'व बिन्द्राबनन   ,,

न्यथ न'नि अ'सि द्रायि मन्ज़ आंगनन
मुरली शब्द् याम कनन त्राव
न्यन्द्रे ह्वन्नन वो'ठ क'ड मनन   ,,

यि असि बन्योव ति कस छु बनन
सुय ज़ानि यस युथ बनिथ आव
न्यथ् ननि नेरव त् फेरव वनन   ,,

गूरि भाव प्राव् ना'वि आनन्द गणन
व्यध गयि स्यध असि दोध याम ज़ाव
सोरुय ह् यछना'वि तमि संदि चनन   ,,

बोज़ुन श्रवण त् करुन मनन
निध्यासन छु अख भक्ति भाव
साक्षातकार वुछत् योगी छि च्नेनन   वनन०

यछ'न रा'त्नन त् यिथयन घनन
रास आस् खेलान ती याद पाव
ती याद प्यथ अ'सिछि हनि हनि छो'नन   ,,

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

प्रेम तमि सुन्द गणन गणन
असि सुय छु बनुन च्र_मो नशराव
वनुन दुर्लभ छु युथ सत ज़ानुन वनन०

यि को'रि असि अक्रोरनी निनुन
गच्छ श्री कृष्णस युत वातु नाव
नतु यिख ह्यनु सानन्यन क्रूणन ,,

यि बूज़िथ उदव छु कृष्णस वनुन
इछ़ गोपिया अ'ख म्यति बनु नाव
भक्ती यिहुंज़ छम जिगरस सननु ,,

गन्यान दोघ वेद कामुदीनु थनुन
ह्यथ च्रय ज़ोनुथ म्य दामा चाव
बो'द्ध म्य'नी ज़न छ्य तनन तु गणन ,,

ब्रोम्ब्रस कुन यी छि गूपी बनन
तथ प्यव बोम्बूर गीता नाव
बूज़िथ तु भक्तियन मुक्ती छ्य बनन ,,

यम्बरज़लन छु अम्बर छोनन
मो रोश बोम्ब्रो अम्बर छाव
अछिन कुन वुछ तु तनि लाग तनन ,,

"कृष्णन" अथु अ'सि छि च्यय कुन अनन
अथनु सू'त्यन अथु मिलनाव
यिथि रासु अथ वासं ज़ांह छुनु छ्यनुनं ,,

श्री राज़ु राज़ेश्वरी आम'ति शरण छिय
पूज़ायि लागोय पम्पोश गुलाब मादल तु हीय
गौ'रीमु अम्बामाबुराक्षीम अहं ईडे

जगतमाता च्य्य छक मंज़ वदनस असनाव
निष्बौद्ध शुर्यन दयायि हुन्द दामान प्यठ त्राव
कल्यानु सोस्त थाव सू'त्य अ'शि फ्येरिन भरन छिय पूजायि०

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari, Digitized by eGangotri

बाहन सिर्यन ज़्चन चान्यन् हुन्द प्रकाश
चरण् चा'ञी करान संकट घटे छि नाश
तिहन्ज़े गरते सू'त्य देव मुकट जरन् छिय पुजायि०

लोका लोकन ह'न्दि सतज़न कारण देवगण
सिंहासनस चा'ञिस दिवान छिय प्रदक्षण
परम दाम'कि पुरुष प्यवान परन् छिय ''

षटचक्ररूपी चक्र नागस छि न'नि नेरन
तेज़चि रेखायि चोपा'र्य त्रिकोणस फेरान
योगी ज्ञानी प्राणी सुय ध्यान धरन् छिय ''

बौद्ध छन् वातन् कम रंग चान्यन रंगन छिय
कामेश्वरी च्य्य मन कामनायन मंगन छिय
यछि चाञि श्रद्धायि सोस्ति आय स्तुतायि परन छिय ''

पनन्यन् भ'क्तियन् दासन हुन्दुय प्ययनय पास
तिहन्दे पासै कुकर्मन हन्ज़ घट्य म्य कास
ज्योति स्वरूप हाव छ च्य्य भूतेश्वरञ द्रय ''

भगवत मायायि हन्दि रंग चाञ्य छि रंगारंग
चाञे सू'त्य छुय योग छुय भोग ब्यियि सत्संग
तप ज़प समाध क्रिया कर्म करान छिय ''

महामाया च्य्य छख चट असि माया ज़ाल
असि वोलमुत छुय गृहस्थकि कालसर्पन नाल
लु'गमु'ति सा'रिय पनन्यन-२ घरन् छिय पूजायि०

कम भक्तियि किञ भक्तावारन खरन छिय
कथ कामि लगव क्याह तगि ज़िन्दै मरन छिय
च्य्य टोठ सच्च चञि सूंत्य अ'सि ह्युन-२ भरन छिय ''

प्रसाद कर गाल ज़न्मा ज़न्मन हन्दि अपराध
सब्ज़ रंगय ज़लय मंज़ हाव पम्पोश पाद
इम तिम स्वरण यथ भवसरस तरन छिय ''

चाञे सू'त्य सृष्टि गइ नञी जय भविनय
मंज़ शून्य उत्पत स्थित सांपनी जय भविनय

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

कलि युगच महाराजरानी शरण छिय पूजायि०

कुनुय यलि ओस वुछन वोला तस कुस ओस
ज़गत यस ज़ाव मा'जा मोला तस कुस ओस
त्रिथ शक्ति चाजे एक अनेक स्वरण छिय "

च्य अज़प्पा गायत्री पांछ कारण ग्यवन छि गीत
निर्गुण छख गुणन चान्यन सू'त्य परतीत
चाजे सू'त्य कार अन्त:करण करन छिय "

अनेक नागन प्यठ चोन निर्वासन आसन
प्यठ शेश नागस विष्णु रूपय छख भासन
सा'रिय गुण चाजि महापुरुषय वरन छिय "

च्यय किति नाना रंगै भोजन रनन छिय
च्यय निशि सुवर्ण बानन् ल'दथि अनन छिय
नाना रंगव मिठायव थाल भरन छिय "

चाजे दयायि सू'त्य क'डि बड्यव बडि बडि नाव
निष्बोध "कृष्णस" निश वाणी हुन्द अमृत द्राव
परन् वाल्यन ज़न्म न हन्दि दो'ख हरण छिय पूजायि०

विनत बोज़ुम त्र_राधा कृष्ण
लायय लोल्_ नादा बो
भरय लोला परय लीला
करय हो हो करय हो हो

त्र छुक योगुक त्_ ज्ञानुक गुल
ब छुसना भावकुय बुलबुल
च्य लो'ब रोज़ुन ज़रय मा बो' करय०

आ: च्य छय पुम्पोशि पादुच द्र'य
वरुम छस भक्ति भावच हिय
त्र नय डेंशय हरय मा बो' "

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

च़ छुखना प्राण बो छस ना तन
सथा चा'ञी छि दो'न मिलवन
च़ नय आसख मरय मा बो' करय०

ज़लस मंज़ गाड ज़न छस ब'य
बु छस च्य़ सू'त्य ज़ल छुक च्यय
च्य़ रो'स्तुई वो'ञ द'रय मा बो' ''

ब छस च्य़ मेघवरणस मोर
रटिथ छस खोर रासस मंज़
नच्नय लूकन खरय मा बो' ''

च्य़ सर्वस छस बु कुमरी ज़न
करन छस बूलि मशिथ हन् हन्
छ़नय त्रा'विथ घरय मा बो' ''

च़ छुक च़न्द्रम ह्युव ज़ोतन
ककुव ज़न छुस च्य़ कुन बोलन
वुछ़्त नय अछिव ज़रय मा बो' करय०

च्य़ "श्री कृष्णस" ब छुस प्रारान
दितम दर्शुन इतम लारान
च्य़ रोस्तुय वोञ ब'रय मा बो' ''

हे दयावान् म्य ह्युव चो'र च्य़ कोताह प्रारे
असवनि मो'ख वसुवुन ओ'श छुम म्य धारे धारे

फ़ाक् दिय दिय गयि वां'सा यति क्याह हा'सिल आव
चारिरस म्या'निस वोञ टोठ मनस इयि आराम
च्यथ शांती व्रत धारे नित्त दुर्गत हारे असवनि०

छिन्' ठीकान प'कि प'कि कुनि अनेकन भवनन
च़ंच़ल कर्यमति अ'सि कु़त्य यम्य आवागमनन
कर्मफल सूत्य ह्यय भारे यथ ग्रट् अनवारे ''

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

रंगु रंगु डलनुक सामान समय ह्यथ् इथ प्यव
च्यम शरण आयि पननि करतूतुक तसल्ला गव
हे दयावान् दया चा'नी म्य केंछाह यारे   असवनि०

कु'त्य बदकार दुराचार परम्पार क'रिथ
कु'त्य बदबख्त गो'नाहगार ब् यकबार् व'रिथ
कम गछी क्याह च्य म्यते चा'न दया बो'ठ खारे   ''

मंदछा छ्यना को'र म्य वां'सि चाने चावे
ज्यवि किञ को'र वनुना नतु महिमा कुस ज़ाने
सुय वननुय भवसर तारि अदु कस कर तारे   ''

काल दिन्न डाल फिरव मालु करव र'ति र'ति कार
सुबह यलि फो'ल त् पगाह आलस्यकुय रो'ट दरबार
गयि वां'सा ग़न्ज़रान घ्रन असि वारे वासे   असवनि०

चानि रायि को'र म्य यि केंछाह ती थव मनज़ू'रय
नतु कुस ज़ानि करञ भक्ति क्रया गछि पू'रय
काम क्रोधस लोभ मोहस मदसय कुसु मारे   ''

मृतविज़ि ध्यान थवक प्राण सु म्य संघारे
वारु "कृष्णस" ने'रमल करि भव सागरस तारे
पद्म पत्र'क्य पा'ठि सर मंज़ ज़ल तस क'ति लारे   ''

मो'कलाव मंज़ का'दखानै
हा दयावानै वलो
हा दयावान् भगवानै हा दयावानै वलो

वूनमुत म्य छुम ज़ाला
मो'कलावि चोन अनुग्रह
छुम ज़लुर्य सुन्दु ह्यव निशानै   हा०

म्यथु न'वि सन्दि सायिबानै
छुस ब तापु तन्नि वुड'र मंज़
त्राव रूदाह आस्मानै   ''

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

मंगवुन छुस छुम न् बानै
बडि दयि करतम दया
बान् लदतम मान् सान'य्		हा०

प्रथ सौदा छु वान् वानै
गछि आसुन चोन भाव
अद् मेलि पूर् परमानै		"

छुम स्यठाह बो'ड कारखानै
अन्द वाति चाञि प्रयम सू'त्य
सत्यदेव् सत्य नाराणै		हा०

ही ब् लागै दान् दानै
द्रय च्य छय राधाई ह'न्ज़
यी मंगय ती दिम न्न पानै		"

सो'म्बरिथ छुम सामानै
वति लागुन च्यय तगी
अद् प्राव् आश्चर्य थानै		"

छुक कुनुय रूप भगवानै
द्वयतै छुम म्य भासान
त्रिभुवन सू'त्य अज्ञानै		"

द्वारिका ज़न प्रथ मकानै
वुछ बनोवुथ "कृष्ण" च्य्य
यि छु चोन सोन छुय बहानै		"

होश दिम लगयो पम्पोश पादन
हा साधन हन्दि साधो हो

योगियन हन्दि योग प्रा'णियन हन्दि प्राण
ज्ञानियन हन्दि ज्ञानो हो
चाञि प्रसाद सू'त्य सिद्ध छि तप साधन		हा०

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

अच्युत चा'नि सू'त्य न्नितकुय च्रेनुन
न'तु गछि मेनुन क्रंजल्युन् पोञ
प्रेम ज़ल छुय वुज़ान भाव् नागुरादान हा०

ब्रह्मण जन्मस इथ छम न ब्रह्म स्मृत
वुछ मु म्यानि राक्षस प्रकृत्न कुन
चा'ञ्य स'च्न भक्ति क'र प्रह् लादन ''

पूरण पुरुष छम चा'ञी लादन
प्रणव पान वंदहोय पादन दो'न
नाद् बिंदु कन थाव सान्यन नादन ''

विच्नार नेत्रन ज़ा'ञ्य गाश अन छि अ'ञ्य
हर् हर्मो'ख च्वय दिमुहोय व'ञ्य
निष्कल मन निष्काम राम् रादन ''

अनुग्रह चोन गछि आसुन साधन
क्याह छु पापन कमन ज्यादन प्यठ
दय छुक क्षय कर सान्यन अपराधन ''

छो'पि मंजै तस छो'च्नरा नेरिहे
अद कति वनिहे जेछ्र यूत
याद है प्ययिहेस वुजि छस लादन ''

"कृष्णय" चा'नि कपटञि तल नेरिहे
अद् कति पा'रिहे जाम् नुवि नुवि
पुश् कति प्ययिहेस हो'ज़न तु रादन ''

इतु दितु दर्शुन भस्माधारै
प्रारै कोताह काल
हे शम्भो ! रक्षपाल स्वामी
हे शम्भो रक्षपाल

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

हर् दित् दर्शुन मर् मर् कास्तम
आस्तम ना'ली नाल
लोलचि बबरे तर छुम द्रामुत
गोमुत छुम यन्न काल
दयायि ज़ल् अथ् बबरे सग दिथ
पनुनुय अथ् च्चय डाल हे शम्भो०

मोह सिंध्य उदरस मंज़ छुस ईरै
यति छुम सुम नतह् तार
तल् छुम जलकुय नीजर ह्यवान
पयठ कनि छुम घटकार
न'रि छिम हजि तय ज़ंग् छम बेसो'र
किथ पा'ठ्य मारै छाल ,,

फुचि मो'न्नि खो'परे मंज़ छुस प्योमुत
प्यठ् छुम कर्मुक ताव
अन्दरी अन्दरी ग्रक छम न्नामन्न
बत् लग्जि हुंद छुम छाव
शेहलन् खा'तर प्यठ् कनि छकतम
अक अमृत ज़[illegible] ,,

ईश्वर म्यान्यन पा'पी कर्मन कुसु करि शुमार
च्चय छुक अजिन'य अजघट् कासान
च्चय छुक बख्शुन हार
यमि किजि सारिय छिय च्चय वखनान
दीनन हुन्द दयाल ,,

पां'छ दोह यावन'नि श्रावण'नि सूरी
यी बूल त्याग् कस्तूरिये

मत वुछत् संसारचि शूभायि कुन
मत बुछत् देह सो'न् लंकायि कुन
व'दि व'दि गयि ल'दि ल'दि लूर्य लूरी यी०

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

संसार वन छु कस लारि क्या यस छु तस
जेठुन छु ब्रेठुन बस कर् बस
यति प्यव सारिनुई पुशि पूर्य पूरी यी०

व्यवहार बोज़ स्वस्त अन् धन् धार स्वस्त
गाटजार स्वस्त ब्रह्म विचार रु'स्त
मूनि ह्यिव गयि हूव्य ज़न वूर्य वूरी ,,

ज्ञान् वैरागुक बन च अधिका'री
संकल्प विकल्प सा'रिय त्राव
ममता पोंत थाव वथ युथ ना दूरी ,,

मोह ज़ाल् मंज़् नेरनुक उपाया
कर राज़हंसुन साया त्राव
अमर नाथुचि जानवर ज़ूरी ,,

क्रियायि खोत् छुय शौद्ध वासनायि फल
पूज़ायि खोत् प्रेमस त् मायि फल
"कृष्णस" रायि चाव्य आयि मनज़ूरी ,,

च़ित गोम शान्त चोन प्रेम् अमृत म्य चोम
ओम् श्रीमत् नारायण नारायण ओम

यमि संसार् मंज़् पत् लार्यम क्याह
दय नाव स्वरण रोस्त थावुम म् ज़ांह
चानि भक्ति भाव् खो'त् कांह परम सो'ख छा
पत् बन् विश्वुका ह्यव बादशाह
ब्रोंठुय म्य ह्यस फिर घरिकुय भ्रम गोम ओम०

मन वाजि नारायण नाव खनतम
संकट घटि मंज़ अनतम गाश्
रायि मंज़ घनतम मोक्ष पद वनतम
प्रकट बनतम परम आत्मा
कंव्य हिश बो'द्ध छम थ'व्य ज़न करत् मोम ओम०

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

नज़ि ज़ांह ज़्यनवहा नाज़ि ज़ांह मरहा
नारायण् नारायण् करहा निथ
चाञ्य नाव् सूंत्य भव् सागरस तर्हा
ध्यान चोन स्वर्हा थव म्य स्मृत
होश दिम व्यवहार राग द्वेश इथ प्योम् ओम०

हकरे बनि मंज़ अनुगगुराह त्राव
योर् ह्यथ क्या त्राव ख्यत क्या द्राव
कायायि म्याञि मंज़ छु आश्चर्य वथ्वाव
रूप छुस क्युथ क्याह छुस स्वभाव
निर्लेप द्रास पत् क्याह ख्योम क्याह चोम ,,

योर् अथ् वाहरित तोर् आख वटिथय
कोलि मंज़ फटिथय छुय हो'ख पान
क्या लारि धन् सोंबरित पान त्रटिथ्य
धर्म व्यवहार कर खटिथय पा'ठ्य
ज़न्मस इथ करनाव धर्मच का'म ,,

बडि ब'डि कार कर्य क'र्य क्याह प्रोवुम
थ्यकनोवुम छुम बो'ड खानदान
यश पुछि मान पुछि दोह राव्रोवूम
लूकन होवुम देह अभिमान
ह्यस फिर म्य मोह मस् च्यथ पान व्यसर्येम ,,

मृत विज़ि अज़ामल गंज़् रावतम्
मशरावतम ज़न्मकि करतूत
यम् किंकर बुथ मत वुछिनावतम
नारायण् नाव थावतम याद
युत छु त्युथ च्यथ "कृष्ण" प्रेम् दो'ध ओम ज़ोम ओम०

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

इमुय पत दिमय नाद
क्यथो याद म्य प्योहम

च्नय छुक ज़प_ यझुक ज़प
च्न'य छुक तप_ वनुक तप
च्न'य छुक साधन हुन्दुइ साध — क्यथो याद०

च्न'य छुक योगियन हुन्दुइ योग
च्न'य छुक प्रा'णियन हुन्दुइ प्राण
च्न'य छुक सत्तुकुई संवाद — ,,

च्न'य छुक ड्यकु च्न'य छुक टिकु
च्न'य छुक दूर च्न'य नज़दीक
च्नय छुक सार्यनुई हुन्दुइ आद — ,,

च्य छुक दो'ख च्न'य छुक सो'ख
च्य छुक परम आनन्द मो'ख
च्य छुक कम च्न'य छुक ज़्याद — ,,

च्नय छुक साधन हुन्दुइ संग
चाज्य तनि सफेद रंग
पंपोश हिव्य छि चा'ज़ी पाद — ,,

वेदन मंज़ छुक सामुवेद
देवन मंज़ यन्द्राज़ह
दैतन मंज़ हुक प्रह्लाद — ,,

रजोगण छुक ब्रह्मा
सतगोण विष्णो भगवान
तमो गोण गालान व्याद — कथ्यो याद०

धर्मचि ल'रि कर्मक्य बर
चाज़े सूंत्य अच्चुन छुम
च्नय छुक क'न तय च्नय बुनियाद — ,,

लोल'नि साज़ प्रेमक बंग
वायय सोज़ दमा रोज़
इतम योर ख़ुतम दाद — ,,

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

यमि युस ज़ोन सुय तमि मोन
त्वंय छुक म्योन कर्मय लोन
धनय त्व' बु लानिन वाद — कथ्यो याद०

संकल्प त्रावि रटि मन प्राण
वासना गालि दिइ समाध
चाञ दयायि प्रावि बिन्दुनाद — ''

''कृष्ण'' प्राव'नावुन ध्यान
सुय ध्यान यथ दपान ब्रह्म ज्ञान
ह्यथ शिवराग दित समाध — ''

धर्मुक धैर को'र खुति ह्य'रवनसुय
रंग रंग पोशन क'र्य अंबार
मादलि तुलसी आ'रवलि व्यनसय
नारायणसुय छु जय जयकार

घरि द्राय भावनायि सू'त्य दर्शनसुय
च्राय पर्बत राज़नुय दरबार
आयु चक्रेश्वरसय प्रदक्षणसुय — नारायणसय०

समेरू पर्बत कोह ख'ति सो'नसय
सिद्ध पीठ सार्य'वय प्रोव अधिकार
नाश गव द्रारिद्रस अ'किसु क्षणसय — नारायणसय०

जय जय छु गोकलुस त बिंद्राबनसय
जय जय छु नो'न द्राव कृष्णु अवतार
जय जय छु गोपियन त' गोवर्धनसुय — ''

जय जय छु वासुदेवनिस च्यड ह्यनसुय
जय जय छु देवकियि यमि च्रोल बार
जय जय छु दुखु अदंबंद रोज़नसय — ''

जय जय छु बलभद्रस त' अर्जनसय
भक्तिय मंज़ इम प्राययि सरदार
जय जय छु तथ विश्वरूप दर्शनसुय — ''

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

जय जय छु दशरथ राज़निस गुणसय
माजि कौशल्यायि बारम बार
जय जय छु अजोध्यायि रामजुव ज़्यनसय्   नारायणसय०

जय जय छु रामचन्द्रस तु लक्षमणस
सीता मातायि जय जय कार
जय जय छु भरतस तु शत्रुघ्नस्'य   ,,

जय जय छु वाव लोकपाल नन्दनसय
यमि गों'ड लचि सू'त्य लंकाइ नार
जय जय छु सुग्रीवसत विभीषणसय   ,,

मन म्योन पतु लारि मधुसूदनसय
काम क्रोध कंसस दिवनावि मार
होश कति हारि मारि मोह रावणसय   ,,

कोह आव ब्रोंठ दोह वोत प्ठ खनसय
तार दियि करि पंच़ालस पार
सतचि स्थित थावि शो'द्ध च़ित्त मनसय   नारायणसय०

वनवुन सोन गव मंज़ त्रिभुवनसय
थवनुय तस प्यव ग्यवनुय सार
मानवुन छु भक्त राज़स तु निर्धनसय   ,,

हीत अंकि मायातीत निर्गुणसय
महामायायि सूत्य विवाहकार
श्वेत पीत वर्ण सो'रन टोठ रातस घनसय   ,,

वनवुन यि केंछाह ओस प्रथ वनसय
ती वातनोव गोपियव गुपकार
वार आव शंकराचार उलसनसय   ,,

अनुग्रह चोन मंज़ अन्नसय धनसयं
वां'सि तात्र पोशनाव होशु व्वहार
"कृष्णस" तोष मंज़ पोशि वर्षणसय   ,,

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

मेव कनि मो'क्त वो'थ च़ंदन बाग़स
नागस प्यठ लौंग हंस दरबार
ज़ल् कनि अमृत नो'न द्राव नागस
बागस मंज़ च़ाव सन्त् अटहार
(हंस दरबार परम हंस दरबार)

बोद्ध क्या वाति अथ रागस त् त्यागस
वरनि आव शक्तियि त्रिभुवन सार
तस रोस्त क्याह छुम ती ब् पूज़ि लागस नागस०

त्युथ दशहार कर तिथिस प्रयागस
यथ दह इन्द्रिय छी दह अवतार
का'हिम द्वाद्शांत तस पूज़ि ब् लागस नागस०

नामरूप कल्पित ज़ोन ह्युथ रागस
असि ति भाति प्रियरूप पथ द्राव सार
शरमन्दगी च़जि मंज़ वैरागस ''

प्रियम् कर्म फलन'य यम नियम द्रागस्
प्रावनावि अनुग्रह की अंबार
तृतीय् पंपोश फो'लि लल् त्रागस ''

होश पोश फो'लि उद्योग् पोश् बागस
दास् भाव किञ आस ख़दमतगार
"कृष्ण" सेवा कर आत्मरूप् आग़स ॥

लथ लाइथ संसारस पत लारस लतिये

हंस नाद किस जानावारस
ना'लि छिस जाम् छतिये
वुफि तार्यम हंस द्वारस पत०

सूर को'र तमि अंधकारस
युस वो'र सूर् मतिए
ब'ति धारणायि ध्यान धारस ''

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

अथ तेज़रूप आकारस
फेर्_ ब्रोंठि ता'य पतिये
पोंपुर ज़न गथ मारुस पत०

लोल फंबकिस अंबारस
रहे म्य दिज्ञ सूर मतिए
स्नेह म्य छुम वो'ञ कति ब प्रारस ,,

आरबल मंज़ लोल नारस
दज़मच्च प्रेयम सू'ति'य
शेहजारस मंज छि आरस पत०

नित्य लगहा सत विज्ञारस
सथ भासनाव सूंतिये
स्वर फिरतु च्यत सेतारस ,,

वंदुन छुम पान यारस
अंदुन छुम यतिये
च्नन्दुन गोम देवदारस ,,

ग्रज़ व'छ सोंद्रय नारस
यति आ'सिथ छु ततिए
वनवनसुय कन ब दारस ,,

छाल मा'र्य मा'र्य लोकचारस
कर्य म्य पोशन फतिये
शेरि लागस जटा धारस ,,

"कृष्णन" दो'प बालयारस कर'हस नालमतिये
मेलि शस्तर त संगि पारस ,,

मधु कैटम मारवनि
शुद्ध शांत दोध चूर्_

युद्ध वेष धारवुनि
गूर्_गूर्_करयो

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

शह_र शह_र गाम_ गाम_
राम राम परयो
दक्षण उत्तर पछम पूर_ गूर०

छिय बसंत रंग जाम
इन चाजि फोजम श्याम_
लंजि लंजि पूर_पूर_ ,,

कर हृषी केश_ राग — द्वेषकिस शीशस
खंजि खंजि चूर_चूर_ — गूर०

बंबूर गीता छय — गोपीय गावान
स्वर्ग मंडलचि हूर_ — ,,

सिर्य दर्शन दित_ — मोह घटि मंज़ नित_
इत_ नूरकि नूर_ — ,,

होश अ'लिशि पोशकिस — गोशस प्यठ बेह
श्याम_ रंग_बंबूर_ — ,,

तुलसी छावय — हिय तन नावय
फलिल मश्क_ कोफूर_ — ,,

मनकि तेलन — निध्यासन टोठ
श्रवणकि कनदूर_ — ,,

राज़ योग राज़_ बोज़ — सा'नि ताज़_ ताज़_ स्वर
प्रेम साज़ संतूर — ,,

देह आभिमानुक — कुल ह_ययि छोंननुय
तीव्र वैराग सूर_ — ,,

हे हरिहर ! पाप — हर 'कृष्णस' वर
अनुग्रह पूर_पूर_ — ,,

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

यस छु हटि वासुक तस छु जटि पोत्र
गौंसोत्र हाय गो'सोत्र हाय गौंसोत्र हाय गो'सोत्र

युस देव सर्व देवन हुंद छु आद
सुय वरि पाप हरि करि प्रसाद

यस देवस छि पंपोश हिव्य पाद
हरमो'ख बर् तल् लायोस नाद
पादन तलि छुस पकान सिंध्य वोत्र गो'सोत्र०

युस ध्ययकनुय छु दीवयन त् देवन
तस देवस छि सर्व देव सेवन
आत्म रूप आसुवुन छु मंज़ जीवन
प्राण धा'रियन क्युत छु संज़ीवन
सुय नंग् नो'न च्योन दियि गंग् वोत्र ''

पूर्णायि सोस्ता छु नूर् भरि थ्यय
ब्रह्माडन पालना करिथ्यय
सुख मुख सू'त्य छु दुख हरिथयय
वर अभय सू'त्यन छुय वरिथ्यय
यमि सू'त्य पानस न्युव सोधि वोत्र ''

ज़न्मन हंज़ व्या'ध ज़ालवुन छुय
ज़्मन मरणकि गुण गालवुन छुय
माजि मा'लि संदि खो'त पालवुन छुय
सात्रि कर्म भुतुरा'च्न पालवुन छुय
आत्म बोधक रूद शांतियि शोत्र ''

प्रेम मस चावि मंशरावि हन हन
सत भावि नित थावि निष्कल मन
मोक्ष दावि करनावि आनन्द गण
सन्मुख न'ञ हावि ज़ोतन तन
'कृष्णस' प्यठ त्रावि शांतियि शोत्र. ''

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

तारि छुस गोमुत तार दिम भव सर
शंकुर इयिनय आर म्योनुय

यावुन ह्यथ गोम यिथ प्योम बुजर
स्वपन् वत ओस लोकुचार म्योनुय
न्यथ हाव शिव् रु प मंज़ च्यथ मंदर् शंकर०

माया ज़ाल वठ रठ चठ अकि दर्
लबि कनि थाव परिवार म्योनुय
अन्तर मो'ख सो'ख भर् दोंख हर् ,,

वैराग मछ़् ज़ोर् सू'त्य त्याग् खंजर
दीह अभिमान मद मार म्योनुय
जिंद् थाव वां'सि सू'त्य स्यज़ुर पज़र् ,,

वासनायि म्यानि मंज बस प्रकृति पर्
यछि पछि स्वसुत थव आचार म्योनुय
लछि प्यठ प्योमुत छुस करतम खर् ,,

क्याह कर् सारी वां'सि कोंर म्य घर् घर्
कस अकिस वोत वोपकार म्योनुय
नश्नकि वेल् पशुनुय ब्ययि अर्सर् ,,

वासनायि अरखोरस कर्नाव दर्
चन्दुन कर देवदार म्योनुय
यारि ह्यव सब्ज़ कर अद् वदंस दर् ,,

अनु दानु ज़ानि मंज़ ख्यन् च्यन् उदर
सुय आहार पूर्ण् व्यव्हार म्योनुय
अस्तुथ च्य़ कुन कर् शांती श्रुकि पर् ,,

सास् बज़् वल्ट् रायि कोह ज़न गयि खर्
घास् कच्चि ह्यव व्यस्तार म्योनुय
दय छुख लय कर निर्णय सर् शंकर०

प्राक् ज़न्मचि खडियय आयि गयि खर्
अति क्याह पकि गाट्ज़ार म्योनुय
थो'द तुल पथर प्योमुत प्यठ थर् शंकर०

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

प्रारब्ध फल भूगनुय छुम तु क्याह कर्
पो'त फेरनस छुमनु वार म्योनुय
प्रानि वैर् मंज़् कड नवि धैर्य सू'त्य दर् ,,

दोह आयि छ्रोह दिथ अन्दर् न्यबर्
अज़ ननि कुस आसि यार म्योनुय
परद् थाव कोंग पोश हरद् क्यथ गछ् बर् ,,

छ्योट तु श्रूच्न मत् वुछत अछ्‌तु म्योनु घर्
शिवलूक् ह्युव बनि द्वार म्योनुय
यम् दैत खोच्नन सू'त्य अभुय वर् ,,

छ्यप्ट वासना म्या'ञि छल निर्मल सर्
काम क्रूध चमार मार म्योनुय
ब्यल् पत्र् सू'त्य वा'तिज ज़न वर हर् ,,

विच्नित्र पूज़ि च्यत् नेत्र कमल् कर्
इन्द्रेय शुत्र रुग हार म्योनुय
ब्यल पत्र सू'त्य प्रधानु करनेश्वर ,,

पाद थकि प'कि प'कि नाद करतु अन्दर्
खलवत बनि दरबार म्योनुय
ज़गत'चि रक्षायि हंज़ व्यनथा कर् ,,

उपकार सू'त्य पनुनुय छुख वों'दर
र'च्नि वति लगि रोज़गार म्योनुय
दात नाव कडनावतम ज़गतईश्वर् शंकर०

घटि मंज कमज़ोर को'त तर् संगर्
गगरायि खोंत गो'व बार म्योनुय
मेघ् वर्णु् तीज़ दिम वुज़मल ज़न तर् ,,

अमृत् वर्षण् चा'नि गंगा धर्
व्यत च्यतु गछि नर्क् बार म्योनुय
धर्म राज़् शेहजार फिरि बडि आदर ,,

उरद् गथ तिछ दिम उथ उदव् गथ हर
ज्यूति रूप थव आकार म्योनुय

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

रेह ज़न गगनस खसनुक स्रेह बर्   शंकर०

वदनस मंज़ असुनकि मो'ख ध्यान दर्
योग् ह्यस थव व्ययवहार म्योनुय
दज़नस मंज़ शेहजारा कर्   ,,

प्रेम बाग़स मंज़ पान बडि अम्बर
फो'लनाव च्यथ सुफ़ार म्योनुय
अन्तकाल् हरद् वाव् सू'त्य क'ति गछ़् बर्   ,,

प्रतेक्ष भास च्नन्द्र् कला शेखर
कास अगिन्यान अन्धकार म्योनुय
देव् दीह प्रावनाव ज़ीव् भाव थव म् ज़र्   ,,

थान् थान् प्यठ ही विश्वम्भर्
च्यथ बो'द्ध मन प्राण खार म्योनुय
छ्यन मातर मुच्चराव क्षण् मातर्   ,,

नवद्वार त्रो'परन यलि पत व्यसर
ब्रोंठ शमरावती छु सार म्योनुय
च्यथ ज़ेन नाव आश्चर्यकि आश्चर   शंकर०

अनुग्रह अनकूट् हे दयासागर
तृप्ति कर भर घर् वार म्योनुय
कर्म् हीनन वर दयि घरसुय छु लूट हर्   ,,

भक्ति भाव् वाज़रस म़ज़ चाग्नि आसर
पो'क्त भाव प्रावि मो'ख्तहार् म्योनुय
देव लूक फलि फलि रटि हटि गंडि लर्   ,,

दीह भ्रम् रोग छुम पन्नी सूंत्यन् जर्
आवागमन आज़ार म्योनुय
च्य मकुन्द् वासना चरण् कमलन जर्   ,,

भूत प्रीत पिशाच्न डींशित क्याज़ि डर्
वेह कासे'ख शेहजार म्योनुय
आवेश करतम वरतम महीश्वर्   शंकर०

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

कर्पूर् गौरव करुणाव् तार् तर्
भवसुर वो'ञ्य च्यय मटि तार म्योनुय
च्यथ फिरनाव बेहनाव न्यथ सतुरु ,,

ज्यो'न मरुण युन गछ़न् भ्रम ओस प्योस पर्
मोह घटि खो'ट आधिकार म्योनुय
गाश दिम च्यथ आकाश वुछ् ज़र् ज़र् ,,

कम कार करनि आस ग़म कास दम भर्
यार छा यि भ्रम सम्सार म्योनुय
हे अगम अपार हे दिगम्बर् हर् ,,

लूकु हन्ज़ि ज़्यवि परनाव परात पर्
पर नय महिम्नापार म्योनुय
पुष्पदन्त आचार्य बन नन्दुकीश्वर शंकर०

सत्संगु रंग दिम रायि मो'ख बंग पर
ध्यान् सूंत्य प्राण संधार म्योनुय
यति तति शूभ अन इन् वति प्यठ मर् ,,

अज्ञान् काठ ज़ालिथ भस्माधर्
तीज़ रूपु थव प्रकार म्योनुय
दीह कतुरिस दु'ह कास भास भास्कर् ,,

च्नितु पीडा कास नतु यति क्याह कर्
मृत विज़ि छांड हितकार म्योनुय
हे इष्टदेव भ्रष्ठ प्रकृत थव मु ज़र् ,,

पाप गाल अग्न नेत्र सू'त्य जटाधर्
च्यय छुक विघ्न हर्तार म्योनुय
निवरथ दिम अछ क्याज़ि लगनम दर् ,,

शुर्य तु बा'न्न वुछि-२ ओ'श त्रावान जर्
कुस वदुन सिद्ध करि कार म्योनुय
इनु त्युथ मर् ध्यान निशि गछ़् व्यसमर् शंकर०

वां'सि हुन्द करतूत ब्रोंठ् कनि गछ़ि खर्
मृति विज़ि ती निवार म्योनुय

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

मन निम परम सुख दिम परमीश्वर शंकर०

ही महेश जगतइश ही विशेष ईश्वर
छति कीश बोज़ ज़ार पार म्योनुय
दीश-२ फिर म वातनाव पननुय घर ,,

मोहमस च्यथ छुस दूश लद फिर म्य स्वर
आंशुतोषि केंछाह च़ यार म्योनुय
"कृष्णस" मोक्ष प्रावनाव अमरीश्वर शंकर०

सतज़न बन मन कर कैलासै
बस्तियि मंज़ वनवासुय रोज़

चित्त किञ भस्म मल वल अ'तलासुय
साधु प्रकृत्न सन्यासुय रोज़
ॐ शिव शम्भू कर अभ्यासुय बस्तियि०

विषय त्यागुक धर माघ मासय
सत्संग कुय उपवासुय कर
आत्म तीर्थ मन नाव मोह मस कासय ,,

पान प्रज़ना'विथ पा[illegible] [illegible] आसय
सर्व संकल्पन ग्रासय क[illegible]
तल प्यठ त्रा'विथ त्राव तलवासय ,,

महामाया हुयथ रछुवुन दासय
शिव नाथ हृदयावासय छुय
तोति तस ज़ाव द्राव साधु सन्यासय ,,

श्री कृष्ण महाराजन ख्यूल रासय
गोपीय शुराह सासय ह्यथ
बाल ब्रह्म_चा'री तोति नोव [illegible]सय ,,

'कृष्ण' अं'दरिमि त्याग मल सूर सासय
न्य'बरिमि राग उल्लासय कर
शुकदेवस गव यी वनिथ व्यासय ,,

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

★ संसार अपुज़ आसनुख उपदेश

सर् क्रो'र सम्सार नदुरुय द्राव
डल मु होशि च्यतकी पम्पोश छाव

बन्द कर लूभ संक्ल्पुक वाव
पानै पकि प्रारब्धुचि नाव
कर पूर्व कर्म क्यन पम्बुछन क्राव डल मु०

सम्सारस मंज रोज़ निर्मल
वुछ तु ख्यलु वथुरस लारि मा ज़ल
पा'ञिस मंज़ आ'सिथ त्राव त्राव ,,

मायायि मंज़ निरमाया रोज़
सो'र रोज़वैरागु रागु स्वर बोज़
सत्संगु क्यन बंगु न'य कन थाव ,,

मायायि ह_यलि खोञ्न पतु छस खे'ज़
समद्रष्टि छ्टवारि पकु नावि तेज़
धमु' उद्योगु कमुं खूरि वायुनाव ,,

सूऽह्म हमु वाय मोहने शा'ठि
ज़ा'नि नाव पकु नाव स्यज़ि वति पा'ठि
सहस्रदलु डल पद्मु आसन प्राव ,,

अन्दुरि वैर छो'र रोज़ नरकी पा'ठि
स्नेह मो'रतुय पख सतज़नु गा'ठि
लाभ प्राव प्यञि ह्युव छो'ञरय मु ह्राव ,,

परदु तल्य क्रय कर वुछि क्रयवि जूजि
अन्दरी प्राव गोर ज़न गन्यानच गूजि
न्यबरी देह_ अन्धकार_ कों'ड फुटराव ,,

अतु गतु कुकिलि पोंट युञि ज़न मु येर
जुवर_कि पा'ठय कोसंगु मंज़ु नेर
मो'ख्तु छुय सतज़नु बाज़रुक भाव डल मु०

Collection of Late Arjan Nath Handoo. Rainawari. Digitized by eGangotri

मनु क्यनुबो'बि दयि लोल लाभ भर
म्येलि सत्गुरु सौदागर
भावु वावु होशु बुमि पोश फो'लुनाव डल मु०

सम्सारु बोर लोच़्र_राव त्राव फ्रख
गिलि हन्दि पा'ठि डल ज़लु प्यठि पख
राज़ हमसु पानस अं'ज़ मु गंज़राव "

शो'द्ध वासनायि शम रटु नय कम
शमु दमु वुफ त्राव दि मु किसि दम
थदि होशुकि गोशु पान वुफुनाव "

ज़बि कुकि हन्दि पा'ठय थोंद मु तुल फोंद
बोध रोज़ सूद छुय आत्मु बोध
पोशनूल सन्दि पा'ठि कृष्णु गीत गाव डल मु०

ज़गतचि तापु तच़्रि वुड़रि निशि च़्रल
साथु कर सतजनु कुलि स'य तल
ज़ल च्यथ फल ख्यथ लाग डुलिकाव "

गुरु शब्द कुकिलि ज़न बल शम्भू
कर :। क'कुर सन्दि पा'ठि कुकुरो कूं
रंगु दूशि संग दूशि दीह मु रावु राव "

वासनायि गाडि लूभ वोंटु मो द्याव
मनुची तृष्णा कुञि किञ त्राव
बो'ज़ु भ्रगु सन्तोषि ताज दिथ थाव "

ज़ीवु दयायि हुन्द कर व्यवहार
अविद्यायि हारुवचि भेदु न्याय हार
अविनाशु नीलु क्राशि बाशि करुनाव डल मु०

वोंदरकि लूभकि क्र'म तय मच्छ
शो'मरिथ सन्तोषिचि गोफि अछ़
कामनायि सीमञि बारव मु द्याव "

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

रज़ि छुय सपु' भ्रम नज़ि छुय नाश
पज़ि पज़ि वुछ्तु च्यथ आकाश
दज़िथ रज़ि ह्यु व बन तीज़िथ न'टि भाव डल म०

वीर् कुबीर छुख छी नु धनु ध्यार
समुयिकि सोंख दो'ख वीरुत मु हार
वीर् चाजि दारि निशि बो'वि नु माव ,,

सो प्रकाशु बो'ज सोनुलांकि व'थुराव
वेज्ञार न्येत्रव नज़राह त्राव
रंगु रंगु बेरंग वुछ्तु क्युथ द्राव ,,

शांत शालमार छुय शिवु अनुग्रह
अन्दरिमि त्यागु न्यवरिमि रागु बेह
सन्यासु व्रज्ञ अतलास पांराव ,,

राज़ ऋषि नगरु मंज आस वनुवास
निषकाम रोज़ स्त्रिय आ'सिथ दास
जनखराजु राज़ुसीय मंज़ याद पाव ,,

शक्ति पातु निशातु शिव मंडल
प्रावि छावुन भख्त यवु खंच्र राज्ञ हुन्द डल
आलस परमानन्दु मस चाव ,,

निषकलु रूपु कुय पो'लावा खे
निरमायायि हंज़ चाया च्य
मुह वति थकुनुक रोज़ी नु ताव डल म०

च्यथ तकियि दिथ प्यठ सथ फर्शस
बो'ज भारिया आत्मु पुरुषस
योगु बालादरि प्यठ लरि साव ,,

विवेकु वयु सरु मंज़ कर स्नान
अद्वयोतु पाजि नाव मन तय प्राण
तुरिया बागु योगु न्येन्द्रा त्राव ,,

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

हमस_ नाद_ स्वर कर शाह तूल्य तूल्य
मांडक शब्द मिनि मूडख बूल्य
पवनस त_ गगनस सू'त्य मिलुनाव — डल मु०

अनजल भोगनि ग्रट_ ज़न फेर
कर्म_फल_ छल तल_ ओट ह्युव नेर
ग्रख दीयि लख त्रख चा'व्य अख पाव — ,,

स्यज़रुकि सो'थि पख सत_ स'य सूल्य
अंज़ ताव्य वत_ गथ आयि गयि कुल्य
त्याग_ खोरन लाग वैराग_ ख्राव — ,,

भव_ सर_ सा'रुक कड अरमान
मुह ग'ति क'दलुस नीरिथ ज़ान
कर्म स्यज़ बो'ज़ नाव स्यज़ पकुनाव — ,,

यकजा मिलविथ पां'त्र'वय तोंथ
दोह अग्नबोटा सू'त्य ह्यथ
राज़_ नेर सा'रस कुस छुय वाव — ,,

परज़ुना'विथ अमर पान आस — डल मु०
ख्यथ च्यथ ह_यथ दिथ भाग्यवान आस
सू'त्य बाजन हंज़_ थविज़ि न_ ग्राव — ,,

राज़_ योग अभ्यास_ मन_ डूंग_ रठ
हठ कर्म_ इन्द्रेय वगुव्यन म_ त्रठ
फट्नकि खोफ़_गाल वासनायि वाव — ,,

दोरि फिरि मो'कलख वुछ वाव_ माल
बाल पान_ आलविथ बाल_ रठ बाल
पूर पख दूर छुय नख_ पा'रि त्राव — ,,

मन ज़ेन सो'ख प्राव स्यध गछि योग
इन्द्रेय खल_ त्राव भूगन भोग
निर्मल आस कास दीह भ्रम_ भाव — ,,

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

साध_ प्रकरन्न शाहज़ाद_ घरि नेर
राद_ २ सारा क'रिथ पथ फेर
सू'त्य आख ह्यथ यि ख्यथ ति आनन्द_ प्राव डल मु०

पछि वछि सू'त्य प्राव ग्यान_ गूरि भाव
च्यथ च्न डि_मंज़_आल_ दो'ध परज़ुनाव
निर्णय_ खो'र ख्याव चाव वीद_ गाव ''

कर्म_ के ध्यान_ दानि धर्म_दो'ध मंद
औशध नेरि तथ जसुधानंद
तस छु भोग भूगिथ ब्रह्मचा'रि नाव ''

यिछि प्रकृन्न मोक्ष दायक नाम
व्यवहारस मंज़ रुद निष काम
ल्यम्बि मंज़_युथ सु पम्पोशा द्राव ''

मोह स्यन्धि तारी करनाव तार
"कृष्ण" बो'ठ खारि गंगाधार
भवसर_ आवलनि कीशव नाव डल मु०

★ लगता है कि यह 'नज़म' रज़दान सा० ने डोंगे मैं डल झील की सैर करते करते फी-अल-बदी (extempore) कही है, जबकि उनको अपने गुरु भाइयों ने इसकी फर्माइश की।

काश्मीरी भाषा के काव्य साहित्य में यह कविता प्रकृति के सुन्दर दृश्य के वर्णन का एक अद्वितीय नमूना है। मकबूल क़राल वारी जैसे कवि भी राज़दान सा० के सामने इस मामले में असमर्थ लगते हैं, हालांकि उन्होंने प्रकृति के वर्णन के लिए 'गुलरेज' में फार्सी के रंगीन शब्दों का भरपूर प्रयोग किया है। इसके विपरीत, राज़दान सा० ने स्वच्छ काश्मीरी भाषा और चुस्त शब्दों के चयन से ऐसे लुभावने, रमणीय और सुन्दर दृश्य पेश किये हैं जो कोई अनुभवी चित्रकार भी सैंकड़ों रंगों के प्रयोग से नहीं कर सकता।

झील की वनस्पति, फल-फूल और पक्षियों के वर्णन से स्वतः घाटी के इस आकर्षणीय जलखंड का मस्तिशक पर एक अमिट सा सुहावना नक्शा खिच जाता है, जो भुलाया नहीं जा सकता। आध्यात्मिकता और भक्ति दर्शन का पहलू तो अलग सी बात है।

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

पां'छ़ बंद

भ्रम गोम डींशिथ. सो'रमस त_ साज़स
नीलिस माज़स प्यठ ओस पोस्त
विनथा क'र म्य राज़_ योग_ राज़स
शरण गछ़ित म्य तम्य मोह कोस

सर्व आत्म_ भाव_ व्यव्हार दितुनम
सत च्यथ आनन्द अमृत_ खोस
दो'पनम चोंन ह्यत_ वोंञ्य प्यत_ पायस
दामा च्यथ शान्त निष्काम गोस

ज़ोनुम पा'लस त_ पाकस मंज़ छु कुस
बूज़िथ मद_ निशि प्योस कां'प्योस
दो'पनम च्यथ_ शुर को'छि क्यथ लल_नाव
दिस योग_ दो'धुह्न बो'ज़वान लोस

पुरुष त_ त्रिय यमि ज़ोन एक_ रुपय
तथ व्यव्हार_ दृष्टी लग_होस
यन्द्रेय शत्रुय तमि सन्दि मित्रय
नेत्रय च्नरण_ कमलन वोंथरोस

मामस व्यकार त्रा'विथ ज़ोनुम
पानै दीह_ भ्रम_ निशि व्यस_रियोस
यमि युथ विशेष_ उपदेश को'रनम
सुय पाञ्य. पानस श्री 'कृष्ण' ओस

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

वाख

दमी ड्यूंठ'म सो'न्दर त्रिया
दमी ड्यूंठमस हो'खमुत पान
दो'पमस कति छुय गहन् तु यावुन
कति शुर्य भांय बन्ध कति सामान
दो'पमस नाव क्याह छुय हे त्रिये
दो'पनम नाव आसुम भाग्यवान
वाव प्योम फ'किराञि ज़न छस भासन
प्रथ कुनि चीज़् किञ छस हैरान
दो'पनम कु'त्यन योनि छुम छुनुमुत
कु'त्याह करिम'ति छिम कन्यादान
ग्राम'ति कुल्य आसिम रोज़ गारस
कूत आ'सिम तिम कमुनावान
दो'पमस थोक छ'न यथ संसारस
प्रावुन गव त्रावुन अभिमान
दो'पनम मन् किञ सो'रनुय त्रोवुम
"कृष्णन" होवुम करुनुय मान

समिव करव अथव वास
पकिव रास गिन्दुने

शे रे'थ सांपनि कुनिय राथ
गोपीनाथ नच्न्-न्य लो'ग
वहर दोह गव पहर मास — पकिव०

यथ बाल् पानस दिमव छोह
युथुय दोह छु गुनीमथ
सासस युगस करव सास — ''

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

शुर्यन बा'च्नन लबि कनि सा'विथ
वछि तल_ त्रा'विथ नेरव ना
सू'त्य सू'त्य ह_यथ बेंनि पोंफ मा'ज मास　　　　पकिव०

वनिव कस छु कृष्णन लोल
ज़वुक ज़ुव तय क'मि क्याह च़ोल
निवुवुन मन दिवुवुन विकास　　　　,,

तो'हि कति सोन ह्यु व बन्योवु_ हाल
अद_ कति ज़ा'न्यून तुहि नन्दुलाल
नेरव ना पारिथ बियि उल्लास　　　　,,

अ'सि कमि बापथ करव त्याग
अ'सि गुछि आसुन कृष्णु_ राग
सुय गव तप ज़प योग-अभ्यास　　　　,,

कथु_ साञि महामन्त्र ज़ान
वुछुन सोन मान उत्तम ध्यान
ख्यो'न चो'न सोन गव बो'ड उपुवास　　　　,,

बर दारि व'छ_त्रा'विथ नेरव
वथ ल'ब त मस्ताना वति फेरव
दयि लोल_ रोस्त क्याह लयि अ'तलास　　　　,,

ह्यस ह्यथ गव मुरली वायन
दीवच्नन त_ गन्धरवु_ कन्यायन
य'म घरि रोज़_ तिम गयि उद्वास　　　　,,

अपा'रि नादा यपा'रि वादा
च़ोपा'रि राधाकृष्ण छुय
प्रथ कांसि सू'त्यन करिथ अथुवास　　　　,,

जसुधा माता गुरुस छय मंदन
नन्द_ गोपु_ नन्दुन गिन्दन छुस
दोधस तु_ थ'ज्य छुस करान ग्रास　　　　पकिव०

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

अथु छुस कुयि मंज़ न्यबर कडन
च्रखि मंज़ प्रेयम बडन छुस
खो'श इवुन छुस करान त्रास पकिव०

कन्युन थ'व्य गयि पलन पोत्र
नच्नन छु मुंज़ नारद गो'सोत्र
शीन ज़न मोह गो'ल तु च्नोंल तलुवास ,,

रातस दोह गव तु व'हरस राथ
शामस वो'छिनि आव प्रभात
पानय सांपनुन कालस ग्रास ,,

असि मंज़िम्यन छुस बो'ड पास
करुणावि अ'सि शुराह सास
"कृष्णस" तु श्री कृष्णस अथु वास ,,

सत्संगुक महिमा

सतुक श्रवण कनन मंज़ गव
अगम अपार दिगम्बर स्वर
सत पुरुषन हुंद शमय त दमय

शब्दा बूज़ च्नो'ल घरुयुक ग़म
सम्सार व्यवहार भ्रमय ओस
सत्संग समागमय ओस

बागा सोन्दर ज़न स्वर्ग द्वारा
आश्चर्यय वत्त सामु वेदुक स्वरा
सत पुरुषन हुन्द शमय तु दमय

वज़ान सन्तूर सितारु साज़
मद्हम ह्यथ ज़ीरु बमय ओस
सत्संग समागमय ओस

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

ठाकुरजी मनवटी

गा'फिल म्_बन पायस प्यतो
तस जानि जानस वोंन दितो

दो'र च्चयु_ पनुन मो'र ज़ोनथुय
रज़ि गोय सो'रुफ पो'ज़ मोनथय
सत्संग गंगि अमृत च्यतो

दिल साफ थावतो आईनै
मल गाल तुल तस च्च_खय
छो'टि पा'ठि कथ मटि च्य ह्यतो

दिलनय सहल को'र मुश्किलयु_
ब्रेठ्योक त_ ज़ेठ्योक मंज़िलय
स्यज़ि वति पकनस प्यठ इतो

यलि च्चय दिलस सैकल करख
च्चलनय च्चय शक त्रावक च्च_फ्रक
शो'ध सात्वकी भोज़न ख्यतो

ज़ान ज़ानी जान छुय पान पनुन
छुयनो च्चय केंह छां'डिथ अनुन
सत्संग द्वार वार्_ पय ह्_ यतो

वननुय छु केंह बननुय छु केंह
'ठोकुर' पान पन'नुय छु केंह
गुरू मो'ख सर्_ कर वर दितो

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

राम लीला चा'त्रिय वनय
श्याम् सो'न्दर नारायणय
तन मनै अर्पण बनय
श्याम् सो'न्दर नारायणय
निर्गो'णय निरञ्जनय
श्याम् सो'न्दर नारायणय

चात्रि लोलुक छुम होल गोमुत
देहकिस ज़िसिस'य मंज़ ब' प्योमुत
वन कस दुख म्य छुम क्षण' क्षणय

यमि योनीय छम ह'ज का'रय
गोस् त्राव वोञ म्य छम को'स ता'रय
मो'ख हाव दुख किञ आस ह्यनय

नट बनि बनि नाटक हा'विम्
ईश ! कम कम वेष बदला'विम
नि'न् आस ग'छि ग'छि इन् इनय

का'तिस कालस वो'ञ्य ब' प्रारय
बोज़तम आ'न्नर ज़ार् पारय
आर इयिनय रघुनन्दनय

यथ वेषस म़ज मो'कलावुम
योगानदन्स मज़ म्य सावुम
मोन्न् आनन्द निर्बन्धनय

नाश सस्तिस यथ संसारस
कमि बापत पत् पत् लारस
अतगत् पठ न्नटुम पन् पनय

कालस छुन् करार क्षणस
ग्रास करान रातस त' द्यनस
चात्रि दर्शन् अमर बनय

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

कालस निशि उपदान संसारुय
कालि तथ बनान आहार'य
मंग' क्याह तंग आस मरण-ज्यनुय

भोगन मंज तृप्ती म्य न' आये
युथ मृगिञन मृग तृष्णाये
अमृत चनकुय छुम म्य बिनुय

श्वान नीरस हडन टकान
ट'कि ट'कि पनञे ज़स्मु ब्रकान
रस र'तकुय तस रसगणुय

कोमल पाद्यु कमल मलय
हे शरणागत वत्सलय
को'त बु ञ्ञलय च्यय निशि रो'ज़ु छ्यनुय

सो'ख केवल चा'ञीय स्मरण
सो'ख केवल चोनुय दर्शन
हे निर्द्वन्द्व आनन्दगणुय

'ठाकुर' च्यय हृषी केशय
बोद्धि पर युस निश्चल रागुद्वेषय
सर्व आत्मा च'य सनातनुय

प्राव कैवल्य हा केवलो
योगु चाञे बनि आज़ादी
भोगु सो'खा हा निष्कलो
यलि ञ्ञलनं पाप'नि लादी

चोन दूरय कव ह्यकु ज़'रिथ
कमि बलै ह्यक च्यय निशु इथ
छुमनु करार ग़म चाञि गलो

योगु०

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

गर्भ नयन मंज़ फीरि फीरी
वुछ म्य लो'कचार यावुन तु पीरी
बांड ब'नि ब'नि कम जामु वलो योग०

पय अज़ताम लो'बमय न चोनुय
धर्म हीनस म्य ओस कर्म लोनुय
नठ छम वति निशि मा डलो ,,

मनु दर्पण छुम मा'लु गोमुत
मोहकुय मदिरा छम म्य च्रोमुत
ज्ञान गंग ज़न मलु कलु छलो ,,

नारायण कस गछु शरण
छो'टनम किथ पा'ठि ज़न्मु मरण
हे शरणागतवत्सलो ,,

यत्र कालि चाज्ञि वते द्रासय
बुजरूकुय प्ययिनय पासय
बुजरस त्रा'विथ वोज्य मु च्रलो ,,

मनु को'फूर अनु चाणि वेरे
रत्न ज्योती आलवै शेरे
गाल मल "ठाकुरस" निर्मलो ,,

सो'ख शब्द दर्शन चाने — आनन्द गणटाठि म्याने

रात द'यन करान छुस चिन्तन
क्षणु क्षणु छुम चंचल मन
ईश्वर दूरयु चाने

राग चोन युस छुम मनसुय
सातु सात' रातस दुंयनसुय
म्योन दो'ख च्मय रूस्त कुस ज़ाने

आनन्दगणु०

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

राज़न हन्दि महाराजे
टाठि म्यानि आदन बाजे
लीखित म्य क्याह ओस लाने आनन्दगण्०

योदवै च़्न' म्याञि कथ बोज़ख
दूरि दूरि चूरि क्याज़ि रोज़ख
रोज़ चूरि यथ गोफायि म्याने ,,

यच़्रकोल च्य त' म्य दूरय्
क्यत् ज़ोरूत इथ करूथ न' पूरय्
अद् कर यि ज़'ट यलि प्राने ,,

ओसुस ज़ल बो'य निर्मल
मोह कठ्कशि कोरनम छल
वचुनम कचि शीन् माने ,,

त्रेश हतिसय् मनस त्रेशा
अमृत वर्षन ब' डेंशा
बनि शीन अकि कटाक्ष चाबे ,,

कर्म् किञ्य वेष कम दा'रिम
गर्दभ बुथि बा'र्य सा'रिम्
वृषभ वेष तल अलुबाने ,,

कामनायपि आतुर को'रनस
अमृत भास्योम वेह रस
श्रीपरोवुम दानि दाने ,,

कन थवुम न् सतगुर् शब्दन
ज़ार छुनुम खोटि प्रारब्धन
कर्मव को'डुस पर्यनि छाने ,,

'ठेकुरस' च़ाव अमृत् रस
संसार निश बनि बेह्वस
बनि नो'न अनुग्रह चाबे

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

हे निरंजन कष्ट भंजन
भक्तरंजन हे दयाल
ज्ञानकुय लाग अछि म्य अंज़न
अज्ञानकुय पोह म्य गाल

भवसरय फो'ट्मुतुय छुस
मोह मायाइ वो'ल म्य नाल
छुस ना ज़ानान बो'ठ खसुन
वोज्य अथ रोट करतम दयाल

सत असत विच़ार छुम ना
काम यन्दिलि छिम पतै
असतुचि हां'कल म्य च़टतम
हावतं सतची वथय

काम क्रोधनं लोभ मोहन
छुस ब' को'रमुत ज़ेरिबार
भवसागर दुःख घर मंज़
अथ रो'ट करतम दयाल

दीन वत्सल रछ पद्यन तल
आनन्दुक अमृत म्य चाव
यव किज़ शांती म्य बनिहे
वैर भावस गछ़ि अभाव

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

विष्णदास जी

पादि कमलन तल ब_ आसय
करनि चा'ञिय अस्तुती
मोक्ष दिम बोंड वर्ग दिम
भर्ग_ शिखा भगवती

गोम नेत्रन खून जारी
छुस च्यय कुन ज़ारी करान
भास प्रत्यक्ष कास ख्वारी
अ'सि छि पापव व'लिमुती मोक्ष०

चाञि आशायि योत ब_ आसै
नाउमेद नैरै न_ ज़ांह
या म्य वर दिम मोक्ष_ दामुक
नत_ छुसै प्रारान यती ,,

लोल_ बागस पोश फोलि म्य
वेरि चाञे त्रा'ग्य त्रा'य
शेरि लागै भाव_ क्रोसम
शोल व'नि कारेपुती ,,

क्या वनव अ'सि मंदुछेमुति
चन्द छ'ञि सौदा करान
कर दया वो'ञ वुछ म_ तथकुन
शर्मि सूत्य अ'सि गलिमुती ,,

चा'ञ गुण विस्तारनुक ताकत
अनि कुस कस वनीय
छुय च्य जय जय शाम_ सों'दरी
जाम_ शूभान छी छती ,,

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

ज्ञान् दाता मोक्ष् दाता
छख ज़गत माता च्न छख
हे भवानी कर म्य वा'णी
स्यद्ध मुखस दिम सरस्वती मोक्ष०

पजि मन् युस भक्ति चा'ञी
करि निष्कल रात् घन
क्याह छु संशय तसंदि बापत
मोक्ष् दाम्'कि बर वथी ,,

चा'ञि गुण छुस बों विच्चारान
पन ओ़मु कि खारान ब् छुस
अबसनकि वर् दो'न कुनुय कर
नत् छु आछुर क'ति क'ती ,,

सर्व् व्यापक छख च्नो' पा'री
अ'सि छि शा'री कया वुछव
वन च्य रुस्त कुस बोज़ि ज़ा'री
हाव मो'ख प्यठ परबती ,,

कर्म हीनन धर्म् हीनन
कर्तव्यन सान्यन म् वुछ
डाल् स्योध् अथ् कर्म् ला'निस
प्रक्रमस चा'ञिस खती ,,

वील् ज़ा'री बोज़ "विष्णस"
रोज़ सन्तुष्ट सर्वदा
छुय च्याय रोशन छुस ब् तोषण
च्याय म्य बख्शक थ'ज़ गती ,,

———0———

प्रातः काल आव म्य'ति अनत् गाश मति
छम चा'ञ आश मति पूरण कर

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

लटि मुख हाव मोह घटि करत्_ नाश मति
छम चा'ञ आश मति पूरण कर

ज़न्मादि ज़न्मन ग्यूर आम फेरान
छुस हालि हा'रान डेंशत कर
जल हाव मुख प्रुनुन छुमन्_ बरदाश्त मति . छम०

भक्ति भाव्_ सू'त्यन वति चाञि नेरय्_
कति छुख आसान पैग़ाम सोज़
नत्_ दिम पन्नुय प्रोन यादाश्त मति "

मोह_घटि मंज़ छुस वथ छमन्_ ईवान
सत्गुरु हावतम सत्_ चिय वथ
वथ हाव नो'न्_ त्राव सिर्य प्रकाश मति "

हनि हनि फ्यूरुस ह्यथ मनि कामन
शहरन त्_ गामन कति आसि यार
छुख पाताल किन्_ छुख आकाश मति "

निर्वासन वनत्_ कति चोन आसन
अन्धकार क़ास्तम वन्दयो प्राण
करतम सो'ध्य वाञिञ हिश बा'श मति "

क्रल्पनायि रोस्तुय कल्_ हो वन्दयो
कलि चाञि रा'वम न्य'न्द्र्_ त्_ नेह
वोंल्_ वो'ञ "विष्णस" ज़्नलि अभिलाष मति "

हे दयालु छुस ब्_ चञ्चल्_ लोलो
अनुग्रह चाञि बेमार बल्_ लोलो

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

कर्म_हीन छुस आमुत संसारस
चन्द्_छोंन छुस लो'गमुत व्यवहारस
अविद्यायि हन्ज़ छम गांगल_लोलो अनु०

लय_विक्षेप भय सू'त्य छम आवर्ण
मल खो'तुमुत छुम अन्तः करणुन
विवेकु पा'त्रि पान बो' छल लोलो ,,

ज़ा'नि ज़ा'नी ज़ांह तिनो ज़ोनमक च्चयि
ज़ान दिम तिछ ज़ानित यवु गलि द्वयि
दिम निश्चय युथ नु ज़ांह डलु लोलो ,,

छुस बु लो'गमुत संसार_सरसय मंज़
रोवमुत छुस पननिस घरसय मंज़
ध्यान सू'त्य ज़ाल ज्ञान_मशअल लोलो ,,

प्योमुत छुस घटि मंज़ अनतम गाश
त्युथ गाश हाव युथ नो'न छु सिर्यि प्रकाश
का'फी चा'ञ अख वुज़मलु लोलो ,,

बानु हीन बो द्रास खानै गदाये
अंगु हीन छुस फेर_को'त जायि जाये
दिम भिक्षा अनुग्रह खलु लोलो ,,

यम्बरज़ल बो'म्बरो छस बु प्रारान
वेरि चाने पान छस पा'रावान
व'नि व'नि छस वृन्द आरवल लोलो ,,

लोलु बागस फो'लिमो गुल तु गुलज़ार
पोशनूलो अज़ वलो छाव सब्ज़ार
होश दिम युथ पोशु वा'र फो'लि लोलो ,,

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

हा "विष्णो" पनुनुय पान ज़ानतन
यलि ज़ानक त्यलि बनि सरत'लि सो'न
च्रित आ'नस करतु सयकल लोलो   अनु०

हे दयु । बोज़ कनै	च्यय रोस्त कस बु वनै
करयो आ'च्रनै	च्यय रो'स्त कस बु वनै
संसार आवलनुय	यि छु सनि खो'त सो'नुय
अ'थि मंज़ आस ह्यनै	च्यय०
चोवनस मोह_मसै	रुदुम न ध्यान ह्यसै
उन्मत गोस तनै	"
हरुम म्य कष्ट हन हन	हरी हर छुक थवुम कन
आ'च्रर आलवनै	"
सूक्ष्म निर्मल करुम वृत	प्रत्यक्ष पांठिन बु बुछहत
सू'त्य ज्ञानु लोचनै	"
च्रित्तस सयकल करुम पूर	आज्ञानु मल गछ्यं दूर
हे यठि निरंजनै	"
पादन तल ब_मेरे	चाञि स्तुता करै
वारु वारु आर अनै	"
वासनायव नालु रो'ट्हस	संकल्पव बु चो'ट्हस
कोड्हस पनु पनै	"
दितं सत्संग म्य हरदम	इयं शांती तु शम दम
बनित आज़ाद बनै	"
"विष्ण" थावतन समाधान	च्रल्यस यवु देह_अभिमान
मंगन छुय क्षणु क्षणै	"

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

मास्टर ज़िंदू कौल

पं० जिंद कौल जिनको जन साधारण मास्टरजी के नाम से जानते हैं, कल तक हमारे साथ थे। एक महान योगी और साधक होने के अतिरिक्त मास्टरजी एक उच्च कोटि के कवि भी हैं। पहले पहले मास्टरजी ने उर्दू भाषा में कविताऐं कहीं, उस समय आप "साबित" की उपादी से जाने जाते थे। उनका उर्दू कलाम भी "देवन-इ-साबित" के नाम से प्रकाशित हुआ है। उनकी काश्मीरी रचनाऐं "स्मरण" के नाम से छप गई हैं, जिस का अनुवाद अंग्रेज़ी भाषा में साथ साथ उस संकल्न में दिया गया है, जो बड़ा आकर्षक और रोचक है। इस पुस्तक पर मास्टरजी को साहित्य अकादमी का पुरस्कार भी मिला था।

मास्टरजी की कविताओं में निर्गुणवाद की बू-बास मौजूद है। वह पहलु वदल बदल कर यथार्थ तत्व और वास्तविकता की महान सचाई का बखान करते नहीं थकते। इस प्रकार वह दूसरों के मुकाबले में ललधद के बहुत करीब हैं। इनकी कृतियों की शैली भी कुछ अपनी ही है।

मास्टरजी ज़िन्द कौल का जन्म 1884 ई० (२८८४) में श्रीनगर में हुआ था। आपने अपना बचपन और यौवन का कुछ काल भी अत्यन्त निर्धनता में गुजारा। कविता के साथ आपको बचपन ही से लगाव था। आपने 19 (२६) वर्ष की आयु से ही कविता कहना प्रारम्भ कर दिया था। उर्दू और काश्मीरी के इलावा आपने हिन्दी भाषा में भी काव्य कहे, जो "पत्र-पुष्प" के नाम से एक पुस्तक के रूप में छपी भी हैं। पर अब उपलब्ध नहीं है।

मास्टरजी 1965 ई० (२६६५) में स्वर्गवासी हो गये।

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

आमुन्न मनस र'न्न वासना
ईश्वर सफल करिनासना

एकांतकिस गुहलिस अंदर
उपरामकिस शिहलिस अंदर
पंपो'श़ पादन दो'न मलान
पननिस गुरुस बो आसहा ईश्वर०

पूज़ायि विध केंह ज़ानु मा
लोलस निषध केंह मानु मा
छ्युपि च़ूरि कुनि म्यूठा दिवान
लो'त तथ खो'रस बो'आसुहा ,,

यन्न लोलु अ'छि व'छ थाववुन
अंछि टींटि रुस्त ओ'श त्राववुन
सुन्दर मुखचि कांती वुछान
तस सुन्दरस बो' आसुहा ,,

वाणी तसज़ विज्ञान मय
जन साम ग्यवनस पानु दय
तन मन ब'नित कन बोजवुन
मधुरिस स्वरस बो' आसुहा ,,

सतु शब्द नो'न विस्तारिहे
उदगीत स्वर थो'द खारिहे
करवुन मनन स्वादुल चवान
श्रवणुक सु रस बो' आसुहा ,,

बूज़ित श्रवण पादन प्योमुत
संसारु निशु मो'कलित गोमुत
पुशरित पनुन सोरुय जगत
परमेश्वरस बो' आसुहा ,,

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

वुज़ तात' व'नि व्र'नि गारिहेम
करु पद्म हृदयस सारिहेम
ज़लु बिंदु ज़न मीलित गोमुत
सुखु सागरस बो' आसु'हा ईश्वर०

अज़ वाति वूज़ुम मोलु म्योन
कोसम वतन वथरावसय

लछ ज़न डुवित संताप ताप
अंतः करण गरु नावुसय
ठोकुर कुठिस मंज़ रंग रुत
प्रंग आदुरुक पा'रावुसय कोसम०

सों'बरित र'सिलि र'ति कर्मु फल
मस खा'सि भर्य भर्य थावसय
अशि गंगु वाज़े खोर छलस
रुमालि गुमु वो'थुरावुसय ,,

तिम पाद हृदयस प्यठ र'टित
दुख दा'दि जन्मुकि भावुसय
कोछि क्यत रछुन लोकु चारुकुय
स्मृत व्रितस अदु पावुसय ,,

भावुक घन्यर लोलुक सन्यर
वा'लिंज मुव्ररित हावुसय
नो'व नागुरादस सोन्त ज़न
स्नेह मायि हुंद वुज़नावुसय ,,

गुरु भावुनाये सू'त्य शेर
नो'मरित खो'रन तल व्रावुसय
घर बार तांय आसुन बसुन
सोरुय पनुन पुशुरावुसय ,,

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

घट्‌ पंछि चन्द्र ज़न नाम्र रूप
अख अख कला व्यगुलावुसा'य
सिर्यस अन्दर लय प्रावि जून
सार्य बनन त्यछ्‌ मावुसा'य कोसम०

स्मरण पननञ दिच्ना'नम
प्रेमुक निशानु व्यसिये
रछ़रुन तो'गुम नु रोवुम
ओसुम नु बानु व्यसिये

पतकालि छुम नु द्युतमुत
सो'न मो'ख्त दानु व्यसिये
अ'जि सारि क्या लबक वो'ञ
तिम मोख्तु दानु व्यसिये रछ़_रुन०

वा'लिंजि मंज़ थवुन गो'छ
हावुन थोंवुम अथुस प्यठ
राह कस छु को'र म्य पानस
नुकसानु पानु व्यसिये "

हावुन छु रावुरावुन
चावुक समर छु खामय
थांवान ज़ि छावु बापत
बानन ति ठानु व्यसिये "

यनु सुय निशानु रोवुम
तनु म'च्न गयस बु फलुवाल
न्युन ह्योन नु केंहति फेरान
छस वानु वानु व्यसिये "

व्यसरुन पनुन वनस क्या
वननस ति वार मा छुम

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

बुथ मा सम्यम दोह्स त्युथ
गछ_को'त शबान्_ व्यसिये   रछ_रुन०

यछ पछ म्_हार ब्याखा
ह्यत यूर्य वाति कांछ़ह
तस छा कमी निशानन
भर्य भर्य खज़ान्_ व्यसिये   ,,

डोलान कोहन वनन मंज़
शोलान छि गुलशनन मंज़
ज़ोतान छि तारकन मंज़
क्_त्याह निशान्_ व्यसिये   ,,

व्यसुरित डलित पथुर प्यथ
बुथ क्या दिमव तमिस निश
पो'त फेरनुक पकान छा
युथ ह्युव बहान्_ व्यसिये   ,,

मानव ज़ि अ'सि ह्यमव पो'त
छोर्या तसुन्द मुहब्बत
पैवंद यि आदुनुक छा
शुर्य कारखान्_ व्यसिये   ,,

दिल फुटिमुत्यन छु तोषन
यत्न गरिम'त्यन छु रोशन
गछ़ वर्यमुत्यन सुदामन
प्रछ़_गायबान्_ व्यसिये   ,,

अंदि प'खि यती छु आसान
बो'द् ब्रोर् सूर·दासुन
बोज़न छु माय लागित
लोलकि तरान्_ व्यसिये   ,,

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

वुछित गथ चांग्य दैवागत
च्च बिन द्वयि नो सरै लोलो
म्य अन्दर कर पनुन मन्दर
ब च्चय पूज़ा करै लो लो

बु चाजे वेरि सों'बरावय
अछिव किञ रंगु रूपुक रस
कनव किञ शब्दु साजुक मस
अनित खास्यन भरै लो लो म्य अंदर०

म्य कुन वुछि वुछि असान छुक
दूरि रूज़ित आस्मानन मंज़
गुपित छुक दासतानन मंज़
बु दूर्यर नो ज़रै लो लो ,,

फिज़ा त्रा'विथ म्य खनिमुति ज़िसि
ज़मीनस तल तु पूरुणि छिम
स्यठा देवारु लूरनि छिम
च्च रोस्तुय क्या करै लो लो ,,

वु छुस पोंपुर च्च दीपस पत
च्चटित इमु जामु करहै गत
दिहनै जामु च्चटुन'चि वृत
क्यो'मा ह_युव मा मरै लो लो ,,

म्य निम पम्पोशु पादन तल
तिमन हुंद बों'बरा सूज़ित
कंडयुन प्यठ छुस मरे रूज़ित
बु चाजे आसरै लो लो ,,

ज़मीनस ज़न्मकिस व'विमुति
अशिकि दुर्दनु केंह ब'विमुति

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

अँछ्यन मंज़ छिम रछित थविमति
तिमै ख्रावे जरै लो लो ,,

इमन जोयन अन्दर यो'दवय
छु चाजे सहज़ु धर्मुक ज़ल
बठ्यन हुंद छुक सम्योमुत मल
म्य चावुम आगुरै लो लो म्य अंदर०

पनुन मय तेज़ कुय आगुर
इमन ज़रन अन्दर भासुम
कुन्यर भा'वित द्वई कासुम
घटे हन्दि गाशुरै लो लो ,,

पानै म्य पान हा'वित
तन्हा त्रो'लुक म्य त्रा'वित
आशायि धारना'वित
कस ? म्याजि जोगि रायो

वुछुनोवथस मनुक मल
सो'न म्योन द्रावु सरतल
वुछुमक-नु वारु को'रथम
त्रस म्याजि जोगि रायो तन्हा०

छ्यकरवै वुछित त्र-तिम छो'ख
मुत्ररित ब्रु सीनु हावय
त्रय कन क्य रुत्तु भावय
कस ? म्याजि जोगि रायो ,,

यव किञ वे सुम छि कोमल
हृदयस कठोर वा'णी
ग्रावन दिमव यतिय छ्यन
बस ! म्याजि जोगि रायो ,,

लो'बुमक तु वो'ञ मु रावुम
बालन कोहन मु छावुम
सत्संगु प्यालु चावुम
मस म्याजि जोगि रायो ,,

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

भगवान्‌ सोन बूज़िन
असि आश चा'ञ रूज़िन
ह_थ वां'सि माजि मा'लिस
लस म्याञि जोगि रायो — तन्हा०

नित्य इष्ट्‌ देव्‌ संद्‌्यन
पंपोश्‌ पादनुय तल
बंबुर बंनित चवान गछ़
रस म्याञि जोगी रायो — "

पञि प्रेमके प्रभावय
भोगान सुख तु सावय
नीरागु राज़_योगस
खस म्याञि जोगि रायो — "

दय सुंद प्रसाद सतुज़न
भक्तिन छि बा'गरावान
प्रेमुक चवान तु_चावान
मस म्याञि जोगि रायो — "

बु ति चा'ञ दा'सिया छ्स
च्यय मूल्‌_माल्‌ अर्पण
युथ छुक च़्न इष्ट्‌_देवस
तस म्याञि जोगि रायो — "

उपकार म्याञि बापत
थो'द योगु पीठ्‌ त्रा'वित
असि निशि ति क्यूँच़ काला
बस म्याञि जोगि रायो — "

यमि किञ च़्न_परम त्यागी
लो'गमुत राज़_द्वारन

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

यथ फुटिमितिस मनस मंज़
बस म्याञि जोगि रायो तन्हा०

भाषण मधुर मधुर कर
फुट्राव शकुरस मो'ल
अभिमान.कोसमन हर
अस म्याञि जोगि रायो ,,

—0—

यारु संदे दादि दो'दमुत दिल बहारस क्या करे
वाव योदवै सोंत कालुक आसि नारस क्या करे

कां'सि प्रारान दारि प्यठ युस
वां'सि हारे धारि ओ'श
आबशारुक तस हवस क्या
शालुमारस क्या करे वाव०

कां'सि पलज़ुन कां'सि हुंद ज़ेवर
बनुन यस यो'छ नु ला'ञ्य
सो'न बनावितन संगि पारस
तस विचारस क्या करे ,,

होशु डंजुमच्न जोशु वछुमच्न
पोश गहनस तोषि क्या
रोशु यस च्रो'ल ओश त्रा'वित
गोशुवारस क्या करे ,,

कालिदासस तालि क'ञ
पत कालि वो'नमुत गाटुल्यव
तालि यन युस लोग ज़ालस
गाटुज़ारस क्या करे ,,

लोलु मस ज़ाल्यम तु गाल्यम
यस बुडित मा'लूम गव

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

बीमु नशुके त्राविहे मस
चोन खुमारस क्या करे वाव०

रंगु हा'वित भ्रम दिवान ओस
कहवचन खो'त म्योन सो'न
अ'मि को'डुस अंदर्यम खोचर नो'न
लोलु नारस क्या करे ''

डालि निमु क्या बालु यारस
ओ'रु तु शुद्ध पाध्यम नु दिल
छु यनिमतिस यत दाग़दारस
नाबकारस क्या करे वाव०

ब्रोंठ छुय त्रो'र क्रूठ मंज़िल
गा'फिलो बस कर मु त्रेर
यस मंतिस माघस जिगर
शेहल्यव नु हारस क्या करे ''

तरवुन छु करनोव हक दित छु वनन
कांह मा सु त'रिव अपोर
पतु तार बन्यव नु आलुन्न मु क'रिव
उद्यमु त'रिव अपोर

करनावि तार छु नु गरि गरि बनन
वुत्रक्यन छ्य वेला जान
निश्तुर तु यि सात मु रावुरिव
वुज़िव तु त'रिव अपोर पत०

घरवेठ सों'बरान छिव मारु गा'मति
छु य'नित थ'कित पेमुति
घरु रोज़ि ययति तय कथ क्युत भरिव
छरी तरिव अपोर पत०

अन अन वनुनस कन मो था'विव
गो'बराविव क्याज़ि पान

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

गो'ब बोर ह्रुत वति प्यठ क्या क'रिव
लो'तय त'रिव अपोर ,,

चू र युस क'रिव सु पानस फ'रिव
कर्मु क छु अटल नियम
सो'न रो'फ छ़रित गो'ड्डक'र्य मु ग'रिव
संतोषु तरिव अपोर पत०

प्रछ_गा'र य'लि लगि बर दित ख्यनस
इसबात सुय गयि चू र
थरि थरि मा हरदु थ'र ज़न ह'रिव
उद्धा'र्य तरिव अपोर ,,

प'ज़ि पान होव रशि रस्त्यन ऋषण
पशुन ति भरक प्रय
अथ ऋषि धर्मस प्यठ तोहि ति दरिव
सम दृष्टि त'रिव अपोर ,,

रुति भाव थाविव रुतिय ब'निव
रुती क'रिव कार
यी यति क'रिव ती तति सो'रिव
सत्कर्मु त'रिव अपोर ,,

अपारि बदलै विद्या छि परुज़
योगुच छि तत बोल चाल
प'रिवै यति श्री गीता परिव
योगै त'रिव अपोर ,,

अपारि ब्रह्मय छु छ़ारान तु गारान
यन्न छुस ज़ि तहुंद लोल
यति क्या छु प्रावुन ज़ि वियोग ज़'रिव
पज़ि प्रेमु त'रिव अपोर ,,

वाव तस क्या करि तारुक मन्त्र
यस आसि दय सुंद नाव
पानै छु करना'वि चिन्ता मु भ'रिव
डंरिव मु त'रिव अपोर ,,

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

नील कंठ जी

सीता विलाप

रमा छस ब अशोक वनस
अमां सु कोनइ आम

यमिसुन्द राग छुम मंज़ बाग मनस
तमिस छु नाव श्री राम
दोहस तु रातस विलु ज़ार वनस अमां०

व'नि छुस दिवान ज़नारधनस
सो'नस म्य गोमुत त्राम
ब'ति काव ला'गति ग़छ_स वनस "

मो'खतै आ'सिथ बु फोतु बनस
या पो'खत आ'सिथ खाम
नतु लोलु सू'त्यन हनि हनि छो'नुस "

कुति लो'ग आनन्द आनन्दगणस
सूज़नम नु कांह पैगाम
वरदायकस बु शरण बनस "

विलज़ार वुनिमस दोहस तु रातस
दो'ख हरिद्यम श्रीराम
"निलकंठ" प्रारान शो'भ दर्शनस "

द्रौपदी विलाप

हा कृष्ण मनसि वासन
इमां अवस्था संप्रासं

क्वासी यादव नन्दनै
अनाथं किं न रक्षसि

वलो श्यामु लालो
सभाये अंदर छिम

बु कोताह इ चालै
कडान जामु नालै

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

ल'जिंस वो'परन मंज़	वज़िस कमि वु शापन	
ग'जिस शर्मि दावै	ल'जिस गिल बु ज़ालै	सभाये०
म्य वुछक्यन करान	छुमनु कांछ़ हिमायत	
यि क्या ओस दयन	ल्यूखुमुत म्य कपालै	"
च्य़ रुस्तुय रछ़्म कुस	अबल छस बु ना'री	
च्च रछ़तं तु वुछ़तं	छसै कमि हालै	"
प्ययि मा न्यंदर च्य़य	सदा छुक नु बोज़ान	
गयी को'त दया	वुछक्यनस हे दयालै	"
च्च छुक दीनु बन्धु	मु' म'शराव दीनस	
हृषिकेशु अशने	हरान छसुया च्चालै	"
म्थ वो'ञ रूज़मच्च छ्म नु	कांसि हंज़ आशा	
तमन्ना म्य टाठि छुम तु	रटहत बु नालै	"
सभासद बनेम'ति छि	मौनिक च्चित्र ज़न	
दया छकनु वुछक्यन	इवात हे दयालै	"
दया सागरो करु	दया "नीलु-कंठस"	
च्च दिस पानु दर्शु न	इतस अन्तु कालै	"

कर सनु कुनुय बनि सू'त्य तस
जानानसुय जानानसुय
तन लोलु नारन ज़ा'जनम
अनज़ानसुय अनज़ानसुय

मयकिस दुकानस व'थि छि बर
पैमान भ'र्य भ'र्य क्यया ज़बर
चनु रुस्त बु छुस आ'सित अंदर
खुमखानसुय खुमखानसुय — तन लोलु०

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

निश आ'सिथुय दूर्यर म्य प्योम
रूसिस नु पय नाफुकुय नन्योम
छांडान सुगंधु दिल तारि गोम
नादानसय नादानसुय तन लोलु०

गोस नज़ि पयस मो'कजारकिस
कोचस बु गोस व्यवहारकिस
सोंबरनि लो'गुस संसारकिस
सामानसुय सामानसुय ,,

देव आ'सिथय ज़ीवु नाव प्योम
सो'न आसिथय म्यज़ि त्राम गोम
मो'क्तस म्य फोतय खाम गोम
दुरदानसुय दुरदानसुय ,,

अद्वैत अमृतु कुय सु मस
चनु सु'त्य बु बनहा एक रस
छयि रोज़िहे कति म्य तु तस
कुनि आनसुय कुनि आनसुय ,,

यन्न कालु कुय तस निश जुदा
गोमुत बु छुस : रि ा सना
तस रुस्त म्य आराम ज़रा कर
देवानसुय देवानसुय ,,

यथ दा'दिसुय गछि वैद्य बनुन
तस भावहा बो'सीर पनुन
नतु राज़ि दिल क्या छुम वनुन
बेगानसुय बेगानसुय ,,

"नीलकंठ" प्रेमु चि वति च्र_नेर
वातक मुकामस पोत म_फेर
प्रावक चु_अद_केंह लगि नु च्रेर
निर्वाणसयय निर्वाणसुय ,,

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

देवी अस्तुतिः

पादि॒ कमलन तल मा'जि म्य'ति वरतम
अनुग्रह करतम माजि अनुग्रह करतम

कष्ट दूर करतं संतुष्ट रोज़तम
बालु॒कस नालु॒ ता'य फ़रियाद बोज़तम
पाप शाप कास्तम संताप हरतम अनुग्रह०

म्योन हाल पानस छुय ना रौशन
बे होशस म्य'ति अनतमु॒ होशन
तोषतं तु॒ मनि मंज़ लोलु॒ रस भरतम ,,

कन थाव म्यान्यन आ'रत्यन नादन
आसय शरण बोज़तं फ'रियादन
सार छक च्रय मा'जि धा'णायि धरतम ,,

भय दूर करतं य'मि संसारुक
मटि बोर वालंत खोटि व्यवहारुक
तंग आस यमि निशि वासना फ़िरतम ,,

च्रोदहान भवनन माता च्रय छक
दाता च्रय छख त्राता च्रय छक
रोगु॒ ता'य शोकु॒ निशि॒ जल जल म्य कडतम ,,

वदवुन बालुक मा'जि छुस प्रारान
यो'द तुलतं इत लारान लारान
दिलासु॒ दितु॒ म्य ओ'श वो'थरावतम ,,

दीनु॒स तु॒ क्षीणस सत छम चा'ज़िय
भासतं हृदयस मंज़ हे भवानी
दासस त्रास ता'य वसु॒वास हरतम ,,

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

संसार् द्वैतन ब्रुय रो'टमुत छुस
दुख सागरस मंज़ ब्रुय फो'टमुत छुस
खारतं आवलुनि मतु म'शरावतम — अनुग्रह०

पाय म्योन च्मय रुस्त कांह करिनु माता
उपाय रो'स्त्यन च्मय छक त्राता
कास्तं अन्धकार् दास गंज़ुरावतमु — ,,

वीलु ज़ार मा'जि बोज़ च्मय "नील कंठस"
शील हर च्मय छक आशा चानि छस
भक्ति भाव पननुय म्य'ति पुशुरावतम — ,,

शिव लीला

मस्तानु हा मखमूर् मते सूर मते लो
मनि मंज़ करय गूर् मते सूर् मते लो

जटि छय च्म गंग, हटि वासुकुई
ड्यकि चन्द्रमय शूभान
रो'पु तन च्म मनि चू रु मते सूर् मते लो — मनि मंज़०

शक्ति च्म सू'त्य छय छुक त्रिलचन
छुय वृष्भु वाहन
भवनन अन्दर मशहूर् मतें सूर् मते लो — ,,

बो'ज़ह च्चोर छय मंज़ च्यो'न अथन
आयुध शूभा'नी
असुरन च्म् करवुन चूरह मते सूर् मते लो — ,,

हटि छय च्म शूभान रुद्राक्षमाला
मृगछला ना'लि
अमर हा आगूर् मते सूर् मते लो — ,,

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

हा राज़_त्रभुवनके म्य वो'थूरई_
हर दिशाये च्य़
वृन्न म्याजि वनुवान हूर_मते सूर_मते लो मनि मंज़०

निर्मल यि तनु_चा'ञ, बो'ई ज़ि मलुहन
भक्ति भावय सू'त्य
कुस्तूर_कोंगु_कोफूर_मते सूर_मते लो मनि मंज़०

आकाशस मञ्ज़ इम छि ज्योती
रूपु_तिम सा'री
प्रज़लान चाजि नूर_मते सूर_मते लो ''

शिन्याशियन मंज़ वास चोनुई
अविनाशो छुय
हा मनु_के कनु_दूर मते सूर_मते लो ''

हा आशुतोषो घटि मन्ज़ हाव
सिर्यकुई प्रकाश
हरदु_कमलके बोंबूर मते सूर_मते लो ''

यथ ज़िंदगा'नी मन्ज़ बो' क'रहा
राग हा'सिल चोन
अन्तस ब' मा अथु_मूर_मते सूर_मते लो ''

मतु_त्रावतम थवतम च्न पनुन्यन
पदमु_पादन तल
जान्ह युथ ना च्य़य निशि दूर_मत सूर_मते लो ''

आर्यी बों क'रहा चाञ करिथ
च्य़य स्यठाह सन्तुष्ट
सेतार_बियि सन्तूर_मते सूर_मते लो ''

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

छुक राम् ध्यानस मंज़ मग्न
संसार् निशि दूर
छुक मस्त क्याह मसरुर् मते सूर मते लो ,,

हा नीलुकण्ठो "नीलकण्ठस"
राम भक्ति दिस
अनुग्रह करुस वोंन्य पूर् मते सूर् मते लो ,,

आफ़ताब जी कारिहामी

"भास्कर"

पों'त जूने मों'त सुल् नोवुम
लल् नोवुम नारायण

प्रयि तमिसंजि हियि तन म्य ना'वुम
पोश वथुरस प्यठ गोशन
रोशु इयि ना होश राव् रोवुम ललुनोवुम०

बालु पान तस पत् राव् रोवुम
हालु कमि सुय नालु रट्हन
शिवु शम्भो शुन्य बोलु नोवुम ,,

कामु देवस नामु लेखु नोवुम
पामु थविनम कर डेशन
रुमु रुमै रामु रमु नोवुम

द्वारु पत द्वारु वार वुछु नोवुम
जूनि छोंडुम मंज़ तारकन
मारकन मंज़ लालु उल्लसोवुम ,,

लो'लि मंज़लि लालु ललु नोवुम
बोलु नोवुम सुबह शामन

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

च्चीर्य सोवुम सुलि वुज़ुनोवुम ललुनोवुम

जीरु बमु कुय सीर वुज़_नोवुम
फेरु नावुम तति हेरि बो'न
वेरि त'मिंसंजि शेरि वातु नोवुम ,,

ज़्यव नारु सूत्य वारु छ्लु नावुम
तवु लोलुन नार शोलुन
अछिव बूज़ुम कनव वुछु नोवुम ,,

कंदु नावद ओरुद नोवुम
फंदु करित यूर्य अनतन
अंद लो'बमस नु वों'दु फोलु नोवुम ललुनोवुम०

हंसु द्वारय वारु ब्रज़ नोवुम
प्रारि प्रारोस रामु रादन
ब्रह्म_सर पान सर करु नोवुम ,,

अथवासय रास खेलु नोवुम
श्वास उश्वास नो'न छु भासान
सास "भास्करु" विकास भासुनोवुम ,,

ओम परखुन हंस ताजदार
कमि वनु कुय जानावार
ज़ालु लगिना सुय अनक़ा
मालु गंडहस छुम तमन्ना
नालु रटुहन सुय बालु यार कमि०

को'छ बु दिमुयो हा कावो
गछ़्तु वनतस दियि दर्शुन
वछि वां'लिजि भावस असरार ,,

पोशनूलव पो'र-यि हंसो
कुकिलु बोलान गोविंदगो

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

हर् मुख छा किन् हर्द्वार कमि०

प्यठ गोशन रटनम जाय
का'लि पोशन प्ययि मो हाय
वों'द्र हंदर्यस तु रोश़ु च़लि यार ,,

खत ब् लेखस हटिके रत्
ज़ा'विलि खत् सुति शूभिदार
इयि नत् छुस ब् दावादार ,,

बा'लि अनतने दूरि मा का'लि
का'लि जिगरस गा'म परगालि
ना'लि जामै तस छि ज़रकार ,,

हंस् पखवय पत् लारोस
प्रारि प्रारोस डंडक वन
दोह दरि गछ़ि सोरि लो'कचार ,,

दरद् सोज़ुक संतूर् साज़
सासि परद् म्यवि कस्तूर राग
ब'ति ती ती वनान कोलुतार ,,

"भास्कर्" च़्ननत् सासन मंज़
रुम् रुम् खास छ् भासानी
ललवुन छुम सु सिरि असरार ,,

ललवनि सिरि हक ज़ेरि ज़ेरि ह्यरि बो'न
छम वज़ान ज़ीर् बम् तार

ह्यसके मंयखान् मस य'लि ब् चोवनस ,,
भोवनम सिरि असरार

आलव तोरै गोक द'रियाव दाम् चोक
शौकन क्रोंरुख मिलुच़ार

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

सतवय आकाश सतवय पाताल
तल प्यठ दित कुनुय ठान ,,

गाह घटु गाह गाश गाह प्रकाश नरान
यक्सान सोरुय सामान

रंगु रंगु बेरंग सूरत सो' मूरत
न'ञ द्रायि दर बाज़ार हासक्य०

गगुनयि पवुनयि लागुनयि भागुनयि
सत नयि ब्ययि नवद्वार

सुय हज़ार दास्तान बोलान नयि नयि
मोलवान ह्यथ खरीदार

पननुय ह्योंन घुन पनुनुय बाज़ार
पानै ग्राक सौदागार ,,

हरदु सोंतु कुव्वरस वोंत कुनि लो'बमस नु
दरदु नयि फ्यूर शह_जार

सत परदु च'टिथय हूर_द्रायि वनुवान
पोशन क'रिख तूमार

ग्रक लजि सो'दरस दरवाज़ु खुलु गयि
अनुग्रह ग्रुतुक अंबार ,,

कंद पूरि ज़ून_डबि शश तु रव सा'विथ
नावित अंदरिम तोंदुर प्राण

घटि मंज़ "भास्करु" सास भासनावित
सुय प्रावि शांत आकार ,,

फुल वनि सोन्तु छुय म्योनुय सालो
लालो अज़ वलो माल्युन म्योन
आरवल आरु क'न्न गयि कमि हालो

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

च्रालि च्रालि ओ'श धारि हारान छस
यच्न काल गव वोंञ प्रार् कूत कालो लालो०

यमबरज़ल लजमच्न बुमबरनि ज़ालो
प्यालु ह्यथ मसवल प्रारान छस
दूरिरुक दाग दिलस ह्यथ छुय गुलालो ,,

मायु चानि सुलि मुलि फो'जु ही मालो
ल'यि लोसु इयु कर दियु दर्शुन
द्र्य चा'ञि छम वों'ञ यूत नो ब च्रालो ,,

रोशु रोशु करहै पोशन मालो
रोशि मति गोयि ना गोशन म्योन
रोशि मा पोशु नूल दोह गछि वो' बालो ,,

आदनुक याद पाव वादु मो डालो
नाद लोय कुकिलव गोविन्दु गू
आदन बाजि म्याञि त्राव शुरि ख्यालो ,,

बा'लि वन्तु इयना ना'लि छस मालो
वा'लि छिस कनुन्य ग्रायु मारान
का'लि मा रा'वव कस क्या मलालो ,,

साकया प्यालु चाव माला मालो
युथ नु सु बाकी रोजी ग्राव
मस चथ रसु रसु बनु मतवालो ,,

सासु मंजु खास सुय रटहोन नालो
सास मलि सन्यास मेलि गोपाल
"भासकर" सास छुय ना'ली नालो ,,

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

अन्य भक्ति काव्य रचनायें

- मा० शिवजी "दास"
- आनन्दजी
- केशवदास जी
- मकुन्दराम जी
- दीनानाथ जी 'नादिम'
- अर्जुनदेव जी 'मजबूर'
- मोती लाल जी 'साकी'
- प्रेमनाथ जी 'प्रेमी'
- काशीनाथ जी 'बागबान'
- जियालाल 'सराफ'
- त्रैलोकी नाथ 'हुशरू'
- अज्ञात और इत्यादि

इस भाग में अन्य कवियों के काश्मीरी भजन और लीलाऐं सम्मिलत कीं गई हैं। यह लीलाऐं काफी जनप्रिय हैं और बड़े चाव और लग्न के साथ धार्मिक उत्सवों पर और नित्य पाठ्क्रम के रूप में गाई जाती हैं।

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

गो'डुन्य गणपत जियस कुन कर नमस्कार
पतय रठ राजुरे'ञि हुंद खास दरबार

व'नित क्या ह्यक ब़ु देवी चा'ञ लीला
करै वो'ञ मूर्खु गियि किञ मूर्ख़ु खेला

च़्न माता शारिका संतुष्ट म्य प्यठ रोज़
गदा आमुत ब़ु दर्गाह छुस सदा बोज़

वहा'रित ज़ाल संसारन वो'लुम नाल
करुम वो'ञ चारु नतु क्या म्योन छुय हाल

मदुन लोमन मोहन क'र मन्न छनम जाय
कृपाय किञ करुम मोंकलावनुक पाय

अहंकारन स्यठाह ह्योत'मुत छुलस तल
इमन न्योंन मुशकिलन माता करुम हल

ब़ु दर्शन छुस न वातान न्यथ भवानी
क्षमा पापन म्य करतम मा'जि भवानी

को'ठ्यन शक्ती अछिन थावतय पनुन गाश
दरई दुनिया फ़कत चा'ञि म्य छम आश

म्य मूर्खस गछ़तु बूज़ित मा'जि भवानी
सिवायें चाञि वनु कस कुस छु म्योनुय

दिलुक तमन्ना म्य कडतं छुस ब़ु चोन दास
रक्षा करतं पद्यन चान्यन तलुय ब़ु आस

कर्मफलु किञ अगर केंछा म्य छुम पाप
क्षमा सागर च़्न_य'मि किञ छक करुम माफ

कलम तुल पानु लेख म्या'ञ कर्मु लेखा
करुम स्यज़ कांह अगर ह'जि छम म्य रेखा

कृपा सागरु जगत माता छु चोन नाव
शरण आसै पद्यन पनन्यन तलय थाव

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

सिवाये चाजि छुम नु कांह रछन वोल
च्च देवी म्याजि छखना मा'जि तय मोल

भुजव अथ्यदशव सू'त्य कर च्च रक्ष_पाल
च्च यमि किञ आसुवञ छख दीन_दयाल

च्च रुस्तुय कस वनै कुस बोजि म्योनुय
बु छुसना नाबुकार संतान चोनुय

यि अक मशहूर कथ प्रथ कांह छु ज़ानान
कु पुत्र छुय कु माता छय नु आसान

मंगुन छुम नय तगान बोजुन तगान छुय
चवुवुन शुर माजि इथ पा'ठि दो'धु मंगान छुय

दिलस य'च्च कोल अमिकुय छुम म्य ह्रावस
दितम दर्शुन लगय पा'र्य पार्य बु नावस

बु चान्यन पादुय कमलन रथ वंदय ना
शरीर अर्पण पनुन च्यय पत करुय ना

पनुन ज़ुव जान वां'लिजि खोंठ वंदय ना
पनुनि इम य'ठि छिम सा'रिय वंदय ना

लगय ना चाजि मायांये लगय ना
लगय ना वजि दयायि लगय ना

इमन पंपोशु नेत्रन च्यय लगय ना
मुकट धारी सो'न्दर शेरस लगुय ना

यि कें'छा छुम म्य' चोनुय च्यय वंदय ना
क्षमा करतम क्षमा करतम च्च क्षमा

च्च छकना राज़ुर्यञ राजन दिवान राज
अतीत आमुत छुस म्य बख्शुम ज्ञानकुय ताज

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

गछ़ान दिथ छक अमीरन न्नय अमीरी
दरई दुनिया म्य करतम दस्तुगीरी

च्यग्न निश शाहो गदा प्रथ कांह बराबर
म्य पादन तल कृपाये पनुञ्य किञ वर

ब़ ज़ा'री छुस करान च़्यय दस्त बस्तै
करय अर्पण जिगर ज़न पोशु दस्तै

दो'युम ब्याखा च्य ह्युव छुमनु कांह ति दाता
बहर कुस्मुक मददु करु म्योन माता

परेशा'नि यि म्या'ञी करतु वो'ञ दूर
इच्छाये दिल करित गछ़ तम म्य मन्ज़ूर

च्न छख म्या'ञ इष्टु देवी कष्टु कास्तम
सदा संतुष्ट रूजित मनि भास्तम

वनान सा'री छि चाञे जायि सिद्ध पीठ
सिद्धत करतं म्य ह्युवु मो'कलित गछ़िम कीठ

ब़ कश्मीर कु'त्य व'थि नेकनाम सतज़न
कृपाये चाञि किञ सरतलि बन्योक सो'न

मूर्खु बो'ज़ किञ नु छम शक्ती नु भक्ती
दयालु छख गछ़ुमु बख्शित म्य' मुक्ती

ब़ छुस आरुत बन्यमुत आरुवल ज़न
गछ़र च़्नलिहेम बनिहेम आ'नु ह्युवु मन

अगर रछ़ुहं पद्यन तल कुस म्य पोर्यम
तवै किञ चा'ञ भक्ती ज़ांह नु सोर्यम

कबूल गछ़ तम क'रित वो'ञ म्या'ञि ज़ा'री
वंदय रत पादि कमलन माजि च़्नो'पा'री

यि लीला परि युस सुबहन त शामन
त'मिस देवी सफल करि मनि कामन

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

दपान "दासस" छि चा'ञिस टा'ठ भक्ती
ब़ दुनिया सुख ब़ उकबा दिम म्य मुक्ती

लालु़ लगयो वाल भावस
रामु़ नावस पा'रि लुगुय
रामु़ नावुस चा'निस नावस रामु़ नावुस पा'रि लुगुय

तंग ओनुनंस व्यवहारन
रंग बुलबुल गोम को'ल
गंगु़ वोञ चाव मंजं यथ वावस — रामु़०

भक्ति भावय नाद लायय
अर्द्ध रा'तन सो'न्दुरो
चाञि दर्शुन कुय छुम म्य हा'वस — ''

हे मुरारी ! वील ज़ा'री म्या'ञ
बोज़ंक ना कनव
छुक ह्न येठान भक्ति भावस — ''

त्रटि हन्दि सायबांनो
घठि हन्दि गाशरो
मोह अञिघटि म़ज़ लो'गुस दावस — ''

गो'ब गुमुत बोर पापुन
दोह लो'गमुत छुम दरय
नावु़ लजिम'न्न मंज़ व्यथु़ वावस — ''

हे शेव छुक सर्वु़ व्यापक
ब्ययि छुक विश्वम्भरय
केशव तार दिम वर्जिनिस वावस — ''

क्रूठ प्योमुत छुम म्य पानस
संसारुक लंगुरय
ख्यमु़ क्या छुम न केंहति छावस — ''

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

बालु भावय वनि म्यय दितिमय
वनि नो आहम च्न_ज़ांह
वनि इतमो ती छुम म्य हावस राम०

शयि शये शय च्यय छुक
शय न ब्ययि रोज़ि कांह
शयि रूद यलि टोठ्योक कावस ,,

"आनन्दो" भक्ति तमि सुन्ज़
ज़ान पनुनुय मोक्ष उपाय
व्रत तमिसन्ज़ दर च्न_मावस ,,

हे कृष्ण दया छ्य ना गछ्न
भ्रमु दिथ म'च्नन गोख

क्याह रुत समय ओसुय प्यले
यले च्न राधा ह्युथ
प्रेम सू'त्य रास मंडलस मंज नच्नन भ्रमु दिथ०

अन्तर बहिर रातस दो'हस
असि भाग्य वुठ्व सु'त्य
तोशान प्रेयम बो'ज़ तारच्नन ,,

दर्शन दि करुणाकरु भक्त वत्सल
उद्‌दास करिथ गोख
अथु रो'ट कर व्रच्न_गोपीय कच्नन भ्रमु दिथ०

गोपीय शुराह सास ह्युथ
शुराह छु खेलान रास
आश्चर्य कस ओस वो'ज़ मंज अच्नन ,,

माया मोहन चा'ञ्य मन मोहन
मोहन ब्यो'न ब्योंन ओस
मोहन रंग रूप आमुत मुनियन ,,

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

अमृत रूपी दर्शन मो'खय
व्याकुजि गा'मन्न छिय
शुर्य ज़न बो'छे हच्चन ब्रछन — भ्रमु दिथ०

छ्यन कमि सो'नि सानि ध्युतुय करिथ
कन कमि भरियु सा'ञ्य
मन सोन इनस छुय ना पच्चन — ,,

अमृत वर्षणु नारायणो
शेहलाव मनुय सोन
सन्ताप भवु सागर दज़ु मच्चन — ,,

असि लोल चोनुय घन्योमुतुय
कमि सो'नि ध्युतुय च्य डोल
सुय लोल सन्योमुत असि कच्चन — ,,

बरुय च्य करिथ विश्वम्भरय
बरय अच्चख ना
छुय ना सोन ज़रु ज़रै गछन — ,,

त्यागिथ लज़ायि क्र'निस द्राये
सेवायि आये च्यन
पज्ञा अनह्योत लागुन ह्युच्चन — भ्रमु दित०

आ'दीन अनाथ भक्त आर'ती
पालान छि धर्म तु दान
हितकर उपकार करान गछन — ,,

श्रीधरु करुणाकरु श्यामु सो'न्दर
ज्ञानान च्य छिय भास्कर
भ्योन छुखनु सू'त्य सू'त्य आ'सिथ ज़च्चन — ,,

प्रेमन तु वीणायिं आनन्द स्वरण
भ्रम दिथ न्यून मन सोन
ब्रजवासीय दा'सी म'लि ह्युच्चन — ,,

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

प्राणो यी च्य क'रथ वा'णी
फीरिथ ब्र इमोव यूरि
दुबार् मो'ख होवुथ नु मोह हव्वन ब्रमु दित०

केशन त्रा'विथ भूषण पा'रिथ
डेंशन छिनु मो'ख चोन
दर्शन करन वाजे मच्चन ,,

ज़ा'नी न असि चा'नी सीवा करिथ
पूज़ा तु तोताह केंह
दया कर असि व्यच्चार रछ्न ,,

पज़िहे नतय छा धर्म करुन
फीरिथ न नज़र दिव
त्या'थि मथुरायि गोख अछ्_रछ्न ,,

च्यथ बो'द्ध मन प्राण अर्पण करिथ
धरिथ छु चोनुय ध्यान
सु ध्यान खेलान असि ज्ञानु वच्चन ब्रमु दित०

रछ असि क्षणु क्षणु सा'री निशे
प्रा'रिय ज़न राज़ हय
"केशव" आव आपुदायव त्रच्चन ,,

करुम म हे प्रभो मंगल
वरुम च्चरणारु बिन्दन तल

शरण आसै ब्र दयि नावस
च्च टोठ्योक शरणुय भावस
गंडित छुस भक्ति हुंद अंज़ल वरुम०

वुज़ान छुम चाञि प्रेमुक सेह
करुम अनुभव म्य नोंन अनुग्रह
गछ्युम युथ वासना निर्मल ,,

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

दि म्य शक्तिपातुकुय प्रसाद
वुछान छुस कोनु चा'ञी पाद
तवय छम च्यथ गा'मु'त्र चं त्रल वरुम०

छु चोनुय आसुनुय सन्मुख
छ_यनन दुःख प्रावु निर्भय सुख
म्य सो'य भक्ति गयम सुफल ,,

छो'त्रर छुम ओसमुत कर्मुक
यि ब्रह्मण जन्म छुम धर्मुक
तुलन प्रारब्ध छुस अंज़ल ,,

बु छुस पुनर आवृती कालन
फसोवमुत वासुनायि ज़ालनु
म्य कास अविद्यायि हन्ज़ गांगल वरुम०

गछ_यम सद्ज्ञान त्युथ उपदुन
इंयम युथ दृष्टि मंज़ दो'न कुन
छु सोऽहं नावु युथ केवल ,,

म्यय रोज़ुन गछि नु रज़ तै तम
बनुन ततु सतु गो'छुम उत्तम
छुसै स्वभाव किञ शीतल ,,

दयायि ह'न्ज़ दृष्टि कुञ केवल
करुम अन्तर बहिर निर्मल
डलस मंज़ युथ ज़लस कंवल ,,

दितम विचार अग्नुक बल
दज़न कामादिककी ज़ंगल
वुछन स्वप्रकाशचीय वुज़_मल ,,

हे केशव ! "केशव" अर्पणै
सदा निर्मल सुदर्शनै
म्य फोलुनाव द्वादुशान्त मंडल ,,

———

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

प्रये चाजे दयो नेरय
बु फेरयय दरदु नयि हो हो

ह्यतुन सूत्यन पनुन रहबर
गछ़ख को'त रठ च़्र पनुनुय बर
न्यबर मो नेर च़्र अछ़ अंदर
दिलुक दिलबर छु सोऽहंसो

च़्र अछ़ अन्दर पनुन वुछ ओल
च़्र पानय छुख घरुक घरुवोल
ग्रट्य फेरान महीन नेरान
बु ज़ोरे आबि सोऽहंसो

छु गफ़लत घटि गाशस ठो'र
तमी गाशे घरिथ छुय मो'र
शबस खसान दो'हस वसान
शबय रोज़ान छु सोऽहंसो

छुखय रिंदानु कतुरस प्यठ
छु कतुरय कुलि दरियाव च्यथ
छु दरियाव दूरि अरफ़ानय
गुहान पानय छु सोऽहंसो

रबुय छुय सब सबुय छुय रब
सपन रिंदानु बाज़ानै
छु हा'सिल बा सफ़ा गा'सिल
छु हा'सिल आशके हो हो

हुवल अव्वल हुवल आ'खर
हुवल ज़ा'हिर हुवल बा'तिन
हुवेदा शाहि शाहानय
वज़ान पानय छु सोऽहंसो

अथव पनुन्यन ल्युखुम नामै
"मकुन्द रामै" पनुन अहवाल

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

यि केंह वव्यम ती ज़ामै
म्य आरामै छु सोऽहंसो

दीनानाथ 'नादिम'

ज़गत जन्नी भवा'नी माज्य पनुनी
दिमय मीठय पादुनुय माता नमस्ते ॥

हलम भ'र्य भर्य छि मोंख़्तकि वाव मालन
थवान फिरि फिरि छि यिम चाव्यन गुलालन ॥

वुज़ान छुय नागुरादन पोव्य कोताह
स्यंधन आरन कोलन दो'धु वो'व्य कोताह ॥

च्य़ क'मि वो'ननयच्न छखु बेकस तु बेबस
च्य़ क'मि वो'नुनय च्न छख इछ़ या ति तंगदस ॥

च्य़ क'मि वो'ननय छि बुलबुल चा'ञ हा'रिथ
बिहिथ वा'राननय मंज़ का'र मा'रिथ ॥

च्न छख हिमालच जिठ़ टा'ठ हिश कूर
तवय छु नूर_आजोशुन च्य़य भर पूर ॥

दयस आव न्यन्द्रि मंज स्वपना मनस मंज़
वुछिन अख अपसरा निशिबो'द्ध वनुस मंज़ ॥

यि डींशिथ आव असुन तस द्रायि वुज़ुमल
संगर मालन खटिथ रुज़ छायि तल तल ॥

यहय वुज़मल तिहिंदि मो'ख याम द्राये
बनिथ कश्मीर दीवी पा'नु आयें ॥

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

लीला

अर्जुन देव 'मजबूर'

करख ना सा'नि रक्षा ही भवा'नी
छ्य असि सथ् चा'नि च्य़ कुन छी नमा'नी ॥
रछांन भ'क्तयन् च्र छख ही मा'ज दीवी
थ'विथ आशा मनस् अन्दर छि चा'नी ॥
यो'गस व्यख़ुतिस अन्दर ह्यन् आय सा'री
दुखी-दिल अ'सि छि ज़ा'री बोज़ सा'नी ॥
खता र'सित्यन च्र ह्यवख ना वथा कांह
कृपा कर ही स'ती कर मेहरबा'नी ॥
च्र छख् शख़ुती त' असि दित् एक्त्युक वर
समय कोताह कठ्युन आमुत भवांनी ॥
सपुद् क्याहतामु छ'करनुह आयि सा'री
च्य़ छुई मोलूम सोरूई छख च्र-ज्ञा'नी ॥
पन'नी सन्तानु र'छज्यख़ु जायि जाये
कलस प्यठ सायि क'रि ज्यख राज़ु रा'नी ॥
सत्तुच वथ हा'विज्यख करिज्यख न'ज़ाह बंद
बो'धी बल मान दिथ ब्ययि अन्न त' पा'नी ॥
वनव कस चानि रुस कुस् बोज़ि सोनुई
दया कर च्रई फक़त छख सा'ञ वा'णी ॥
ब' छुस 'मजबूर' क़लमस आय बख़्शुम
व्यच्रारनु था'विज्यमु व्यथि हं'ज़ रवा'नी ॥

मोती लाल "साकी"

ज़ारु पारु

कर्म च्रठ पतु बुथि छुम वर्जुन वाव
तार दिनु वालि आवलुनि ता'रज्यम नाव
बानु ज़ोनथम ज़ांह ति मा क'रमय ग्राव
तार दिनु वालि आवल'नि ता'रज्यम नाव ॥

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

फुटि म'ति ज़ुवु पाथुन छु मंज़िलस दूर
अनुग्रह नय आसि कथ मलनय सूर
दर्द नयि हं'ज लय बोज़ छु न टाव टाव
तार दिनु वालि आव'लनि ता'रज़्यम नाव ।

घटि ज़लि मंज़ु कड्तम अनतम गाश
चा'न्य सथ छम प्रोवुम ज़नमुक राश
काल गंडितन का'त्याह छि गिंदनस दाव
तार दिनु वालि आवल'नि ता'रज़्यम नाव

जगि व्यवहार कर्तवु क्यथ ह्यमु पथ
डखि रूज़म अंदु वंदु चा'न्य दयु गथ
शान रुज़म ज़ि दोहदिशि कोरथम भाव
तार दिनु वालि आव'लनि ता'रज़्यम नाव

छोर ओसुस तु थाविथम बानु भ'रि भ'रि
ह्यछि नोवथस ह्यछि हा नु ज़ांह ति परि प'रि
चानि वति कर अ'शि वाञि म्यूठ छिरुकाव
तार दिनु वालि आवल'नि ता'रिज़्यम नाव

ब्रह्म रूपु छुम प्रथ रंगु चोन दर्शुन
छाय ब्रह्मांड सोन छुनु रछ ति कर्शुन
नादु बिंदु छुम थ्यकनस चोनुय नाव
तार दिनु वालि आवल'नि ता'रज़्यम नाव

आनंद गणु मुच्चरुम बर्न्यन ता'रि
अरुसरु छिम वा'च्चम ग्रटु अन'वारि
नामु स्मरण चाञ छम शोकु पा'राव
तार दिनु वालि आव'लनि ता'रज़्यम नाव

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

शिव अस्तुतिः

"साकी"

का'लास नाथु कालु सम्हारु शंकर
ज़न्मकि भैरव बालु दिज़ि - तार
यूगु न्यन्द्रायि वोंथुहै योगीश्वर
ज़न्मकि भैरव बालु दिज़ि तार

समसार पोशि कस यि छु वां'गुजि घरु
नामु स्मरणु चानि बनि मोकजार
सोरन मरुलकि तु लसनुकि अरुसरु.
ज़न्मकि भैरव बालु दिजि तार

सूहम शब्दु छुख हनि हनि ईश्वर
वनि यस आख तस रोज़ि मा लार
न छु तस मरु मरु न छु तस ज़रु ज़रु
ज़न्मकि भैरव बालु दिज़ि तार

निर्गुणु निर्दोषि हे भस्माधरु
शक्ती नाथ छुख प्राणादार
क्षणु क्षणु तोतनस अ'सिं छि हरु हरु
ज़न्मकि भैरव बालु दिज़ि तार

पाद चा'ज्य रटि म'ति असि अमरीश्वर
भक्ति भावु छंडिम'ति कम छम्ब छार
शीशु नागु तन छजि अदु न्नायि यमि बरु
ज़न्मकि भैरव बालु दिज़ि - तार

अमरनाथ लीला

"साकी"

कमलज़ि नाथ वोंथ नारायणुसय
शिव दर्शुनसय पख अमरनाथ
महिमा प्रावनुक गो'ण यथ क्षणुसय
शिव दर्शनसय पख अमरनाथ

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

भक्ति भावु सो'धि वा'निस सतज़नुसय
कोसनस ज़न्मन हुंद अभिलाश
पान पुशुरोवुन वृशाभसनुसय
शिव दर्शनसय पख अमरनाथ

अंधकारु ह्यनु आय मरनस न ज़्यनुसय
दीवु आदि दीवु छय ज़गतस आश
पूज़ा कर तनु मनु शंकरशनसय
शिव दर्शनस पख अमरनाथ

अछ् रछ् द्रामच्न छस वनु वनु सय
सायि करनस आव पानु आकाश
भैरव नाथ छुम रुज़िथ मनुसय
शिव दर्शनसय पख अमरनाथ

यारुन केन्ह छुनु धारन तु धनुसय
नाल वलि सारिनुय कालु बा'श
लथ दिथ नेरव ज़न्मु कृष्णुसय
शिव दर्शनसय पख अमरनाथ

देवी अस्तुती:

"साकी"

छि ह्यति'मुति शेरि प्यठ असि पाद चा'नी
क्षमा असि कर क्षमा माता भवा'नी
ज़गत ज़ननी च़्न माता राज़ रानी
क्षमा असि कर क्षमा माता भवा'नी

तोता चानी यिमव क'र तारु तिम त'रि
रोटुय दामानु च़्नय छख कासुवुनि ठ'रि
च़्न बख्शनहार छख कांह छुय न सा'नी
क्षमा असि कर क्षमा माता भवा'नी

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

म्य सहस्र नाम़ वुछुमय सास़ ब'दि रूप
घटन ग़ज चा'अय सथ प्रज़लान छि धूप
च्न दुर्गा शारिका छख मा'ज सा'नी
क्षमा असि कर क्षमा माता भवा'नी

च्न तुल मुलि राज्ञा च्नय शारदा छख
च्न छख हेमावती च्नय अबिम्का छख
छि व'लि म'ति क्रीडज़ालय कर्म ला'नी
क्षमा असि कर क्षमा माता भवा'नी

च्न पालन हार छख असि पालना कर
दया करत़ च्नय असि शाफ वो'नि हर
दिवान मुक्ती छि चा'नी मीठ वा'णी
क्षमा असि कर क्षमा माता भवा'नी

दिल फौंलि दर्शन चाने
दिम़्यो गो'ड अशि वाज़े
सूरम़ति सर्फ़ गोसाज़े
सूरम़ति सर्फ़ गोसाज़े

शिव छुख कैलास वा'सी
तति छ्य वज़ान शीऩ शाज़े
शक्ति छय चा'ञ दासी
सूरम़ति०

जटि छुय च्नन्द्रम लोमान
गौरी शंकर साज़ें
हटि छुय वासुक शोमान
सूरम़ति०

मृग़ छाला छुख वलिथ़ुय
खुर कास असि डयक़ लाने
पानस भस्मा म'लिथ़'य
सूरम़ति०

जटि छुख गंगा त्रावान
यमराज़ भय चोन माने
पापव निशि मोकलावान
सूरम़ति

छुय त्रिशूल काल़ संहारी
चानि क्रोध जग मा फाने
पाऩ छुख कल्याण का'री
सूरम़ति०

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

नन्दकेश्वर चोन वाहन — पूर्ण कर मन कामन
कुस नु चोन महिमा ज़ाने — सूरमुति०

रुद्रगण छिय चा'नि संगी — सा'री चरसी भंगी
काम्देव दों'द न्नखि चान्ने — सूरमुति०

आ'रति छिय अ'सि छारान — कोनु छुख भवसुर तारान
प्रारान तन मा प्राने — सूरमुति०

भोलानाथु सोन संकट — आवागमनुक न्नय न्नठ
इतु गछ़ रोज़ि बेमाने — सूरमुति०

ओस कस रूज़ित अंदरी वैर
क'मि नियु प्रा'ट्ति म्या'ञ पनु पह्रा'र
मुरलीदरु सुन्द छुम यी खैर
क'मि नियु प्रा'ट्ति म्या'ञ पनु पह्रा'र — क'मि०

थो'क़मुत सुदामा घरु यलि आव
नेत्रव त्रो'वुन आ'शि दरियाव
यति कुस राज़ा रोज़ान गैर — ,,

क'ति छुम घरबार यो'त कोंत आस
फाकै वा'लिंजि गोम तलुवास
गा'मच्र कों'त म्यानि तुलसी वा'र — ,,

क'ति गय पा'दु इम गुल तु गुलज़ार
आय क'ति यो'तुनस मोख्तु फं'वार
रंगु मंदोर्यन ल'ज ना तार — ,,

आय कर यो'तु इम दास दा'सी
शुर्य म्यानि गय मा वनवासी
मायि ह'च्र भा'र्य द्रयि ना सा'र — ,,

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

को'त गयि मा'सूम सुन्दर पोश
लोल आम वुछ्हक रोवुम होश
मूरान गुलि ओस प्रायन दा'र

क'मि०

ओरुत्त सुदामा गव परेशान
व्य'ख्न्नय् माया ओस डेंशान
द्रायस सुशीला बुथि वनहा'र

,,

म्य सोंगों पान दर्शुन चोन
बन्यमना शारिका दीवी
मनस मंज़ राग चोनुय वों'ञ्य
सन्यमना शारिका दीवी

म्य प्ययिना मा'जि पायस मन
बु करहय् चा'ञ्य आराधन
म्य अन्दरी चाञि लोलुक श्रेह्
घन्यमना शारिका दीवी

यि दिल म्योन ज़न छु क्रेंखा अ'ख
लगिथ क्रेंहञर छु अथ प्यठ सख
अक्षर अख पनुनि भक्ति हुन्द
खनखना शारिका दीवी

ब छुसना क्रूर अज्ञा'नी
स्यठाह मूर्खा तु अभिमा'नी
म्य माता गाश ज्ञानुक सुय
अन्यमना शारिका दीवी

लगान कोताह मधुर दुनिया
यि खा'ली आसवुन स्वपना
म्य सोरुय सिर ज़्यनुक मरनुक
नन्यमना शारिका दीवी

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

दिवान भ्रम आयि मोह माया
दया करिना महामाया
म्य संसारुचि यि मोह माया
छेन्यमना शारिका दीवी

ब "प्रेमी" छुस तसुन्द अभिलाष
करय्मना म्या'ज्य पूर्ण आश
उपाया भवसरस तरनुक
करिमना शारिका दीवी

काशी नाथ 'बागबान'

घन्योमुत छुम मनस चोन भाव
जगत माता म्य दर्शुन हाव
म्य आमुत लोलु बानन छव — जगत माता०

जगत माता च्र टोठान छख
भगत सन्तानन'य बेशक
छ्यवान युस लोलु सू'त्य चोन नाव — "

म्य वोल शानव प्यठै बोरुय
म पुशरोव पान च्र सोरुय
म्य केवल चोन छुम चिकु चाव — "

बु छुस प'जि किञ स्यठाह नादान
करान छुस पाप छुस अनज़ान
करुम माफ छुय च्र मता नाव — "

प्रियम नगरस अंदर च्रामुत
बु चाञे डेडि तल आमुत
प्रियम अमृत पनुन दो'ध चाव — "

तमिस क्या गम यमिस यावर
च्र आसख ताज दिथ बरसर
शत्रु सुंद पोरि क'ति तस दाव — "

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

वदान छुस चा'ञ्य घनेयम कल
दलिस तल मा'जि ह्यतम जल जल
म्य सतुचे प्रेमु न्यन्दरे साव - जगत माता०

वनान छुस वीलु तय ज़ारी
थो'कुस यूत काल प्रा'रि प्रा'री
म्य लोकुचार गव बुजर वो'ञ आव ''

जगत माता म्य संतुष्ट रोज़
वनान ज़ा'री छुसय च़य बोज़
पनञ दयगत दयालु ह्राव जगत माता०

बु छुस हिंयि गोंदि च्य कित्य सारान
प्रेयम सान डेडि तल प्रारान
च़ प्रेमकि भावु हिंयि गोंदि छाव ''

छु "बागवान" च्यय परन प्योमुत
गंडिथ गु'लि च्यय शरण गोमुत
छु स्मराण चोन हर दमु नाव ''

टाठि राधायि दर्शुन दितुमो
बोम्बरो कमल छसय लारि इतुमो

मो'ख ह्राव सिर्यि ह्युव तीज़ नोंन त्राव
राधायि वुछ मनस कोताह छु भाव
प्रारान छसया कृष्णा लारि इतुमो बोम्बरो०

यथ ज़गतस मंज़ छम चा'ञ आश
अनुग्रह चाञि सू'त्य नेरय्म अभिलाष
कृष्ण_गामन्न छसय तारि इतुमो ''

भावु पम्पोश फो'लिम'ति न्रोपा'री
क्राव करनि इखना ही मुरा'री
ओश छुम वसान धारि धारि इतुमो ''

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

ग़म छुम कृष्णा क'त्यू गा़र्‌यो
दूरय़ चोनुय क'त्यू ज़ा़र्‌यो
डालु दितु बालु लाचारु इतुमो　　　　बोम्बरो०

वनस मंज़ राधा छसया प्रारान
ब्रा'ंति छिम गछ़ान कृष्णा च्य़ाय छ़ारान
तोतो वनुचे ह्यारि इतुमो　　　　"

कन्द तय नाबद भरयो थाल'
राधा वति प्यठ प्रारै कोताह काल
कृष्णु गा'मन्न छसय तारि इतुमो　　　　"

लोलुचि लीला प'र म्य सा'रय
त्रन भवनव हुंद छुख स्वामी
भवुसरु च्य़ रोस्त कुस म्य तारि इतुमो　　　　"

मा'जि शारिका'यि कर दया　　　　वर दया ही भवा'नी
कर दयायि हंज दृष्टी　　　　सो'य छम ब'ड मेहरबा'नी

आयि लारान च्य़ निश योरं　　　　कर्म खुरि भावा'नी
मतु वछुतु कर्मन कुन　　　　सो'य छम पशैमा'नी

को'तान रोज़ि युन तय गछु न　　　　को'तान रोज़ि क्रेशुन वदुन
तार दिवान सारिनुय छख　　　　असि ति रोज़ ता़रा'नी

कोपुत्र छु माजि आसान　　　　मा'जि छन तस ति रोशान
अ'सि मंगान चा'ञी दया　　　　जग़तुचि राज़ुरा'नी

नखि छख डखि छख त्रय　　　　च्य़ सिवा कांह ति छुनु ब्याखु
दोह तु रात चोनुय फिराक़　　　　अख अज़ाब रुहा'नी

ओ'श वसान त्रालि त्राले　　　　मा'जि भवा'नि ह्यावी दर्शुन
केन्ह ति छुन तगान बोज़ुन　　　　केन्ह नह छि अ'सि ज़ानानी

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

बूज़मुत छि हलि मुश्किल
अख रछ़ करतु वोञि गौर

वोंञ अ'सि तवय आयि योर
हिमालुचि राज़ु रा'नी

लो'कचारस मशिथ गोम
कांह न गा'फिला म्य ह्युव

बुजरस वोंञ च्यतस प्योम
क्रंज़लि पोञि सारा'नी

पाप शाप कास्तम च्रय
गीर को'रहस बु पापव

वालतम बा'रि पाप'नि
केन्ह नय छुम वो'ञ तगा'नी

"दास" छु दर इन्तिज़ार
ल्यम्बि मंज़ पम्पोश खार

भव सागर स दिस तार
बोज़तय म्या'ञ ज़ा'री

हे सदा शिव अज़ हा म्योन
कांह ति निराश गव ना

बोज़ख ना ज़ारु पारय
चाञि ब'डि दरबारा'य

शो'द्ध भक्ति भावुनायि सू'त्य
गछि तस मन निर्मल

युस चाञि डेढि तल आव
ब्ययि गल्यस अहंकारा'य

चाञि ऩामु मात्र सू'त्य
ज़न्मन हं'दि पाप अंबार

पापियव ति प्रोव मोक्षदाम
नखु वसन यकन्नारा'य

मन छल ज्ञानु ज़ल सू'त्य
नोव नोव करो पा'राव

अज्ञानु मल वो'थराव
प्रोन त्राव दाग़दारा'य

ईश्वर माया चा'ञ्य
रंगु रंगु आकर्षण

शूभ'वनि तु लूभव'नि क्याह
कुनि प्यठ नु एतिबारा'य

अंदुरी अचू अंदर
तस सू'त्य मिलुनावु ज़ान

तथ अन्दर छु शिवु मुर्तीमान
मुसु फेर आवा'रय

भक्तीवत्सल छी वनान
दयायि हंदि बर मुच्र राव

छुख च्र भक्तयन दया करान
पापन कर उद्धारा'य

ज्यूति यलि ज्ञानु दीपक
सूर गछि अभिमानस

मोह अनिगटु गछि म्य दूर
द्वैतु गलि यकबारा'य

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

जन्मु ज़ाल वलुनय आम तमि सू'त्य गंज म्याञ्य क्राम
दर्शुन दितम लोल आम ब्ययि करसु म्योन चारा'य

धनु दौलत तु भा'य बंध सा'री छि दो'ख बैगुरान
सोर छुय अखु दयु नाव मिथ्या संसारा'य

म्यति दिम लोलु वुज़या प्रेमु ज़ल घवु म्य वुज़िहे
फो'लि म्योन भावु पम्पोश खारु ह्य'य अंबारा'य

च्वति गछ़ गछ़ दिवान कनु डोल ब'ति नु सा छोरत ज़ांह
दर म्य पादि कमलन तल अथ नु सु छुय कांह चारा'य

राधा कृष्णा छम चा'ञ्य लादन पादन वन्दुयो पान
दीना नाया कन थाव नादन पादन वन्दुयो पान

ओरुत आदि प्रभातन प्रामुत आमुत मंगने योर
तन मन अर्पण को'रमुत पादन पादन वन्दुयो पान

अयु छो'न न्ययु नोंन ब्ययि ननु वोरुय वातान सो'दामा योर
मनि मंज़ करिम'ति लोलु आराधन पादन वन्दुयो पान

नेत्रव त्रावान अशूने च्रालो लालो दर्शुन हाव
सुय ज़ल अशि कुय खो'त कोलु रादन पादन वन्दुयो पान

शरणागतु वत्सल मुरलीधर च्राचर रक्षपाल
पूर्ण कर वो'ञ्य पनुन्यन वादन पादन वन्दुयो पान

डींशिथ हर्षस गव ब्रजुनन्दन बन्धन कासन वोल
अनुग्रह को'र तस त'मि शाहज़ादन पादन वन्दुयो पान

बख्तावारा आमुत लारान प्रारान डेढ़े तल
बख़्शित गव तस वो'ञ्य अपराधन पादन वन्दुयो पान

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

आधारु जगतुक कुलुय छु मन्त्र
शिवायि नम; ओं नमः शिवाये

त्रिपंच नयनो ही आदि दीवो
जटा मुकट छुय गंडिथ च्च शीवो
चन्द्र अर्द्ध शेखुर त्रिलोचनाये — शिवायि०

च्च नील कंठो जटन छय गंगा
च्च मोक्षदायक गोसो'ञ्य नंगा
अलक्ष अगोचर छय्मन गो'फाये

बिहित छय गौरी च्च सू'त्य नालय
व'लिथ छुय सर्फन हुंदुय दुशालै
सहस्र सिर्यि तीज़ च्च मंज़ जटाये — ''

बो'ज़न बिछन हन्ज़ च्च ना'लि मालय
च्च योनि कनि छुय नागु कालय
अगौर यि रूप चोन इतम दयाये — ''

अथस च्च डाबर च्च बीन-वायान
कपालु मालु त्रिशूल धारान
भक्तयन अभय छुख दिवान यछाये — ''

रटिथ च्च अंकुश खडग धा'रिथ
धनुर धनुन मंज़ पिनाक चा'रिथ
वो'दनि बु डंडुवत करय हा माये — ''

भवायि दीवो शर्वायि दीवो
भस्मायि दीवो सोरान च्च जीवो
च्च जीवु पूज़ान छी भावुनाये — ''

सम्सारु सोंदुरस म्य तारु तारुम
अजपा गायत्री म्य पान यारुम
वो'लुस कोकर्मव कोवासुनाये — ''

अमर बनावुम शिव मार्ग हावुम
शिवो शिव अर्पण शिवय बनावुम
ही आशु तोशो इतम दयाये — ''

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

भक्त यि चोनुय कटाक्ष चात्ये
स्वरूप चोनुय त्रो'पारि ज्ञानय
श्रधायि भक्ति इतम दयाये शिवायि०

गणेशस मंत्र छि स्यठाह यि खूबी
न छुय सु यूगी न छुय सु भूगी
भक्ती म्य प्रावनावतम धारनाये ,,

अनाथ बन्धो दयायि सागर
संसारकी दो'ख म्य यिम छिं तिम चठ
जगतस दया कर च़ ह्यय ओमाये ,,

सो'न्दुरो सोनु संदल गरय
हो हो करय श्यामु सो'न्दुरय

गूपीय प्रारान गोकुलै
वेरि चाञि फेरान निर्मलय
खेलव तु मेलव अमुरै हो हो०

जसुधा वुछितोन भाग्यवान्
टोठ्य यस यिम जु सन्तान
बलभद्र तु ब्यिय कृष्णु गों'दुरै ,,

अतरे पलंग पा'रावयो
पा'ठीय करुन वथुरावुयो
अंजलि दर्शन मोंखु हो जरै ,,

गलि गलि दो'ध बो' चावयो
फलि फलि नाबद ख्यावयो
बादाम कंदु चंदु हो भरै ,,

आसान छुख कैलासु कोह
मासान छुख तति रात तु दोह
हरमो'ख के गंगा धरै ,,

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

ना'लि माल खालि कलुवाली
रंग रंग जाम ज़रका'री
शीतल स्वभाव पीताम्बरै हो हो०

अर्धुह रातुन गुलि गन्डित बोज़ ज़ारु म्योन
मा'ज्य भवा'नी अज़ करुख ना चारु म्योन
आदि म्योन तय अन्तु म्योन आधार म्योन
सायि म्योन तय सार म्योन शह_जारु म्योन

अ'हमका तय अनपढा जा'हिला
गा'फ़िला तय शरमसारा ना'दिमा
होलु जिगरुक कास अन्धकार म्योन मा'ज्य०

जान निसारा दर्दु दिल हथ्य दरजिगर
पापु कर्मव आ'र क्र'रम'त्र छस मगर
पापु घटि अथुरो'ट क'रुयम सरदार म्योन ,,

हां'गिना छुस मो'लु म्योनुय छुय पता
अख कतरा चा'ञ्य नज़रा छम सथ्ठा
त्रय हय गोहर त्रय दुरे शहवार म्योन ,,

रूसि कटिह नाफु हिथ्य छस दरबदर
असलुची माता म्य मा छम कैंह खबर
त्रय ज्ञान तय त्रय हय मो'ख्तयहारु म्योन ,,

तन्गदस्ती शरमसा'री तय हत्रर
सोरवुनय दोह अन्तु रो'स्तुय छुम सफ़र
आदिशक्ति जानुवन इसरारु म्योन ,,

दोह कलसं प्यठ ग्रोर वोतसुय शामनुइ.
मुर दारिथ त्र'थ् बु लायिथ जामुमंइ
खा'लि बु नेरा य'ति भ'रिथ दरबार चोन ,,

दामनस तल माता रछतम परदु सान
लुक पामन युथ नु लगिहे म्योन पान
त्रय हय सम्पत त्रय हय भवसुर तार म्योन ,,

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

सा'यता छुस शान्त रूपी बोज़ सदा
अयु छो'न तय न्यथुनो'न आमुत गदा
शक्ति रूपी वो'ञ्य च्य ईतुनै आरु म्योन   माज्य०

सर पथर पादन तलय म्य त्रोवुमय
होल जिगरुक हाल पनुनुय भोवमय
दयारूपी जय च्य बारम्बारु म्योन   ,,

सनियासय हा गोसाञे   कुञि कने इखना वञे

जटि मंज़ छ्य गंगा जा'री
ज़न छि वसान अमृत धा'री
सूर_भस्मा मलिथ तने   कुञि०

ड्यकस प्यठ छी त्रु न्यथुर
शूभुवनि ज़न पम्पोशि व'थर
वासुक नाग छुय योञि कञे   ,,

जाय च्य र'टथम शिन्या शयन
छायि छ_यफ ह_यथ रुदहम नयन
सर्वु व्यापक छुख हनि हने   ,,

खासु वृषभा छुय वाहनुय
सैर करान छुख त्रिभवुनय
छय च्य ओमा खोवरि कञे   ,,

पानु म्यान्यो मो नाज़ तने
काल वलिय यय सूर बने
शिव च्न गारुन मंज़ बाग मञे   ,,

आ'रतिस कास्तम आ'रच्नर्य
घट कास्तम अमरीश्वरय
मो'ख म्य हावतम हरुमुख कञे   ,,

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

च़्रो'न भुज़न छी आयुधा
शंख च़्रक्र कपाल् गदा
सारिन्य मंज़ छुख अन्द् कव़े कुनि०

वाद् करिथ्य यति ह'य द्रामा'य
च़्रे'र क्याज़ि गोस योर ना'य आमा'य

बर् गयस क्याह कर् ला'निस
तीर ला'यनम जिगरस म्या'ञिस
सन् कोरनम तु तनुनय आमा'य च़्रेर क्याज़ि०

व'छ वा'लिंज हावस मुच़्र्'रिथ
क'छ पन ज़न त्रा'वुनस पुच़्रनिथ
हृदयस दोदुर ह्यय च़्रामाय "

स्वर्ग मंडलचि स्वर्गचि हूरे
दिल ह्यथ गोम चूरे चूरे
चू रि निसफ शबन द्रामाय "

बुम्ब् खंजर ब्यथि तीरि मिजिगान
दूरि प्यठै हूरन छु लायान
दिल छुम करान बे आरामा'य "

राधा छस तन ब् नाविथ
सो'न् महारव्न ज़न पा'रा'विथ
तनि गंडिम'ति स्वर्गकि जामय च़्रेर०

बन्सी वायान लायान कम तीर
छोक् लद छी गछान कम कम वीर
तीर लायान लायान द्रामा'य "

पास् सो'नस क'रनम सरतल
बालि ला'यनम लानिन करतल
खून पनने सोज़स नामा'य "

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

दो'धु चू र हय मक्खन चू र म्योन
वनिवी सखियव तो'हि मा बी ड्यूंठवोन
नाव तमिसुंद छु राधे श्यामा'य ''

दान मनुसा'विथ अथु धारुनोवुथस
अथु पथ निथ म'ञ्न_रोवुथस
यञ्न को'रथम अवमान मदुनो ईछा जान०

रसु रसु कमिताम वति पकुनोवुथस
कुन ज़ो'न वति प्यठ त्रोवुथस
अनज़ान सरिगरदान मारुमति ''

मनुवाजि मयाञि आशु पोश रुवुना'विथ
सग दिथ वारु फोलुना'विथ
पानै को'रथस फान मस्तानु ''

ञ्नराञ्नर छुख परमेश्वरो	रछतम पनन्यन पादन तल
गज़मोख बाल चन्द्र लम्बूदरो	विनायको भविनय जय
हरमोख दर्शुन दितम ईश्वरो	रछतम
निष्कल नाव चोन न्यंरजनो	सोय कल ध'रिथ न्रिकारण
स्मरणि चानि स'त्य ज़न्म मृत हरो	रछतम
दीवी त देवता सा'री आयि स'मिथ	न'मिथ छि करान व'न्य स्मरण
स्मरणि चानि स'त्य सा'री शाप हरो.	रछतम

—0—

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

★पंचस्तविः

आसय शरण च्यय पादन विनय् किञ नमिथ्य
व्याकुलतायि मंज़ माता रछतम च्यय
व्याकुलतायि मंज़ ब'जि आपुदायि मंज़
गृह_पीडायि मंज़ माता रछतम च्यय

सरस्वती त्रिपोर् सो'न्दरी ज़गतमाता
भवानीश्वरी छक आसुवुञ्य च्यय
ब्रह्मा रुद्र इन्द्र सिर्य च्नन्द्रम् कुमार
विष्णु गणेश छि पूज़ान च्यय
अन्दर् न्यबर् वा'तिथ त्रिभुवनस सा'रिसुय
गुल्य गंडिथ म्योन प्रणाम आ'सिनय च्यय आसय०

यमि सुन्द प्रभाव छुय हद रो'स्त आसुवुन
भगवान तु शेषुनाग छिन् वनिथ ह्यकान
ब्रह्मा तु शंकर तिम ति छिय हा'रिथ
चाञि ताकुतुक महिमा नु_ज़ानान
सो'य चण्डी दीवी रछतन म्य
यो'स सा'रिसुय ज़गतस छि पालान
दीतन म्य तिछ़ बो'द्ध यह'य ज़गतमाता
यमि सू'त्य अशुभ भय छु नष्ट सपदान ,,

ही दीवी छक च्न_त्र्यम्बक् पत्नी
च्यय वनान सती च्यय पार्वती
त्रैलोकी हन्ज़ माता भगवती
च्यय वर दिवान छख च्न_मृडानी
च्यय त्रिपोर् सौंन्दरी च्यय रुद्राणी
च्यय भयानक रूप च्यय शरवरी
च्यय चंडी छक च्यय त्रिशूल् धारा'णी
का'ली च्यय कालस नाशु करान ,,

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

ही दीवी चा'ञि दर्शुनुक म्य अभिलाष
प्रथ विज़ि नेत्रन मंज़ म्य रूज़ितन
चांञ्य गुण बोज़नुक तमुन्ना म्य आ'स्यतन
प्रथ विज़ि रूज़ितन म्यान्यन कनन
चा'ञ्य नामु स्मरण च्यतस मंज़ म्य गुरि गुरि
चा'ञ्य पादुय पूज़ा म्यान्यन अथन
चा'ञ्य कीर्तन करु वुन्य रूज़ितन वा'णी
उपासना चाञ्य मतु कम म्य गछ़ितन आसय०

युस पुरुष अकि लटि करि च्यय कुन प्रणाम
तसुन्ज़ि ख्यावि प्यठ छु इन्द्राज़ु नमान
युस पुरुष करान आसि माता चा'ञ्य पूज़ा
पूज़ान तस छि सा'री दीवता
युस पुरुष करान आसि माता चा'ञ्य स्तुता
तमि सुन्ज़ अस्तुतिः छि दीवता करान
युस पुरुष करान आसि माता चोनुय ध्यान
स्वर्ग_चि अछ़_रछ़_तस छि स्मराण ''

कम सना दुख छि तिम ही दुखन गालुवुन्य
यिम गलन नु चाञे स्मरणि सू'त्य
को'सु छि नेकनामी यो'सु कुलस खारुवु'न्य
योसु नु बनि चाञे स्तुतायि सू'त्य
कोसु को'सु छि सिद्धि ही सिंद्धिदात्री
यो'सु नु प्राप्त सपदि चाञे पूज़ायि सू'त्य
कम कम छि तिम यूग ही ज़गतमाता
यिम नु स्यद्ध बनन चाञि च्निन्तन सू'त्य ''

मतलब छख दिवान दुश्मनन गालान
आपुदायन छक नाशु करान
मन किञ रुगन माता च्यय गालान
दीह_चन व्या'ज़न शोमुरावान
संसारुच्य यिम सुख संपुदायि ब'जि
माता तिम छय व्यस्तारान

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

अन्दररिम दुःख तु दा'द्य जीवस च्चय गालान
यिम हय अकि लटि माता नाव चोन सो'रान
तिम कम सना पापव निशि छिनु मो'कुलान
यिम सदा. च्चय कुन गुलि गंडिथ छि रोज़ान आसय०

ही दुर्गे चा'ञ्य स्मरणि ज़ीवस
सा'री भय छि नाश सपदान
वा'रु पा'ठय करय बु चा'ञ्य स्मरण
त्यलि छक ज्ञानच वथ हावान
दारिद्र भावय ब्ययि कठिन दो'ख तु दांद्य
च्चय रो'स्त कुस छुम म्य दूर करान
उपकार छक करान तिमन सारिनुय ज़ीवन
यिम सदा च्चय कुन गुल्य गंडिथ छि रोज़ान ,,

मन्त्रहीन आ'सिथ क्रियाहीन आ'सिथ
व्याधिहीन आ'सिथ यि केंछाह पो'रुम
वोंन्य हय तथ सा'रिसुय ही परमीश्वरी
कृपायि किञ म्य आ'रितस माता बख़शुम

अ'सि आमित बनिथ एकाग्र च्चथ बुनिथ
छुस प्यवान च्चय हय पादन तल परन ,,

★पं० जियालाल जी 'सराफ' एक बड़े देवी भगत सज्जन गुज़रे हैं। आपका देहान्त कुछ वर्ष पहले श्रीनगर में हुआ था। आपने "पंचस्तविः' का काश्मीरी भाषा में अनुवाद किया है, जो बड़ा जनप्रिय है और भक्तजन बडी लग्न के साथ मन्दिरों और दूसरे धर्म - उत्सवों के अवसर पर इन श्लोकों का पाठ-कीर्तन करते हैं। इसी काश्मीरी पंचस्तविः के चन्द श्लोक ऊपर दिये गये हैं।

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

★शिव अस्तुतिः

(फ़ार्सी भाषा में)

हुमा असले महेश्वर बूद — शबशाहे कि मन दीदम
गज़न्फर चर्म दर बरबूद — शब शाहे०

(मैंने रात को देखा शायद वह भगवान महेश्वर थे, उन्होंने हाथी की छाला के वस्त्र धारण किये थे)

ज़ि वस्मश जाम-ए-बर तन — ज़ुनारश मार बर गर्दन
रवानश गंग बर सर बूद — शब शाहे०

(सारे शरीर पर भस्म मला था। गले में सांप को यज्ञोपवीत के रूप में पहन रखा था और उनकी जटाओं में गंगा जी बह रही थी)

सेह चश्मश बर जबीन दारद — ज़ि मेहरो माह रोशन तर
सेह कारण दस्त बस्तह बूद — शब शाहे०

(उनके मुखड़े पर तीन नेत्र थे, जो कि सूर्य और चन्द्रमा से भी अधिक चमकते थे। उनके सामने तीनों कारण ब्रह्मा, विष्णु और महेश हाथ जोडे खडे थे)

ब दस्तश आब-ए-कोसर — व बेख नाकुसि नीलोफर
हिलालश ताज बर सर बूद — शब शाहे०

(हाथ में अमृत का कलश था, कमल फूल के जड़ का शंख था और उनके माथे पर पहली चन्द्रकला विराजमान थी)

उमा अज़ सोइ-ला-बिन्गार — ज़ि सद ख़ुरशीद ताबान तर
सवारश कुल्ब-ए-नर बूद — शब शाहे०

(बाई ओर उमा जी बैठी थी जिसका तेज़ सैंकड़ों सूर्यों की चमक को मात करता था और उनकी सवारी के लिए वृष्भ था)

अजब सन्यास-ए-दीदम — नमो नारायणा गुफ़तम
ब खाके पाय बोसीदम — शब शाहे०

(इस प्रकार मैंने एक अपूर्व सन्यासी के दर्शन किए। मेरे मुंह से "नमो नारायण" के शब्द फूट पड़े। मैंने उनके चरण-कमलों की धूल को चूमा)

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

निगाहे बर मने मिस्कीन नमूद अज़ चश्मि ताबान तर
मकानश लामकान तर बूद शब शाहे०

(उन्होंने मुझ दीन पर अपनी तेजोमय दृष्टि डाली: उनके निवास की सीमा अनन्त और अपार थी)

मनम मर्दान अली खानम गुलामे शाहि शाहानम
अजब इसरार मे बीनम शब शाहे०

(मैंने (अली मर्दान खान) जो कि राजाओं के राजा के दास है, उस रात यह विचित्र रहस्यमय दृष्य देखा)

★अमीर खुसरो की धरती पर लिखी गई यह फार्सी भाषा की शिव अस्तुतिः एतिहासिक है। यह कविता अली मर्दान खान के जो सत्तारहवीं शताब्दी में काश्मीर में मगुल दरबार की ओर से प्रवन्धक के पद पर नियुक्त थे) ; स्वयं के एक एक साक्षात अनुभव की देन है, जो रहस्यमय है।

कहा जाता है, कि अली मर्दान खान शालामार बाग के आस पास रात के समय चहल कदमी कर रहे थे, जहां से महादेव पहाड़ी और उसकी चोटी साफ दृष्टिगोचर है। वह समाधिष्ठ हुये, और उनके अन्तर की आत्मा जाग उठी और भाव उमढ़ पड़े और इस फार्सी भाषा की शिव अस्तुतिः ने जन्म पाया।

खान साहिब ने इस अस्तुतिः में भगवान शंकर का जो नाक-नक्शा पेश किया है, वह पुराणों में पहले से ही दर्ज था। जान पड़ता है, कि खान साहिब रसखान और मीर मुहम्मद जायसी की भांति साधक थे और हिन्दु धर्म और देवमाला से भली भान्ति परिचित थे।

यह अस्तुतिः इस बात की ओर भी संकेत देती है कि ईश्वर के अनुग्रह का प्रताप भी हो सकता है और इसमें उसके धरम का कोई सम्बंध नहीं होता। भगवान चाहें, तो किसी को नैया, बिला पूछे पार लगा सकते हैं, और किसी दूसरे भाग्यहीन के लाख हाथ पांव मारने पर भी कुछ हाथ नहीं लगता।

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

शिवजी का कृष्ण दर्शन के लिए गोकुल में आना

शो'ध बो'ध शंकर आव लारान गोकुल कुनुय
अज़र अमर योगीवश्र निर्मल कुनुय

सु नूर_भ'रिथ ह्वोरि बो'नुय सूरा मलिथ
योगी वेषय केश त्राविथ सु'ह_च़्न_म व'लिथ
कृष्णस वुछुनुक राग वोपुद्योस मनस घो'नुय अज़र०

रंगा रंगय तस सर्फ क्याह आबुरन
त्रि नेत्रधारी दु:खहा'री माला फिरन
त्रिशूल अथस नषुवोरुय प्र'नि खो'तु प्रो'नुय ''

वो'त्त कुस अज़ताम वाति कुस अमिसंद्युन स्वांगन
भिक्षा मंगने च़्राव यलि नन्दु गोर्युन आंगन
बूलन अलक्ष्य सारिवुय ह्योत यच़्न तम्बुलोनुय ''

जसुधा द्रायस भावुसान ह्यथ अख लालु थाला
रटू भूलबाल ना'ल्य त्रावुय ब्ययि मोख्त माला
ती च़्य ख्यावथ यी यछ़्क च़्न पानय ख्यो'नुय ''

तमि जोग्य दो'पनस छुस बु रोज़ान तृप्तय सदा
ती च़्नय कतम यी मनस म्य छुय मुद्दा
क्याह करु लालन छुस मतवाला कुनुइ ज़ो'नुय ''

बु छुस भिक्षुक म्योन मंगुन निष्फल मु कर
यी छुम मुद्दा हाव पनुन यि बालुक सो'न्दर
छुस तम्बल्योमुत बूज़्न बूज्य सु छु रम्बवोनुय ''

जसुधायि दो'पनस नेर गोसाव्य बालुक डरुयम
तस कुस परुयम लवु गछ़_यस क़ंहर करुयम
च़्न छुक विकरोल च़्यय डींशिथ ह्यियि खोच़्न_नुय ''

दा'रिथ सू'ह_च़्नम बम बम छुक हर दम परान
च़्यय कुन वुछिथ वीरन छ्य वा'लिंज थरसान

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

इछ कथ वनुनस न्न गोछुक ना मन्दुछोनुय अज़र०

तमि जोग्य दो'पनस कांह ति बो' छुस न्‌ ग्वव द्रेठाक
मनस अंदर छुय च्यय निष्फल गछ़न यी शा'क
बु दास कृष्णुन आस करनावतम दर्शोनुय ''

त्रन गुणनई प'रि त्रिभुवननाथ बालुक छु चोनुय
छुय सृष्टकर्ता कष्टहर्ता इष्टदीवा म्योनुय
तस लवु पोरुया युस छु जगतस भयु कासवोनुय ''

यमि सन्दि ध्यानय ज्ञानी योगी भवुसरु तरान
यमि सन्दि प'छि सू'त्य योगीश्वर प्राणुक्रिया करान
खटुहन सुय युस आसवुन छु न'नि खो'तु नो'नुय ''

तस पाठ करि क्याह वीद यमि सन्दि स्तोता करान
यमि सन्दि ध्यानय योगीश्वर छि आनन्द भरान
यस सत्यवा'दी वुन्य दिवान छी भ्यो'न भ्यो'नुय ''

युस वेदा'न्ती तस सुय छुय अविद्या कासान
निषेद करिथ प्रतिपादन तस छुय करान
तस छा पोरान प्राह तु पं थन मरुन तु ज्योनुय ''

जसुधाइ दो'पनस मतु अनतम इथुने फंदन
ज्यववुन बालुक हावनय क'ति यि छा अंदन
नेर फेर वनन छुय ना बनन सुय हावोनुय ''

श्री कृष्णन यलि डयोंठुन शंकर सुन्द भाव
पानय नीरिथ तस जोगिस निशि सु आव
तस कुन वुछित थामि शंकर य'त्र सांपो'नुय ''

वुछुन सु बालुक शाम अभिराम तय मुरारी
लछ ब'दि कामदीव छ'पि लगनस छुय आधिका'री
शंकर परन प्योस गव सु फीरिथ कैलाश कुनुय ''

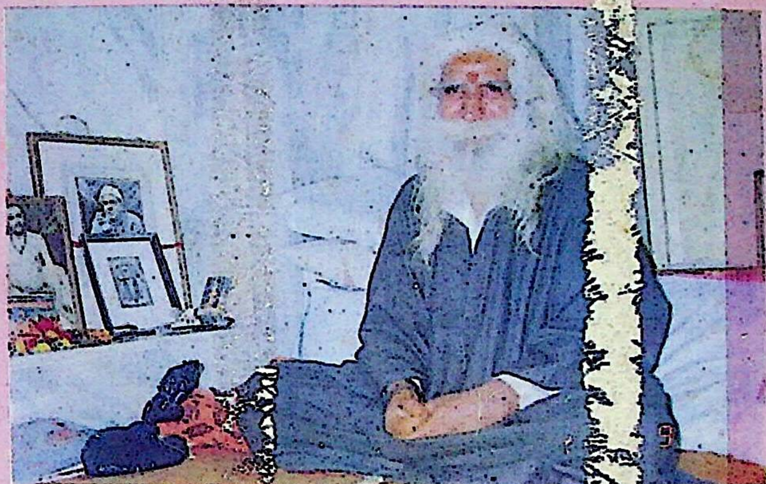
यी "नीलुकंठस" सन्त नन्दुलाल जियन वो'नुय
वन शेवु सुन्दुय गोकुलस अंदर युनुय
शंकर तु कृष्ण कृष्ण तु शंकर छुय नो भ्यो'नुय ''

—शुभ समाप्तम—

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

परम पूजनीय योगीराज श्री मस्तबब जी म[illegible]ज



Place your orders for supply of 'Sahaza [illegible] sam' right now. For its sale, the following di[illegible]unts are available:—

5-10	copies	$2\frac{1}{2}$
11-50	"	4%
51& above	"	5%

Postage & V.P.P. shall be charged e[illegible], against advance payments @ 50% of the c[illegible] of each consignment.

Pl[illegible] contact or write to:

1. SHRI MAST[illegible]B ASHRAM TRUST (R[illegible]d.)
   Patoli Mang[illegible]rian, P.O. Janipur,
   JAMMU (Ta[illegible]) Pin- 180007
2. SHRI MAS[illegible]AB ASHRAM
   KARALA (K[illegible]JHAWALA ROAD)
   DELHI-81

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

स्वांमी मस्तराम जी महाराज़ के सद्वचन

- साधु रमता भला।
- साधु त्याग करता है, स्वेच्छा से - पर दूसरे पुरुष डंडे के जोर से।
- परमार्थ सतकर्म, सद्भाव, सतगुण और सतविचार का दूसरा नाम है।
- परात्मा एक भाव है, और वह है प्रेम।
- जीवन एक महायज्ञ है, और श्वास-उश्वास, सतकर्म और सदभाव इसकी आहुतियां।
- परोपकार बहुत बड़ी साधना है।
- तोड़ने से जोड़ना अच्छा है।
- भगावान के नाम पर अर्पण होना, यह धर्म है और कर्तव्य भी।
- भक्तजन रक्षा करते हैं, हानि नहीं पहुंचाते।
- गुरू-शिष्य का नाता एक सूक्ष्म रिश्ता है, इसमें भावुकता का कोई स्थान नहीं।
- आध्यात्मिक पथ पर चलने वाले को पैसी की चिन्ता नहीं करनी चाहिए। ईश्वर स्वयं आवश्यकताओं का प्रबन्ध करते हैं।
- सब जीव-जन्तु परमात्मा के ही रूप हैं, जैसे-अंड़ अंड़ सकल ब्रह्मंड़।
- निष्काम कर्म करने से मन और बुद्धि का मैल धुलता है।
- धर्म हमेशा से महिलाओं के कारण ही जीवित रहा है और आगे बढ़ा है।
- मैं कोई जादूगर नहीं कि परमात्मा को हाथ पकड़ कर, प्रत्यक्ष रूप में लोगों के सामने खड़ा कर दूँ॥

Editor Incharge : Padam Shri Moti Lal 'Saqi'.
Asstt. Editor : Raj Kumar Khushoo

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri